लॉटरी का खेल

भाग्य के परे

एन. सुगालचन्द जैन, बी. ए.

gpl lottery ka khel pre.indd 1 11/15/2007 4:13:23 PM

gpl lottery ka khel pre.indd 2 11/15/2007 4:13:25 PM

दो शब्द

जहां हम इस बहस में लगे हैं कि लॉटरी चलाएं या ना चलाएं, वहीं स्पेनिश लॉटरी संचालक अपने लोकप्रिय खेल एल गॉर्डो के दिसंबर ड्रॉ का इंडियन एअरलाइन्स की अन्तदेर्शीय विमान में रखी पत्रिका 'स्वागत' में विज्ञापन कर रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें इसका अच्छी तरह आभास है कि भारतीय नागरिकों को उनकी लॉटरी के लिए आसानी से आकर्षित किया जा सकता है क्योंकि हमारे राज्यों के पास लॉटरी के खेल के जरिए हमें देने के लिए कुछ ज्यादा नहीं है। जब ब्रिटिश शासन को यह ज्ञात हुआ कि उनके नागरिक विदेशों की लॉटरी खेलकर विदेशों की आर्थिक स्थिति का ही पोषण कर रहे हैं, तब उन्होंने अपनी लॉटरी शुरू कर दी। अपने इस कार्य में उन्हें भारी सफलता मिली। क्या हमें हमेशा सही कार्यवाही पर निर्णय लेकर उसका लाभ उठाने के लिए वर्षों प्रतीक्षारत रहना होगा?

लॉटरी के आलोचक कहते हैं कि यह तो संयोग का खेल है जिसमें निर्धन लोग लिप्त हो जाते हैं, इसलिए इसे प्रतिबंधित करना आवश्यक है। मगर इसी तरह स्टॉक व वस्तुओं की अग्रिम खरीद, घुड़दौड़ और विदेशी विनिमय बाज़ार में दांव लगाने की प्रवृत्ति भी मौका लगने या संयोग पर आधारित है। जब इन गतिविधियों को जारी रखने की अनुमति है, तो लॉटरी पर ही लक्ष्य बेध क्यों? विशेषतः जब लॉटरी से विकास कार्यों को महत्वपूर्ण योगदान मिलता है और रोज़गार के अवसर का मार्ग प्रशस्त होता है।

धन प्राप्ति की लालसा से आर्थिक रूप से विपन्न व्यक्ति लॉटरी

खेलता है। यदि वह लॉटरी को आय अर्जित करने का स्त्रोत न मानकर मनोरंजन का साधन मानता हो, तब आवश्यक हो जाता है कि उसकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति को उन्नतशील बनाया जाए, ना कि उसके लिए लॉटरी पर बंदिश लगा दी जाए। यहां समस्या निर्धनता की है, लॉटरी की नहीं।

शराब और तंबाकू का स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, फिर भी उसका विक्रय व उपभोग जारी है। आंकड़ों ने प्रमाणित किया है कि तंबाकू अनेक रोगों का कारण होती है, मगर उसके व्यापार को फलने–फूलने दिया जाता है। जब लॉटरी के दुष्परिणाम शराब और तंबाकू जैसे नहीं होते हैं, तब यह समझ के परे है कि लॉटरी का निषेध क्यों हो।

लॉटरी का निष्कासन क्या कोई उचित समाधान है? अवैध शराब के विक्रय से जो दुखान्त घटनाएं होती हैं, उससे स्पष्ट जाहिर होता है कि किसी चीज़ पर प्रतिबंध के दुष्परिणाम क्या हो सकते हैं? छोटे से दोष को दूर करने के लिए – जैसे लॉटरी के प्रकरण में उसकी अनियमितता के लिए– हम एक बड़ी और प्राणांतक बुराई को बढ़ने की स्वतंत्रता दे रहे हैं। अवैध रूप से यह व्यवसाय चल रहा है और इससे शासन और विकास परियोजनाओं को क्षति पहुंच रही है, क्योंकि जो धनराशि शासन के पक्ष में जानी चाहिए, उसका प्रतिबंध के कारण दुरुपयोग हो रहा है। हमें इस तथ्य को विस्मृत नहीं करना चाहिए कि लॉटरी से उन लाखों लोगों को व्यवसाय मिलता है जो अन्य कोई व्यवसाय करने की योग्यता नहीं रखते। मेरे अनुभव में विगत तीन दशकों में विभिन्न अवसरों पर तमिलनाडु में लॉटरी व्यवसाय पर प्रतिबंध लगाए गए जिससे लाखों लोगों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और उन्हें फिर से प्रारंभ किया गया। इन अनेक कारणों से इस व्यवसाय में लगे लोगों के द्वारा उसके नियमितीकरण करने के लिए कठोर कानून लागू करने की मांग की जा रही है।

इन्हीं तथ्यों को मैंने इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। इस व्यवसाय

में लगे मेरे सभी मित्रों और साथियों के सहयोग व सहायता के लिए उनका आभारी हूं। मेरे सहयोगी श्री कमलेश विजय, जी.एन. दमानी, पी.बी. चडढ़ा, आर.एन. दमानी, राजन चड्ढ़ा और किशोर अजमेरा ने इस पुस्तक को प्रकाशित करने में मुझे जो सहयोग दिया है, उनके प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। यहां मेरे पुत्र प्रसनचन्द जैन व विनोद कुमार का उल्लेख आवश्यक है जिन्होंने इस पुस्तक के लेखन के मेरे विचार को मूर्त रूप दिया है। मैं आयुक्त पुरातत्व अभिलेखागार और ऐतिहासिक शोध का भी कृतज्ञ हूं जिन्होंने अभिलेखागार में उपलब्ध संसाधनों के उपयोग की अनुकंपा प्रदान की। उनके अधिकारियों व उनके सहायकों को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद प्रकट करता हूं। कोट्टायम के डी.सी. बुक्स के श्री डी.सी. रवि का भी आभारी हूं जिन्होंने श्री किज़ाकेमुरी की भूमिका के संबंध में और लॉटरी से संबंधित छोटी–मोटी जानकारियां उपलब्ध कराई। मैं सुश्री जेन्सी सैमुअल के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने आवश्यक सूचनाओं का एकत्रीकरण किया। यह पुस्तक सबसे पहले अंग्रेज़ी में 'लॉटरी बियॉन्ड फॉरच्यून' के शीर्षक से निकाली गई। उसकी संपादकीय सहायता के लिए हैदराबाद के श्री एन. मुरलीधर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं। अन्त में लाखों लॉटरी के व्यवसायी, फुटकर विक्रेताओं और खिलाड़ियों का उनके लगातार समर्थन के लिए आभार व्यक्त करता हूं।

मैं आशा करता हूं कि यह पुस्तक अविश्वासी लोगों के पूर्वाग्रहों को तोड़ने का कार्य करेगी। इस व्यवसाय के समर्थकों के लिए भी प्रकाश स्तंभ बन सकेगी। यह तथ्य लॉटरी न खेलने वाले समर्थकों के लिए सम्भवतः अज्ञात है कि लाखों लोग लॉटरी से शिक्षित होते हैं, उनका उपचार होता है और उन्हें आजीविका मिलती है।

आज जब हर चीज का भूमंडलीकरण हो रहा है, सूदुर अंचल के निवासी के लिए भी इंटरनेट, लॉटरी में भागीदारी संभव बना रहा है, तब क्या हमें अपने नागरिकों को लॉटरी खेलने की अनुमति नहीं देनी चाहिए? जब वैश्विक संयुक्त राष्ट्र संघ की लॉटरी उसके भविष्य को

रेखांकित कर रही है, तब क्या हमें यह संकेत नहीं मिलता कि हम अपनी धारणाओं पर पुर्नविचार करें। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक अपने प्रस्तावित उद्देश्य की पूर्ति करती है और वह उद्देश्य है – जन मानस को लॉटरी और उससे संबंधित विषयों पर ज्ञान से आलोकित करना।

अंग्रेज़ी पुस्तक के प्रथम संस्करण को जो विशाल प्रतिसाद मिला है, उससे प्रोत्साहित होकर उसके द्वितीय संस्करण को प्रकाशित करना आवश्यक लगा। इसमें संबंधित सूचनाओं, आंकडों को अद्यतन बनाकर और भी रोचक व नूतन बनाने का हमने प्रयास किया है।

हाल ही में मोबाइल फोन धारकों को प्रोन्नति हेतु लॉटरी में भागीदारी के प्रस्ताव मिले हैं जिसमें वे एस.एम.एस. के जरिए भाग ले सकते हैं। फुटकर विक्रय केन्द्रों ने त्यौहारों के अवसर पर निकाले गए ड्रॉ के लिए अपने ग्राहकों को कूपन निर्गमित किए हैं। अधिकारी वर्ग बिना अनुमति के जारी रहने वाले इन कार्यकलापों से अनभिज्ञ रहने का अभिनय करते हैं। यह लॉटरी व्यवसाय की अपेक्षा है कि उन्हें अपना व्यवसाय करने की अनुमति दी जाए। आशा हैं कि आप इस व्यवसाय को सही परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास करेंगे।

अंग्रेज़ी पुस्तक 'लॉटरी बियॉन्ड फॉरच्यून' के प्रति पाठकों से जो सराहना हमें मिली, उससे प्रेरित होकर हम यह हिंदी अनुवाद **'लॉटरी का खेल भाग्य के परे'** प्रस्तुत कर रहे हैं। हिंदी अनुवाद के लिए मैं भोपाल के श्री रमेश शर्मा और चेन्नई की प्रित्या कंपनी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं। मैं आशा करता हूं कि हिंदी भाषी पाठक इस प्रयास को पसंद करेंगे।

एन. सुगालचन्द जैन

जून 2007

विषय सूची

1. **लॉटरी का खेल भाग्य के परे**
2. **विकास में लॉटरी की भूमिका**
3. **युगों के आइने में लॉटरी**

   लॉटरी का अर्थ

   लॉट के द्वारा निर्णयन

   पुरातन काल में लॉटरी

   यूरोप और अमरीका में लॉटरी

   लॉटरी और गिरजाघर

   ऋण के बदले लॉटरी

   अठारहवीं शताब्दी की परिवर्तनकारी हलचलें

   मुस्लिम और साम्यवादी देशों में लॉटरी

   लॉटरी के धनात्मक और ऋणात्मक पहलू

   लॉटरी और शिक्षा

   लॉटरी के पुर्नसंरचना के तर्क
4. **लॉटरी प्रतिबंधित करने हेतु विधेयक, 1999 – समिति की सभा की कार्यवाही**
5. **लॉटरी के लाभ – भूतकाल के साक्ष्य**
6. **लॉटरी खेल के प्रकार**

   निष्क्रिय लॉटरी

1. एकल अंकीय लॉटरी
2. दो संख्या के (या) 2–डी खेल
3. तीन संख्या के (या) 3–डी खेल
4. बंपर निकाल

लॉटो खेल

पॉवरबॉल मल्टीमिलियनर

स्पाइल खेल

कंप्यूटर लॉटरी

जोकर

बिंगो

केनो

खुरच टिकिट

संभावना निहित खेल

पुल–टैब खेल

बेटिंग या सट्टे के खेल

खेलकूद लॉटरी

ऑनलाइन खेल

विशिष्ट रूप से निर्मित खेल

प्रसारित खेल

विडियो लॉटरी

केसिनो खेल

1. बेक्कारैट
2. ब्लैकजैक
3. क्रेप्स

4. रूलैट

5. स्लॉट मशीन

सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप के खेल

दांव के प्रकार

7. ऑनलाइन लॉटरी

8. लॉटरियों के अन्य उद्देश्य

धर्मार्थ लॉटरियां

ग्रीन कार्ड लॉटरी

विरासत लॉटरियां

9. लॉटरी का निकाल

मशीनी निकाल

हस्तचालित विधि

पर्चियों के प्रयोग की हस्तचालित विधि

बॉलसेट विधि

स्वचालित निकाल

अमरीका में प्रयुक्त हस्तचलित विधि

10. भारतीय लॉटरियों की कार्यप्रणाली

औपनिवेशक शासकों द्वारा संचालित लॉटरी

मंदिर जीर्णोद्धार के लिए लॉटरी

निर्णयन में लॉटरी की उपयोगिता

स्वातंत्रोत्तर लॉटरी

लॉटरी संचालन के कार्यकलाप

राजकीय नियम

लॉटरी का वितरण

टिकिटों का मुद्रण
पुरस्कार संरचना
पुरस्कारों पर दावा
11. भारतीय लॉटरी के वित्तीय पहलू
12. भारतीय लॉटरी में कर सम्बन्धी मामले
13. लॉटरी के कुशल संचालन के लिए
14. लॉटरी खेलने वाले का संरक्षण
15. सुरक्षात्मक उपाय
16. फुटकर विक्रेताओं की भूमिका
17. लॉटरी के सहायक उद्योग
विज्ञापन
मुद्रण
कागज़ उद्योग
परिवहन
खेल से संबंधित अन्य सेवाएं
सॉफ्टवेयर उद्योग
टेलीकॉम सेक्टर
समाचार पत्र
शोध व विकास
18. लॉटरी के नियम
लॉटरी संचालक
टिकिटें
परिणाम
पुरस्कारों का दावा

प्राप्त आय का वितरण

फुटकर विक्रेता/एजेंट

अन्य राज्यों की लॉटरी

अन्य नियम

19. भारत की राज्य लॉटरियां

अरुणाचल प्रदेश

कर्नाटक

केरल

महाराष्ट्र

मेघालय

मिजोरम

नागालैंड

पंजाब

सिक्किम

पश्चिमी बंगाल

गोवा

हरियाणा

हिमाचल प्रदेश

मणिपुर

तमिलनाडु

त्रिपुरा

20. विश्व की लॉटरियां

आस्ट्रेलिया

अज़रबैजान

बेल्जियम
कम्बोडिया
केनेडा
चीन
साइप्रस
चैक गणतंत्र
डेनमार्क
फ्रांस
घाना
हॉन्गकॉन्ग
हंगरी
आयरलैंड
इज़राइल
जमैका
जापान
कजाखिस्तान
लेबनान
मलेशिया
नीदरलैंड
नॉर्वे
सिंगापुर
दक्षिण अफ्रीका
स्पेन
श्रीलंका

स्विटजरलैंड

थाईलैंड

ट्रिनीडाड व टोबेगो

ब्रिटेन

संयुक्त राज्य अमरीका

अफ्रिकी देश

एशियाई देश

यूरोपीय देश

लैटिन अमरीकी राज्य

21. बहु–राष्ट्रीय और बहु राज्जीय लॉटरियां

22. लॉटरी घोटाले

23. लॉटरी पर दिए गए सूक्ति वाक्य/वक्तव्य

24. लॉटरी संबन्धित क्षणिकाएं/सूक्तियां

परिशिष्ट

1. सारणी 1 – लॉटरी आय का वितरण
2. सारणी 2 – कुछ लॉटरियों का प्रारंभ से दिया गया योगदान
3. त्रावणकोर के राजा का लॉटरी आदेश
4. फोटो – गैलरी
5. लॉटरी की पूर्व पुस्तकों पर प्राप्त प्रतिक्रियाएं
6. संदर्भ ग्रंथ

gpl lottery ka khel pre.indd 14 11/15/2007 4:13:26 PM

लेखक परिचय

सुगालचन्द जैन को लिखित शब्द में अगाध विश्वास है क्योंकि 'शब्द' में व्यक्ति को परिवर्तित करने की और ढालने की शक्ति है। जिस तरह उन्हें पुस्तकों से ज्ञान और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है, उसी तरह अपनी पुस्तकों द्वारा वे दूसरों को प्रोत्साहित करने की आशा रखते हैं। 'लॉटरी का खेल भाग्य के परे' एक ऐसा ही प्रयास है जो इस क्षेत्र में उनके तीन दशकों के अनुभव और गहन चिंतन का सार है। अंग्रेज़ी में आपकी अन्य दो पुस्तकें हैं – 'ए हेण्डबुक ऑन लॉटरीस्' और 'जैन – एजूकेश्नल इन्सटीट्यूशन'।

आप मूलतः राजस्थान के हैं, पर बाल्यावस्था से ही आपका निवासस्थान चेन्नई में रहा है। कई तरह के व्यवसाय आजमाने के पश्चात् लॉटरी व्यवसाय में आपने अपना स्थान बनाया। बड़ी औद्योगिक कंपनियां और कंपनी निकायों द्वारा इस क्षेत्र में प्रवेश के बहुत पहले ही आपने इस व्यवसाय को कॉरपोरेट स्तर पर ले जाकर इसे विश्वसनीयता प्रदान की है।

आप एक व्यवसायी से पहले एक जनहितैशी और समाज सेवा के रूप में जाने जाते हैं। आपने भगवान महावीर फाउण्डेशन की स्थापना की, जो निस्वार्थ सेवा करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को मान्यता देता है। समाज सेवा, चिकित्सा, शिक्षा और अहिंसा के क्षेत्र में अनुकरणीय सेवा के लिए पांच लाख के तीन पुरस्कार दिए जाते हैं।

आपने सन् 1974 में सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की जिसके अंतर्गत नियमित रूप से नेत्र शिविरों का आयोजन चेन्नई और

आस–पास के क्षेत्रों में किया जाता है जिससे एक लाख से अधिक लोग लाभान्वित हुए हैं।

कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (Corporate Social Responsibility) की आवाज़ उठने के पहले ही आपकी कंपनी, ''सुगल एण्ड दमानी'' ने 'एम्पथी फाउण्डेशन' (Empathy Foundation) की स्थापना की। यह संस्था महाराष्ट्र और पंजाब के ग्रामीण स्कूलों में छात्रवृत्तियां एवं कल्याण और विकास के सहायतार्थ सुविधाएं प्रदान करती है।

समाज के हर खंड में योग्य शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए आपने चेन्नई में चार विद्यालयों की शुरुआत की जो विद्या ज्योति ट्रस्ट के अधीन संचालित है। औरों को शिक्षा दिलाने के साथ आपने स्वयं कॉलेज और विश्वविद्यालय से शैक्षणिक योग्यता प्राप्त करते रहे हैं, हाल ही में आपने गैर सरकारी संस्था प्रबंधन (NGO management) प्राप्त की है।

आपकी अन्य व्यवसायिक गतिविधियों में आभूषण, यात्रा और पर्यटन, भवन निर्माण एवं लेन देन के अन्य व्यवसाय सम्मिलित हैं।

1. लॉटरी का खेल भाग्य के परे

लॉटरी के विरोध में पहला तर्क यह दिया जाता है कि यह खेल संयोग का खेल है और इसलिए यह एक तरह का जुआ है। परंतु शेयर बाज़ार, अग्रिम सौदे (forward trading), विदेशी विनिमय बाज़ार, घुड़दौड़ और वस्तुओं की खरीद फरोख्त में प्रतिरक्षा (hedging) और सट्टा ही लगाया जाता है। इन सब पर प्रतिबंध नहीं है और अधिकारीगण इन्हें फिर से पुर्नढांचे में बदलने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए यह उचित होगा कि लॉटरी को भी प्रतिबंधित ना किया जाए और उसकी पुर्नसंरचना की जाए। यहां यह इंगित करना उचित होगा कि सट्टा बाजार में यदि लागत अधिक है तो हानि भी अधिक है। लॉटरी के खिलाड़ी की लागत तुलनात्मक रूप से बहुत कम होती है।

दूसरा मुद्दा यह है कि जुआ खेलने की प्रवृत्ति मानव में कुदरती तौर पर होती है। भूख, यौन–इच्छा, दूसरे पर अधिकार रखने और संयोग या भाग्य को आजमाने की ये चार मूल प्रवृत्तियां मानव में विद्यमान है। भूख की तृप्ति के लिए हम विभिन्न प्रकार के भोजन के लिए अन्न का उत्पादन करते हैं, यौन इच्छा की तृप्ति के लिए विवाह की संस्था निर्मित की गई है, दूसरों पर शासन करने के लिए विभिन्न पद–अनुक्रम बनाए गए हैं, जैसे शासकीय निकाय और संस्थाएं जिनमें पद और अधिकार के द्वारा शासन करने की शक्ति प्राप्त होती है। जहां तक संयोग की बात है, यह तो जीवन के हर पहलू में व्याप्त है – शिक्षा

और व्यवसाय से लेकर विवाह तक। अगर मूल प्रवृत्तियों को दबाने का प्रयास किया गया, तो वह अन्य नुकसानदायक कार्यों में परिलक्षित होती है। उदाहरण के लिए, जब शराब के विक्रय पर प्रतिबंध लगाया गया तो परिणामतः नकली शराब का धंधा शुरू हो गया, जिसमें अनेक जानें गई। इसी तरह मानवीय स्वभाव में जुआ खेलना अंतर्निहित है। लॉटरी के विरोधियों द्वारा लॉटरी की बुराईयों और नुकसान को बढ़ा चढ़ाके चित्रित किया जाता है, मगर यदि इस प्रवृत्ति को दबाया जाएगा, तो अनेक विकृतियां उत्पन्न होंगी। इसलिए जुआ खेलने की अंर्तव्याप्त मानवीय प्रवृत्ति को नहीं दबाया जाना चाहिए। इसके लिए लॉटरी एक उपचार है जिसे अलग–अलग शाखाओं में विभाजित करने की आवश्यकता है। यदि वाकई में लॉटरी एक सामाजिक बुराई है जैसा कि चित्रित किया जाता है, तो हमारे संविधान निर्माताओं ने इसे भारतीय संविधान में शामिल नहीं किया होता।

दूसरा तर्क यह दिया जाता है कि चूंकि लॉटरी में इतनी अनिश्चितता होती है, उसे खेलने वाले अवसाद में चले जाते हैं और कभी–कभी आत्महंता बन जाते हैं। मगर अवसाद और आत्महत्या की प्रवृत्ति सिर्फ लॉटरी से ही नहीं होती। बदलती जीवनशैली और काम के दबाव के कारण अवसाद के प्रकरण उत्पन्न होते हैं। उन छात्रों से लेकर जो परीक्षाओं में असफल हो जाते हैं या सॉफ्टवेयर बनाने वाले या सौंदर्य प्रतियोगिता के प्रतिभागी, इनमें भी आयु, लिंग और आर्थिक, सामाजिक परिप्रेक्ष्य से असंबद्ध प्रतिभागियों ने आत्महत्या की है। इसका सरल उपाय यह है कि उनके लिए मददगार परामर्श केन्द्रों की व्यवस्था की जाए और टिकिटों पर उनके फोन नंबर दिए जाए जैसा कि कुछ देशों में किया जाता है।

इसके बाद स्वास्थ्य के पहलू को लें। मात्र संवैधानिक चेतावनी देकर शराब और तंबाकू के उत्पाद खुलेआम बेचे जाते हैं। ये वे उत्पाद हैं जिनका उपभोक्ता के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जबकि ऐसा कुछ भी लॉटरी के साथ नहीं होता। तंबाकू और शराब से उत्पन्न

होने वाली स्वास्थ्य समस्या के लिए शासन को अस्पतालों, डाक्टरों और उपचार पर व्यय करना पड़ता है ।

यदि यह कहा जाए कि लॉटरी मानव में लत पैदा करती है, तो ऐसे ही कॉफी, सिगरेट, मनोरंजन हेतु पठन सामग्री और खरीदारी भी व्यसन का रूप ले सकती है। हाल ही के शोध से यह उजागर हुआ है कि लत संबंधित व्यवहार से रासायनिक और शारीरिक समस्याएं होती हैं। इसलिए द्यूत क्रीड़ा अपने–आप में कोई समस्या नहीं है।

यही तर्क निर्धनता पर भी लागू होता है जिसके संबंध में कहा जा सकता है कि गरीबी एक समस्या है, लॉटरी नहीं। यह सही है कि अल्प आमदनी के लोग अपनी आर्थिक समस्याओं से निजात पाने के लिए लॉटरी की आज़माइश करते हैं। अगर हम चाहते हैं कि वे लॉटरी को खेल ही समझें, तो उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर में सुधार लाने की आवश्यकता है, ना कि लॉटरी को प्रतिबंधित करने में।

लॉटरी विरोधी अभियान की शिकायत यह है कि निर्धन लोग लॉटरी पर अधिक व्यय करते हैं। यह बात अन्य उत्पाद पर भी लागू होती है, केवल लॉटरी पर ही नहीं। दो हज़ार रुपये माहाना कमाने वाला गरीब आदमी उसमें से यदि दस रुपये चावल या लॉटरी पर खर्च करता है, तो वह अपनी आय का 0.5 प्रतिशत खर्च करता है, जबकि बीस हज़ार कमाने वाले के लिए यह राशि उसकी कमाई का 0.05 प्रतिशत ही है। अगर किसी निर्धन व्यक्ति को उसके आर्थिक स्तर का कारण बतलाते हुए लॉटरी खरीदने से रोका गया, तो यह उसकी स्वतंत्रता छीनने के समान होगा। इस समस्या के निवारण के लिए एन.ए.एस.पी.एल. के अध्यक्ष, एडवर्ड जे. स्टेनक ने सुझाव दिया था कि शासन आर्थिक रूप से कमज़ोर व्यक्तियों को राशनकार्ड के समान रियायती दर पर लॉटरी टिकिट विक्रय करे।

सामान्य राय यह है कि लॉटरी खेलने वाले अल्प आय समूह के

होते हैं और उनके निवास स्थान के आसपास पर खुदरा व्यापारिक दुकानें होती हैं। अमरीका में किए गए अध्ययन के अनुसार अधिकांश लॉटरी के खिलाड़ी मध्यम आय समूह के होते हैं। खुदरा मूल्यों की दुकानें ऐसे निवास स्थानों पर इसलिए स्थापित की जाती हैं जिससे कि उन्हें एक जैसी, बराबर की सुविधाएं प्राप्त हो सके। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन निवास स्थलों पर निवास करने वाले लोगों की प्रति वर्ग किलोमीटर आबादी सम्पन्न वर्ग के निवास स्थल से कहीं अधिक हुआ करती है।

उसके बाद व्यवसाय संबंधी बिंदु की बात आती है। जब तमिलनाडु में लॉटरी पर प्रतिबंध लगाया गया, तब छः लाख परिवारों की आय का साधन छिन गया। बढ़ती बेरोज़गारी में लॉटरी से लोगों को आय के अच्छे साधन मिले हैं। इसमें शिक्षित व अशिक्षित दोनों ही वर्ग लग जाते हैं, क्योंकि विपणन प्रणाली के अंतिम छोर पर वह विक्रेता होता है जिसे लागत के लिए कुछ सौ रुपये ही चाहिए और उसे शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं होती। **भारत में अंतिम छोर के विक्रेता अक्सर अन्धत्व से ग्रस्त वयोवृद्ध निर्धन महिलाएं होती हैं। कुछ ऐसे भी प्रकरण मिले हैं जहां सामान्य जीवन बिताने के इच्छुक कैदियों ने भी लॉटरी का सहारा लिया। लॉटरी से शिक्षित और साथ ही साथ खुदरा व्यापारियों को भी व्यवसाय का मौका मिलता है।**

चीन में 15,000 काम से निकाले गए व्यक्तियों को शासन ने लॉटरी के फुटकर विक्रेता के रूप में पुनः रोज़गार दिया। अमरीका में लॉटरी चलाने वाले राज्यों में 1,78,000 लॉटरी के फुटकर विक्रेता हैं। केरल में 35,000 पंजीकृत एजेंट हैं और पूरे भारत में लॉटरी के सात लाख व्यवसायी हैं। यदि भारत में सभी राज्य लॉटरी चलाने लगे, तो इस व्यवसाय में 25 लाख लोगों को व्यवसाय देने की सक्षमता है। जब इस व्यवसाय में रोज़गार के अवसर देने की और अन्य अवलंबित उद्योगों और कल्याणकारी योजनाओं को मूर्त रूप देने की क्षमता है (जिन पर

आगे विस्तार से चर्चा होगी), तो इस व्यवसाय को मान्यता देना तर्क संगत होगा।

लॉटरी के विरोध में यह भी कहा जाता है कि यह उन लोगों का खेल है जो आसानी से धन कमाना चाहते हैं। हममें से कितने लोग जानते हैं कि **लॉटरी खेलने वालों में एक वह बच्चा भी होता है जो शाला जाता है और अपना दोपहर का भोजन प्राप्त करता है, एक वह वृद्ध भी है जिसे भोजन मिलता है, एक वह बीमार भी है जिसे दवाई मिलती है और ओलंपिक का खिलाड़ी भी है जिसे प्रशिक्षण मिलता है।** यह लॉटरी का प्रभाव है। लॉटरी में निहित आनंद व मनोरंजन का दूसरा चेहरा मानवतावादी है जो कि इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए प्रयत्नशील है। उम्मीद की जाती है कि तर्क और आंकड़े लॉटरी के मिथक को तोड़ेंगे और लोग पूर्वाग्रह के दरीचों के बाहर झांककर देखने का प्रयास करेंगे। लॉटरी केवल लखपति और करोड़पति ही नहीं बनाती, बल्कि लाखों करोड़ों लोगों को बेहतर, स्वस्थ जीवन जीने में मददगार भी होती है।

gpl lottery ka khel.indd 6 11/15/2007 4:06:53 PM

2. विकास में लॉटरी की भूमिका

जहां भारत में लॉटरी बंद करने की आवाज़ उठाई जा रही है, वहीं सुदूर नीदरलैंड में लॉटरी से प्राप्त आय के कारण ही सामाजिक आर्थिक सीढ़ी के सबसे नीचे के बच्चे स्कूल जाते हैं। यह अविश्वनीय ज़रूर लगता है, परंतु वास्तविकता है।

बैंगलोर और कर्नाटक में जहां लोग लॉटरी के खिलाफ आवाज़ उठा रहे हैं, वहीं नागरिकों के द्वारा खेले जाने वाली लॉटरी को धन्यवाद है जिसकी बदौलत कर्नाटक शासन के प्राथमिक शाला के बच्चों को अपरान्ह भोजन मिलता है।

पृथ्वी के दूसरे गोलार्द्ध में जो लॉटरी खेली जाती है, उससे भारत के बच्चों को शिक्षा कैसे मिलती है? **नीदरलैंड की नैश्नल पोस्टकोड लॉटरी (एन.पी.एल.) अपनी आय का 60 प्रतिशत दान देती है जो संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक है। इससे चालीस डच और अन्य गैर सरकारी संस्थाओं को गरीबी उन्मूलन, मानव अधिकार और प्रकृति संरक्षण के कार्य में सहायता मिलती है। भारत की गैर सरकारी संस्था 'प्रथम' उन चालीस संस्थाओं में से एक है।** सन् 2001 में एन.पी.एल. ने विभिन्न संगठनों को 177 मिलियन यूरो (213 मिलियन अमरीकी डॉलर) का अनुदान दिया। लाभान्वितों में नोविब विश्व प्रकृति निधि, रेडक्रॉस, यूनिसेफ, ग्रीनपीस, मेडिसींस, सेन्स फ्रॉटिंयर्स और एमनेस्टी इन्टरनेशनल शामिल हैं।

सन् 1956 में स्थापित नोविब, नीदरलैंड की ऑक्सफेम इन्टरनेशनल की शाखा है। यह संगठन प्रगति में सहकारिता के क्षेत्र में काम करता

है। सन् 1999 में नोविब, भारतीय गैर सरकारी संस्था "प्रथम" से जुड़ा जिसका उद्देश्य हर बच्चे को शिक्षित करना है। **नीदरलैंड लॉटरी से प्रतिवर्ष 30 मिलियन रुपये का अनुदान मिलता है जिससे मुंबई, गुजरात, राजस्थान, दिल्ली और बिहार में "प्रथम–नोविब" का कार्य सफलतापूर्वक चलता है।** लॉटरी से लाभान्वित होने वाली 'प्रथम–नोविब' के कार्य का लेखाजोखा लेने के लिए कुछ आंकड़ों पर ध्यान देना पड़ेगा।

दिल्ली परियोजना में (6–11 साल के बच्चों को शाला भेजने के लिए) सेतु पाठ्यक्रम, (धीमी गति से अध्ययनरत छात्रों के लिए) बाल सखी कक्षाएं और (शाला पूर्व) बच्चों के लिए बालवाड़ी कक्षाएं चलाई जाती हैं। वर्तमान में 79 सेतु पाठ्यक्रम, 347 बाल सखी कक्षाएं और 46 बालवाड़ी कक्षाएं चलाई जाती हैं जिससे दिल्ली के नौ हज़ार बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं। राजस्थान के जयपुर शहर में प्रथम–शिक्षा–केन्द्र (पी.ई.सी.) ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को शिक्षित करता है जहां शालाएं नहीं हैं। सामुदायिक–बाल–केन्द्र (सी.सी.सी.) सेतु पाठ्यक्रम के साथ–साथ बच्चों को औपचारिक और क्रिया–उन्मुख शिक्षा देते हैं। 150 सेतु पाठ्यक्रम, 32 प्रथम–शिक्षा–केन्द्र और एक सामुदायिक–बाल–केन्द्र से नौ हज़ार बच्चे लाभान्वित हुए हैं। इसी तरह बिहार के पटना शहर में 1500 बच्चों को लाभ मिला है। इन्हीं परियोजनाओं से सन् 2001 में भूकंप के बाद "प्रथम–नोविब" ने सोलह हज़ार बच्चों को शिक्षित करने का प्रथम प्रयास किया। मुंबई में यह संस्था नवाचार अध्यापन और अध्ययन पद्धति पर और त्वरित सामूहिक मूल्यांकन तकनीक पर काम कर रही है। इसके अलावा यह संगठन स्कूल की इमारतों के पुर्ननिर्माण और आंतरिक संरचना का कार्य भी करती है। यह सब नीदरलैंड के उन नागरिकों के सहयोग से हुआ है जो लॉटरी के सकारात्मक असर को समझते हैं।

हम दूसरे देशों से प्राप्त वित्तीय निधि, खासकर लॉटरी निधि पर क्यों आश्रित रहें, जबकि हमारे देश में ही लॉटरी

के द्वारा 50,000 करोड़ रुपये तक आय बढ़ाने की क्षमता है। जब लॉटरी भी अन्य उद्योगों की तरह कार्य करती है तो उसे क्यों त्याग दें? माना कि लॉटरी में अनियमितताएं है, परंतु हर विकास योजना की अपनी खामियां होती हैं। हालांकि लॉटरी एक विकास परियोजना नहीं हैं परंतु वह विकास में सहायक है। निश्चित रूप से लॉटरी से न तो गांवों का विनाश होगा और न ही वहां के लोगों को वहां से हटना होगा। अधिक से अधिक कोई व्यक्ति कुछ सौ रुपये की लॉटरी खरीदकर हानिग्रस्त हो सकता है। किसी भी विकास परियोजना के नकारात्मक पहलू हुआ करते हैं। परंतु लॉटरी से वह प्रभाव नहीं होगें जैसा चैर्नोबिल (सन् 1986 में यू.एस.एस.आर. में, जो आज का यूक्रेन है, वहां आणविक ऊर्जा आपदा में बीस मील की परिधि में परमाणु धर्मिता का प्रसार हुआ और कई मानव मौत के आगोश मे समा गए) या भोपाल गैस त्रासदी में हुआ था। ऐसे उद्योगों की तुलना में लॉटरी के कुप्रभाव अल्प होते हैं। हो सकता है कि लॉटरी व्यवसाय में लगे कुछ व्यक्ति अपनी जेबें येन, केन, प्रकारेण भरते हों। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए ज़रूरी है कि लॉटरी पद्धति की पुर्नसंरचना की जाए।

सन् 2004 में दक्षिण पूर्व एशिया में बहुत से देश विनाशग्रस्त हुए। सबसे अधिक विनाश श्रीलंका में हुआ जहां शासन ने लॉटरी के द्वारा सुनामी के शिकार लोगों का पुर्नवास किया। जनवरी 2005 में श्रीलंका की नेशनल लॉटरी बोर्ड ने सरन नेशनल लॉटरी शुरू की। यू.के. गुड कॉस लॉटरी निधि ने सुनामी से ग्रसित क्षेत्रों के पुर्ननिर्माण हेतु 12 मिलियन पौंड (लगभग 100 करोड़ रुपये) की सहायता दी। भारत–पाक युद्ध के समय प्रतिरक्षा सेनाओं और विकलांगों की सहायता के लिए तमिलनाडु शासन ने लॉटरियां चलाई। ब्रिटेन की राष्ट्रीय लॉटरी ने विभिन्न क्षेत्रों में सहायतार्थ संस्थाओं को लगभग 19 अरब पौंड का अनुदान दिया जिनमें से कुछ हैं – साउथएम्पटन ड्रेगनफ्लाई टीम जो

अंतिम रूप से रोगग्रस्त बच्चों की चिकित्सा करती है एवं 'युवा से युवा को' (Youth-to-Youth) संगठन जो संकटग्रस्त युवाओं को परामर्श देती है। सिंगापुर के सात खिलाड़ियों को सन् 2008 के ओलंपिक की तैयारी के लिए लॉटरी निधि से मदद दी गई है। इसी तरह केनेडा के ब्रिटिश कोलंबिया लॉटरी निगम ने विभिन्न सामुदायिक कार्यों की सहायता के लिए छः अरब डॉलर का अनुदान दिया।

सन् 1973 में तमिलनाडु शासन ने प्रतिरक्षा निधि लॉटरी (Defence Fund Lottery) चलाकर 213 लाख रुपये की आय अर्जित की। उस समय दस ग्राम सोने का भाव दो सौ रुपये था। आज यह राशि 95.85 करोड़ रुपये होती है। दो दशकों में शिक्षा के लिए अमरीका के राज्य फ्लोरिडा और मिशीगन ने क्रमशः 15 अरब डॉलर और 13 अरब डॉलर की सहायता दी। दो अन्य राज्यों ने सन् 2005 में पर्यावरण परियोजनाओं के लिए 176 मिलियन डॉलर की निधि तैयार की। अमरीका के चार राज्य और ऑस्ट्रेलिया ने मिलकर 901 मिलियन डॉलर का अनुदान संपूर्ण विश्व में स्वास्थ्यरक्षक परियोजना के लिए दिया। **सन् 2005 में ही नीदरलैंड राज्य लॉटरी ने लगभग 6000 मिलियन यूरो डॉलर (लगभग 30,000 करोड़ रुपये) मानवीय पर्यावरण लोक स्वास्थ्य और अन्य कल्याणकारी कार्यों के लिए लॉटरी के माध्यम से अनुदान दिया।** न्यूज़ीलैंड और सिंगापुर जैसे छोटे–छोटे द्वीप वाले देशों ने भी अरबों डॉलर की निधियां स्थापित की है जिनका उपयोग बड़े पैमाने पर विभिन्न कल्याणकारी कार्यों के लिए किया जाता है।

सन् 1970 से संयुक्त राष्ट्र संघ की विकास परियोजनाओं को संचालित करने के लिए एक वैश्विक लॉटरी प्रारंभ करने का विचार चल रहा है। सन् 1972 में घाना ने ऐसा प्रस्ताव दिया। वर्ष 2002 में फिन्लैंड के राष्ट्राध्यक्ष, तारजा हैलोनेन ने विकास के लिए वित्त की अर्न्तराष्ट्रीय सभा में वैश्विक लॉटरी की बात की। यह विचार विश्व में अनेक देशों में लॉटरी की सफलता और उपयोगिता के दृष्टिगत आरंभ हुई। इसके अलावा अब लॉटरी ने एक नया सम्मान प्राप्त कर

लिया है और उसे घृणास्पद नहीं माना जाता। सन् 1970 तक लॉटरियां व्यापारियों के द्वारा नियंत्रित होती थी। ये खुदरा व्यापारी बाद में लॉटरी संचालक बन गए। उस समय लॉटरी की प्रक्रिया हस्तचालित थी जिसमें कई गलतियां व अनियमितताएं हुआ करती थी। परंतु अब पूरा संचालन आधुनिकतम तकनीक से पूर्णतः स्वचालित है जिससे उसकी विश्वसनीयता और पारदर्शिता बढ़ गई है। आज के लॉटरी संचालक बड़े कॉर्पोरेट और बहुराष्ट्रीय संस्थाएं हैं जिन्होंने उसे व्यवसायिकता का जामा पहनाया है। विपणन तकनीकों के जरिए उन्होंने उदासीन मध्यमवर्ग को भी लॉटरी खेलने के लिए आकर्षित किया है। अब समय आ गया है कि सरकार इस तकनीक का उपयोग करे, लोगों की मानसिकता बदले और लॉटरी व्यवसाय को उस सम्मान से देखे जो उसने अर्जित किया है और इस तरह विकास कार्यों के लिए धनराशि उपार्जित करे।

सन् 1994 में एक शोध पत्र (एलस्कीन चिल्डर्स और ब्रेन अल्कूहर्ट) में प्रस्ताव दिया गया कि **वार्षिक संयुक्त राष्ट्र संघ की लॉटरी एक ऐसी संभावना है जिसकी आय संयुक्त राष्ट्र को जाएगी।** इसकी आज्ञा देने का अधिकार उन देशों की सरकार का होगा जो महासचिव में निहित होंगे। हाल ही में फिन्लैंड के भूतपूर्व राष्ट्राध्यक्ष, मारटी अहटीसारी ने भी वैश्विक लॉटरी का प्रस्ताव रखा है। वर्ष 2003 में संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय के आर्थिक विकास शोध का वैश्विक संस्थान (WIDER) तथा हेलसिंकी और यू.एन.–डी.ई.एस.ए. ने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के सर एन्थोनी बी. एटकिंसन के निर्देशन में एक परियोजना शुरू की जिसका विषय था "विकास के वित्त हेतु अभिनव संसाधन"। इस परियोजना के लिए टोनी एडिसन और अब्दुर आर. चौधरी ने वैश्विक विकास कार्यक्रम के लिए लॉटरी के उपयोग का विचार एक शोधपत्र के द्वारा रखा जिसके माध्यम से वित्तीय संसाधन जुटाए जा सकें। इस दिशा में वैश्विक लॉटरी चलाने का पहला ऐच्छिक कार्यक्रम यह होगा कि प्रत्येक देश वैश्विक लॉटरी का अपना राष्ट्रीय संस्करण चला सकेगा। दूसरा

gpl lottery ka khel.indd 11 11/15/2007 4:06:53 PM

ऐच्छिक विकल्प यह होगा कि एक संगठन संपूर्ण वैश्विक लॉटरी को संचालित करे। इस शोधपत्र में विचार किया गया है की क्या लॉटरी से होने वाली आय का फायदा राष्ट्रीय सरकारों के हिस्से में जाएगा क्योंकि ऐसा ना करने पर वैश्विक लॉटरी और राष्ट्रीय लॉटरी में प्रतिस्पर्धा प्रारंभ हो जाऐगी जो कि स्थानीय शासन के लिए मान्य नहीं होगी।

जब संयुक्त राष्ट्र और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय जैसी मान्य संस्थाएं विश्वस्तरीय लॉटरी की दिशा में काम कर रही हैं, इससे लॉटरी प्रणाली की उपादेयता स्वयं प्रमाणित होती है। भूतकाल से प्राप्त साक्ष्य जो ब्रिटिश संग्रहालय, किंग्स कॉलेज और वर्तमान के सिडनी ओपेरा हॉउस से मिले हैं, उजागर करते हैं कि किस तरह लॉटरी से विकास और वित्त पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह वांछनीय है कि भारत लॉटरी की इन संभावनाओं का अपने पक्ष में उपयोग करे।

3. युगों के आइने में लॉटरी

लॉटरी का अर्थ :

लॉटरी का अर्थ वह घटना है जिसका परिणाम संयोग के द्वारा निर्धारित होता है। यह शब्द संभवतः डच भाषा के 'loterije' या पुरानी फ्रांसीसी भाषा 'loterie' के मूल से निकला है।

यद्यपि इसकी कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है, ई.यू. के सदस्य राज्यों (EU Member States) ने अपने विधान में लॉटरी का इस प्रकार वर्णन किया है:

"वे सेवाएं जो कि लॉटरी संचालक के द्वारा उपलब्ध कराई जाती हैं, जिनसे लॉटरी टिकिट का क्रेता जीतने की आशा के साथ, उस अभिप्राय के लिए संयोग के खेल में दांव लगाता है जहां परिणाम संगठित किया जाता है और पुरस्कार निर्धारित कर उनका भुगतान किया जाता है।"

शब्दकोष ने इसे एक क्रिया या प्रयास के रूप में परिभाषित किया है जिसकी सफलता को भाग्य या किस्मत माना जाता है। एंसाइक्लोपीडिया बिट्रैनिका के अनुसार, "... कई राज्य सरकारों ने आय के साधन बढ़ाने के लिए शासकीय तौर पर स्थापित और स्वतंत्र रूप से अंकेक्षित लॉटरी शुरू की। ऐसे संचालन में दांव लगाने वाला व्यक्ति अक्सर एक रसीद खरीदता है जिस पर संख्यांक मुद्रित होता है या अपनी इच्छा से अपना अंक लिखकर देता है, उसका परिणाम निकाला जाता है और उस संख्या से विजेता की पहचान स्थापित होती है। पुरस्कार का मूल्य राज्य के हिस्से और अन्य खर्चों को घटाने के बाद

निर्धारित किया जाता है। अक्सर पुरस्कार पर कर लगता है। विजित पुरस्कार कई लाख या करोड़ में हो सकता है...।"

लॉट के द्वारा निर्णयन :

लॉटरी का अस्तित्व एक लंबे समय तक रहा है। इतिहासकार और विद्वानों में इस पर मतभेद है कि लॉटरी कब और कहां शुरू हुई। बाइबिल में लॉट निकालने के कुछ संदर्भ मिलते हैं, परंतु उसके उद्देश्य आज के उद्देश्य से भिन्न थे और उनमें पुरस्कार धन के रूप में नहीं होता था। उनका उपयोग भूमि विभाजन या निर्णय लेने के लिए किया जाता था। बाइबिल के "ओल्ड टेस्टामेंट" में दर्शाया गया है कि जोशुआ ने इज़राइल की बारह आदिम जातियों के मध्य भूमि विभाजन के लिए लॉट का उपयोग किया। जोना और सैमुयल ने उस व्यक्ति की पहचान के लिए लॉट डलवाए जिसके कारण नाविकों और अन्य लोगों पर विपत्ति आई थी। नए नियम (New Testament) में भी सैनिकों ने इस बात का निर्णय करने के लिए लॉट डाले कि यीशू के कपड़े कौन लेगा। यीशू के शिष्य जूडा की मृत्यु के बाद दूसरे शिष्यों ने लॉट डालकर जूडा के स्थान पर मैथिया का चुनाव किया।

आज भी विभिन्न स्थितियों में निर्णय लेने के लिए लॉट्स डाले जाते हैं जैसा कि राजस्थान शासन ने आवेदकों को खदानें देने के लिए किया था। लगभग सभी गृह निर्माण परियोजनाओं में भारत की राज्य सरकारें मकानों का आबंटन लॉट के जरिए करती हैं।

पुरातन काल में लॉटरी :

ग्रीस, भारत, रोम, चीन और जापान की पुरातन संस्कृति में लॉटरी आधारित खेलों का लंबा इतिहास रहा है। ग्रीस के युवा मिनोटार (ग्रीक दन्त कथा का प्राणी जो आधा मनुष्य और आधा वृषभ होता था) के बलिदान का सम्मान पाने के लिए लॉट डाला करते थे। महाभारत में वर्णन है कि किस तरह युधिष्ठिर ने द्यूत क्रीड़ा में अपना राज्य हारकर कौरवों को दे दिया। इसी तरह 'नलावेनपा' नामक पुस्तक में निदाध देश के राजा नलन ने जुए के खेल में अपना राज्य, राजा पुष्कर्म को गंवा

दिया। रथों की दौड़ पर रोमन बाज़ी लगाने का खेल खेलते थे।

चीनी इतिहास के पन्ने बतलाते हैं कि कि ई.पू. 195 में हान वंश के चेउंग ल्यूंग ने किस तरह केनो की चीनी लॉटरी चलाई। जब उसके शहर पर दुश्मनों ने घेरा ड़ाला, उसने प्रजा से सहायता की अपील की। उस अपील को अनसुना कर दिया गया। तब उसने संभावना पर आधारित केनो खेल चलाया जिसमें खिलाड़ी जीतने के लिए धन या सम्पति दांव पर लगाता था। जब चीन के मजदूरों को रेल परियोजनाओं पर काम करने के लिए लाया गया तो वहां भी केनो शुरू हो गया।

यूरोप और अमरीका में लॉटरी :

पन्द्रहवीं व सत्रहवीं शताब्दी के मध्य बहुत से यूरोपीय देशों में लॉटरी के विकसित होने के चिन्ह मिले हैं। चीनी केनो के अलावा सन् 1530 में इटली के फ्लोरेन्स में पहली लॉटरी का संदर्भ मिलता है जिसमें पुरस्कार के बतौर धनराशि दी जाती थी। यह खेल बिंगो जैसे खेल का ही दूसरा रूप था। इटली में जैतून के अंदर चर्म पत्रों पर संख्यांक डाले जाते थे जिसके आधार पर विजेता को पुरस्कार दिया जाता था। इटली से यह खेल सन् 1533 में फ्रांस के फ्रेंकोइस आई. लूई–सोलह के युद्ध अभियान के दौरान प्रचलित हुआ। इस राजा ने अपने पुत्र के लिए लॉटो का आविष्कार किया।

ब्रिटेन में पहली लॉटरी सन् 1566 में प्रारंभ हुई। जब यूरोप के निवासी अमरीका आए, तब इस खेल को साथ लेकर आए। सन् 1612 में पहली बार अमरीका में यह खेल खेला गया। उत्तर अमरीका में लॉटरी इंगलैंड के प्रभाव से प्रारंभ हुई। मध्य और दक्षिण अमरीका में लॉटरी स्पेन से प्रभावित हुई। बाद में जेम्स प्रथम ने लन्दन में लॉटरी शुरू की जिसकी सहायता से अमरीका के वर्जीनिया प्रांत के जेम्स टाउन शहर में इंगलैंड की कॉलोनी स्थापित की गई। सन् 1784 में जार्जिया में अस्पताल के निर्माण और नाविकों की सवाना में बसाहट के लिए लॉटरी को मान्यता दी गई। इसी तरह सन् 1790 और सन् 1839 के बीच स्क्रीवेन में न्यायालय के लिए, मिल्लेड्जेविल की सड़कों

के लिए और ऑगस्टा की अग्नि कंपनी के लिए सामुदायिक योजनाएं क्रियान्वित की गई।

लॉटरी और गिरजाघर :

यह दिलचस्प बात हैं कि विभिन्न परियोजनाओं के लिए निधि एकत्रित करने के लिए गिरजाघर ने भी लॉटरी में हिस्सेदारी की। जेम्सटॉउन के लाभार्थ तीन में से दो टिकिटें 'एंग्लिकन' गिरजाघरों द्वारा जीती गई। लॉटरी द्वारा प्राप्त आय से फ्रांस में गिरजाघर बनाए गए और उनका पुर्ननिर्माण किया गया। केरल के गिरजाघर भी लॉटरी निधि के जरिए सन् 1960 में लाभान्वित हुए। आज भी बिंगो लॉटरी का सरलीकृत संस्करण जिसे 'तंबोला' कहते हैं, भारत के गिरजाघरों में फसल आने के समय राशि एकत्रित करने के लिए खेला जाता है।

ऋण के बदले लॉटरी :

उन्नीसवीं शताब्दी तक पब्लिक बैंकों की संख्या बहुत कम थी। सन् 1790 के पहले अमरीका में केवल तीन बैंक ही थे। फलस्वरूप अधिकांश सरकारों को अपने लोकहित और आंतरिक संरचना के लिए लॉटरी का बैंक के रूप में सहारा लेना पड़ा, क्योंकि ऋण देने की क्षमता वाले बैंकों की संख्या कम थी। लॉटरी के प्रारंभिक काल में आय का 85 प्रतिशत पुरस्कार के रूप में वितरित किया जाता था और शेष 15 प्रतिशत से समाज कल्याण और सामुदायिक परियोजनाओं का कार्य किया जाता था। उस समय उन्हें आय बढ़ाने के साधन के बजाय लोकहित और लोक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सहयोगी माना जाता था।

अठारहवीं शताब्दी की परिवर्तनकारी हलचलें :

अठारहवीं शताब्दी मे लॉटरियां मनोरंजन का लोकप्रिय हिस्सा बन गई। उनका निजीकरण भी होने लगा। लोकप्रियता के साथ भ्रष्टाचार आया। अमरीका के क्रांतिकारी युद्ध के दौरान लॉटरी असम्मानजनक मानी जाने लगी, परिणाम स्वरूप उसे बंद कर दिया गया। न्यूयार्क ऐसा पहला राज्य था। केनेडा में भी ऐसा ही किया गया और सन् 1878

तक अमरीका के सभी राज्यों में सभी लॉटरियां बंद कर दी गई। केवल लूज़ीयाना ने उसे चालू रखा, परंतु वहां भी सन् 1905 मे उसे बंद कर दिया गया। परंतु स्पेन और नीदरलैंड जैसे देशो में लॉटरी अभी भी चल रही है और काफी लोकप्रिय है। नीदरलैंड की लॉटरी सबसे पुरानी है। सन् 1964 में अमरीका के न्यू हैम्पशायर राज्य ने लॉटरी विरोधी कानून से बचने के लिए उसे घुड़दौड़ से जोड़ दिया और पुनः राज्य लॉटरी की शुरुआत हो गई। ऐसा ही अन्य राज्यों ने किया। सन् 1980 में बहुत से देशों ने पुरस्कार के ढांचों में नए परिवर्तन लाकर लॉटरी को बहुत ही आकर्षक बना दिया, जैसे त्वरित लॉटरी, अनेक तरह के खेल और पुरस्कार राशि में वृद्धि आदि।

मुस्लिम और साम्यवादी देशों में लॉटरी :

यद्यपि मुस्लिम देशों में लॉटरी पर बंदिश हैं, फिर भी पाकिस्तान और मोरक्को देश लॉटरी चलाते हैं। इसी तरह रूस, कजाखस्तान, चीन और अन्य साम्यवादी देशों में भी लॉटरी का चलन है।

लॉटरी के धनात्मक और ऋणात्मक पहलू :

ब्रिटेन में सन् 1826 के बाद लॉटरी अवैध रही, परंतु सन् 1994 में शासन द्वारा स्वीकृत राष्ट्रीय लॉटरी शुरू की गई क्योंकि वहां के नागरिक दूसरे यूरोपीय देशों की लॉटरियों में हिस्सा ले रहे थे, जिसका लाभ उन्हीं देशों के वित्त कोष को मिलता था।

विश्वव्यापी स्तर पर सरकारों ने लॉटरी का उपयोग आंतरिक संरचना के विकास, कला, स्वास्थ्य, शिक्षा, खेलकूद और लोकहित के कार्यों के लिए किया है, परंतु वित्त उपार्जन की दूसरी परियोजनाओं के समान लॉटरी भी विवादग्रस्त हो गई। उसके आलोचकों ने उसमें अनियमितता की शिकायत की और इंगित किया कि किस तरह कुछ नागरिकों में लॉटरी खेलने की किस कदर बाध्यतापूर्ण लत पड़ गई। हो सकता है कि ऐसे प्रकरण कुछ ही हो, **परंतु यहां बताना आवश्यक है कि तंबाकू और शराब जनित स्वास्थ्य समस्याएं लॉटरी से**

नहीं उत्पन्न होती। तंबाकू और शराब की स्वास्थ्य समस्याओं के लिए शासन को अस्पताल और दवाईयों के व्यय को वहन करना पड़ता है। वास्तव में सन् 1999 में यूरोप के मनोवैज्ञानिक संघ ने एक अध्ययन के बाद चेतावनी दी कि इंटरनेट पर 'सर्फिंग' करना लॉटरी की लत से कहीं ज्यादा गंभीर समस्या है।

जहां तक अनियमितता का प्रश्न है, उसके कारण लॉटरी को प्रतिबंधित करना, जैसा कि तमिलनाडु राज्य में किया गया है, समस्या का समाधान नहीं है। इससे समस्या और भी जटिल हो जाती है क्योंकि वहां अन्य राज्यों की टिकिटों की कालाबाज़ारी होने लगती है, जिनकी दर भी काफी मंहगी होती है। इसके अतिरिक्त इंटरनेट पर विदेशी लॉटरियां उपलब्ध हैं। जहां शासन किसी व्यक्ति के विदेशी विनिमय व्यय को नियंत्रित करने वाले कानून में ढील दे रही है, स्वाभाविक ही होगा कि लोग विदेशी लॉटरी खेलने का चुनाव करेंगे। इसके परिणामस्वरूप मूल्यवान विदेशी मुद्रा की हानि होगी जिससे बचा जा सकता है। बेहतर होगा कि ब्रिटेन जैसे देशों में सफल लॉटरी के लिए जो कदम उठाए गए हैं, उनकी समीक्षा की जाए, उन्हें स्थानीय स्थिति के अनुसार परिवर्तित किया जाए ताकि वह दोषमुक्त हो सके।

लॉटरी और शिक्षा :

उन्नीसवीं शताब्दी में बाल शिक्षा के लिए लॉटो जैसे खेलों का उपयोग किया जाता था। इससे इतिहास, भूगोल, गणित, पशु और वनस्पति जगत का ज्ञान प्राप्त होता था।

लॉटरी के पुर्नसंरचना के तर्क :

लॉटरी को प्रतिबंधित करना केवल समस्या से बचना है, न कि उसका मुकाबला करना क्योंकि इसके व्यवसाय से भारत में 5 मिलियन से भी अधिक लोगों को रोज़गार मिलता है जिनमें से अधिकांश अशिक्षित हैं और अलग तरह की योग्यता रखते है। यह मानना होगा कि इस व्यवसाय से दूसरे उद्योगों को भी सहायता मिलती है। इससे न केवल राज्य सरकारों की आय बढ़ती है और अनेक लोगों को व्यवसाय मिलता

है बल्कि अनेक निजी और सामाजिक संगठनों को भी सहायता मिलती है, जैसे कि चेन्नई की कैंसर संस्था जिसने कैंसर उपचार हेतु लॉटरी से धन उपार्जित किया। अंतर्राष्ट्रीय लॉटरी के अध्याय में उन संगठनों और लोगों के वास्तविक आंकड़े स्पष्ट नज़र आएंगे जो लाभान्वित हो रहे हैं।

जहां भी लॉटरी संचालित होती है, प्रत्येक देश में उससे प्राप्त आय का बड़ा हिस्सा अच्छे कार्यों में लगाया जाता है। **इसे मानना चाहिए कि समस्या लॉटरी की नहीं, बल्कि गरीबी की है। लॉटरी के खिलाड़ियों को जागरूक करना चाहिए कि लॉटरी उनकी जीविका का माध्यम नहीं बन सकती।** यदि प्रतिबंधित करने के बजाए लॉटरी के ढांचे में सुधार किया जाए, तो उससे जुड़े हुए सभी व्यक्ति लाभान्वित होंगे।

4. लॉटरी प्रतिबंधित करने हेतु विधेयक, 1999 – समिति की सभा की कार्यवाही

लॉटरी निषेध विधेयक 1999 लोक सभा की गृह मंत्रालय की विभागीय समिति में बहस हेतु पटल पर रखा गया। इसके लिए छः बैठकें हुई। वर्ष 2000 में समाचार पत्रों के विज्ञापन के माध्यम से राज्यसभा ने लॉटरी पर प्रतिबंध लगाने के प्रश्न पर जनता के विचार आमंत्रित किए। पहले ही सप्ताह में 70,000 प्रतिक्रियाएं मिलीं, जिनमें से अधिकांश प्रतिबंध के विरोध में थी। 26 लोकसभा और राज्यसभा के सदस्यों ने लॉटरी के समर्थन के लिए ज्ञापन दिया, केवल एक ही सदस्य ने प्रतिबंध का समर्थन किया। लॉटरी निषेध बिल 1999 पर बहस के लिए जो लोकसभा समिति गठित की गई थी, उसमें इस व्यवसाय के प्रतिनिधि के रूप में इस पुस्तक के लेखक ने भी समिति की सभा में भाग लिया और बहुत से मुद्दे उठाए गए।

लोकसभा के सदस्यों ने तर्क दिया कि लॉटरी निषेध के फलस्वरूप बेरोज़गारी बढ़ेगी। निषेध का प्रभाव कागज़ उद्योग पर भी पड़ेगा क्योंकि लॉटरी के व्यवसाय में एक लाख टन कागज़ का उपयोग होता है। यह भी तर्क दिया कि 'सिक्योरिटी प्रेस' के पचास मुद्रकों को अपना व्यवसाय बंद करना होगा जो कि पूर्णतः इस व्यवसाय पर निर्भर थे।

निषेध फोरम ने बताया कि लॉटरी संचालकों ने प्रतिबंधित एकल अंकीय लॉटरी को फिर से शुरू करने के तरीके ढूंढ निकाल लिए थे, और जो लोग व्यवसाय से जुड़े थे, उनकी संख्या लॉटरी लॉबी द्वारा

बताई गई संख्या से कम थी। इसलिए राज्य शासन को जो वित्तीय हानि हो रही थी, उसकी प्रतिपूर्ति केन्द्रीय शासन से अतिरिक्त अनुदान द्वारा की जा सकती थी।

कागज़ मिल, मुद्रक प्रेस और परिवहन के प्रतिनिधियों ने निषेध के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर अपने विचार रखे। मुद्रकों ने बतलाया कि लॉटरी प्रतिबंधित करने के बजाय उसका नियमितीकरण होना चाहिए।

लॉटरी व्यवसायी और एजेंट के संघों ने निजी लॉटरी पर प्रतिबंध लगाने का सुझाव दिया ताकि लॉटरी के दुरुपयोग को रोका जा सके। उन्होंने शासन को प्रतिबंध के कारण होने वाली आय की हानि और संबंधित उद्योगों को होने वाली हानियों का उल्लेख भी किया कि इस तरह उससे 25 लाख लोग बेरोज़गार हो जाएंगे और अवैध सट्टा व्यापत हो जाएगा। उनका यह तर्क था कि "जब शराब और तंबाकू पीने के कहीं अधिक खतरनाक परिणाम होते हैं, तो फिर लॉटरी व्यवसाय को ही अलग–थलग क्यों किया जाए?" उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि लॉटरी को प्रतिबंधित करने के बजाए उसका नियमितीकरण किया जाए।

सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने कहा कि इस व्यवसाय से अस्पताल, लोकहित के न्यास, स्वास्थ्य रक्षक परियोजनाओं और शोध संस्थान आदि को भरपूर वित्तीय सहयोग मिलता है। प्रतिबंध लगाने से ये संगठन अपने प्रमुख वित्तीय स्त्रोत से वंचित हो जाएंगे।

जनता की ओर से सुझाव दिया गया कि परिणाम घोषित व प्रकाशित करते समय गहन पर्यवेक्षण होना चाहिए। दूसरा सुझाव था कि शासन द्वारा टिकिट के कुल अनुमोदित मूल्य का न्यूनतम प्रतिशत राज्यों को मिलना चाहिए। इससे असीमित टिकिटों के मुद्रण पर और अनियमितताओं पर रोक लगेगी। जनता के एक वर्ग ने कहा कि विक्रय से होने वाली आय के लेखा में एकरूपता लाने हेतु प्रक्रिया निर्धारित की

gpl lottery ka khel.indd 22 11/15/2007 4:06:54 PM

जानी चाहिए और राज्य शासन द्वारा प्राप्त आय का अंकेक्षण भी होना चाहिए। कुछ ने सुझाव दिया कि लॉटरी के सकल व्यवसाय राशि पर करारोपण होना चाहिए। राज्य शासन द्वारा दैनिक आधार पर निकाले जाने वाले परिणामों की संख्या भी सीमित की जाए। एक व्यक्ति ने दलील दी, "देश में घुड़दौड़, जुआघर, सट्टेबाजी, अग्रिम सौदे, प्रतिरक्षा (hedging), शेयर बाजार के लेनदेन में अब भी जुआ खेला जाता है। इन गतिविधियों को प्रतिबंधित नहीं किया गया है बल्कि उनमें और सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं। कोई कारण नहीं है कि इसी तरह की रचनात्मक विधि लॉटरी के विषय में भी क्यों नहीं अपनाई जाती।"

राज्य सरकारों में से कुछ ने विधेयक का समर्थन किया और कुछ ने विरोध किया और कुछ ने उसका कुछ शर्तों सहित समर्थन किया। उन राज्य सरकारों ने जिन्होंने बिल का समर्थन नहीं किया, उन्होंने परिणाममूलक बेरोज़गारी और सरकार की आय की हानि पर अपनी चिंता व्यक्त की। कुछ ने व्यवसाय के नियमितीकरण के लिए बहुत से ठोस उपाय भी रखे।

अरुणाचल प्रदेश शासन ने नियमितीकरण की प्रणाली की आवश्यकता व्यक्त की और इस व्यवसाय के पारदर्शी और सुचारु व्यवस्था के लिए अनेक सुझाव दिए, जैसे कि दैनिक परिणाम की अधिकतम सीमा बीस या पच्चीस रखी जाए, लॉटरी योजनाओं का सही नामकरण बगैर प्रत्यय या उपसर्ग के किया जाए, प्रत्येक वर्ष निकलने वाले बंपर लॉटरी की संख्या अधिकतम चार या पांच हो तथा राज्य का लाभांश सकल व्यवसाय से पांच और सात प्रतिशत के बीच हो। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि लॉटरी का मुद्रण शासन द्वारा अपने स्वयं के व्यय पर किया जाना चाहिए। सकल व्यवसाय राशि का 50 प्रतिशत पुरस्कार के रूप में शासन द्वारा वितरित किया जाए।

गोवा, मणिपुर, मिज़ोरम, सिक्किम और मेघालय ने उल्लेख किया कि उनके राज्य में पर्याप्त वित्तीय संसाधन नहीं हैं, इसलिए वे वित्तीय संकट से उबरने के लिए लॉटरी पर निर्भर रहते हैं।

महाराष्ट्र सरकार ने उल्लेख किया कि राज्य शासन द्वारा चलाई जाने वाली लॉटरी पर यदि प्रतिबंध लगाया जाएगा, तो निजी समूह शासन से अनुमोदित लॉटरी चलाने के लिए अभियान चलाएंगे क्योंकि राज्य तालिका के सातवें अनुच्छेद में राज्य शासन को ऐसा करने की शक्ति प्रदान की गई है। इस तरह का कदम केवल निजी लॉटरी संचालकों के लाभ के लिए होगा ना कि शासन के लिए।

पंजाब शासन ने बतलाया कि विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा चलाई जाने वाली लॉटरी की विधियों में एकरूपता नहीं है। उसने न्यूनतम निर्धारित प्रतिशत पुरस्कार के रूप में देने और कंप्यूटरीकृत सेटेलाइट्स से लिंक लॉटरी चलाने की शुरुआत करने का भी सुझाव दिया ताकि संचालन में पारदर्शिता लाई जा सके।

सिक्किम ने सुझाव दिया कि दैनिक या मासिक लॉटरी की संख्या पर सीमा निर्धारित करनी चाहिए।

समिति के अध्यक्ष ने अपने निष्कर्ष में कहा, "इस तथ्य के बावजूद कि लॉटरी पर निषेध के मुद्दे पर समिति स्पष्ट रूप से विभाजित है, सदस्यों से इस मुद्दे पर एक राय निर्मित की जा सकती है कि शासन विधेयक के इस विषय पर बृहत राजनैतिक मतैक्य, समिति के अभिलिखित साक्ष्य के प्रकाश में, विभिन्न पक्षों से मिले ज्ञापन के आधार पर और समिति सदस्यों के द्वारा विधेयक के पक्ष और विपक्ष के तर्कों के आधार पर स्थापित करें।"

5. लॉटरी के लाभ–भूतकाल के साक्ष्य

चीन में लॉटरी से प्राप्त निधि का उपयोग प्रतिरक्षण और चीन की महान दीवार बनाने के काम में लाया गया।

कहा जाता है कि अगस्टस सीज़र ने पहली बार लॉटरी का प्रयोग समुदाय के पक्ष में किया। लॉटरी से प्राप्त निधि का प्रयोग उन्होंने रोम शहर की मरम्मत के लिए किया।

सन् 1420 में फ्रांस के ला एक्लूज़ शहर में सुरक्षात्मक चारदीवारी के निर्माण के लिए लॉटरी द्वारा धन संचय किया गया। पुरस्कार वस्तुओं के रूप में दिए गए।

सन् 1465 में बेल्जियम ने गिरजाघर निर्माण वित्त सहायता केन्द्र और समुद्रीय वाणिज्य भवन के लिए व अनाथालय के लिए लॉटरी का उपयोग किया।

फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम ने सन् 1539 में लॉटरी विक्रय की अनुमति दी ताकि निरंतर घाटे में चल रहे राजकोष को वित्तीय मज़बूती दी जा सके।

इंगलैंड के राजा जेम्स प्रथम ने सन् 1612 में लॉटरी द्वारा अमरीका के जेम्स टाउन वर्जीनिया में पहली ब्रिटिश कालोनी स्थापित करने के लिए लॉटरी संचालित की।

सन् 1665 में **डच के नागरिकों ने अमरीका के न्यू एमस्टरडैम के निर्धन व्यक्तियों की सहायतार्थ लॉटरी से धन एकत्रित किया।**

इसी शहर को अब न्यूयॉर्क के नाम से जाना जाता है।

अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में स्वतंत्रता की घोषणा के प्रथम हस्ताक्षरकर्ता, जॉन हेनकॉक ने बॉस्टन के ऐतिहासिक स्थान पर फेनुइल हॉल बनवाया जिसके लिए लॉटरी की आय का उपयोग किया गया। (इसी हॉल को सन् 1742 में पीटर फेनुइल ने बनवाया था जिसे उसने "आज़ादी का पालना" की संज्ञा दी क्योंकि उसी स्थान पर ऐतिहासिक सभा आयोजित हुई जहां स्वतंत्रता की घोषणा की गई थी।)

सन् 1746 में न्यूयार्क ने अपनी प्रथम संचालित लॉटरी से शहर का सुदृढ़ीकरण किया। उसी वर्ष कोलंबिया के किंग्स कॉलेज की स्थापना के लिए कुछ और लॉटरियां चलाई गई।

लॉटरी द्वारा एकत्रित धनराशि से सन् 1753 में ब्रिटिश संग्रहालय स्थापित हुआ।

फ्रांस और भारत के युध्द में फ्रांस की जीत हुई। जब फ्रांसीसी नागरिकों ने हथियार की मांग की, तो 1756 में न्यूयार्क में लॉटरी चलाई गई ताकि उन लोगों को आग्नेय अस्त्र दिए जा सकें जो उन्हें खरीद नहीं सकते थे। उसी वर्ष युद्ध के कैदियों के लिए जेल बनाने के लिए दूसरी लॉटरी संचालित की गई।

सन् 1758 में अलबानी शहर में युद्ध के दौरान लिए गए ऋणों की वापसी के लिए लॉटरी का आश्रय लिया गया।

सन् 1759 में फ्रांस के लूई–पन्द्रह ने 'लॉटरी रॉयल ऑफ मिलिट्री स्कूल' की स्थापना जिओवन्नी जिआकोमो केसेनोवा के आग्रह पर की। इसके द्वारा राज्य के ऋणों का भुगतान किया गया और यही 'लॉटेरी नेशनेल' की स्थापना में सहायक हुई।

सन् 1761 में न्यूयार्क में दो लॉटरियां चलाई गई, एक सैन्डी हुक में प्रकाश स्तंभ बनाने के लिए और दूसरी न्यूयार्क के सिटी हॉल को सुधारने के लिए।

सन् 1776 में लॉटरी के जरिए औपनिवेशिक सेना गठित की गई।

अमरीका में सन् 1790 और सन् 1860 के बीच में **पचास कॉलेज, तीन सौ स्कूल और दो सौ गिरजाघर लॉटरी कोष से बनवाए गए जिनमें से हारवर्ड, येल, प्रिंसटन, डार्ट माउथ, ब्राउन और कोलंबिया यूनीवर्सिटी प्रमुख हैं।**

सन् 1790 और सन् 1860 के मध्य अमरीका के 33 राज्यों में से 24 ने लॉटरी द्वारा प्राप्त धन से जेल, अस्पताल, अनाथालय और ग्रंथालय बनाए।

गृह युद्ध के दौरान फिलाडेल्फिया की रक्षा के लिए जब तोपों और बंदूकों की ज़रूरत हुई, तब बेन्जमिन फ्रेंकलिन ने धन उपार्जन के लिए लॉटरी का उपयोग किया।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में न्यूयार्क में विभिन्न लॉटरियों के माध्यम से हडसन नदी पर जहाज चलाने के लिए और साहित्य साधना प्रोत्साहन के लिए धन एकत्रित किया गया। न्यूयॉर्क में इसी नदी के किनारे सड़क निर्माण हेतु और यूनियन कॉलेज की सहायतार्थ ब्लैक रिवर् लॉटरी संचालित की गई।

लॉटरी कोष के माध्यम से थाईलैंड़ प्रथम विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों के साथ शामिल होने में समर्थ हो सका।

थॉमस जेफरसन ने लोककल्याण परियोजनाओं के लिए लॉटरी का उपयोग किया ।

सन् 1938 में रॉयल वीमेन्स हॉस्पिटल के निर्माण और उसके उपकरणों के लिए संपूर्ण धनराशि गोल्डन कास्केट निधि नामक लॉटरी से जुटाई गई।

सन् 1968 में ब्लू रिड्ज माउंटेन में से पहाड़ी पथ निर्माण हेतु लॉटरी संचालित की गई।

भारत के संदर्भ में :

सन् 1813 में कोलकाता के टाउन हॉल के निर्माण के लिए लॉटरी से धन एकत्रित किया गया।

चेन्नई में मूर मार्केट, विक्टोरिया पब्लिक हॉउस, रिपिन बिल्डिंग और सरकारी संग्रहालय के लिए अन्य वित्तीय साधनों के साथ लॉटरी निधि का भी उपयोग किया गया।

लगभग दो सौ वर्ष पहले त्रावणकोर के राजा ने सुचीन्द्रम में धानुमलयम मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए लॉटरी संचालित की। उसके आदेश को अभी भी मंदिर में देखा जा सकता है। (देखें परिशिष्ट)

6. लॉटरी खेल के प्रकार

लॉटरी संचालन करने वाले देशों में लॉटरी के विभिन्न प्रकार हैं, परंतु वे सब मूलतः लॉटरी प्रणाली के रूपांतर ही हैं। "लॉटो" जैसे खेल में संख्यांक के सैट में से खिलाड़ी 4, 5 या 6 आंकड़े चुनता है, जैसे 1 से 60 के बीच के आंकड़े। यदि खिलाड़ी केवल चार अंकों का चुनाव करें, तो उस खेल को 4/60 लॉटो के नाम से जाना जाता है। बिंगो और केनो जैसे खेल कुछ इसी तरह के होते हैं, थोड़ा सा ही अंतर होता है।

बहु–संख्यांक लॉटरी खेलों में खिलाड़ी 00 और 99,000 और 999 या 0000 और 9,999 में अंकों का चुनाव करता है, चाहे वो 2–डी, 3–डी या 4–डी खेल हो। ऐसा खेल बहु–ऐच्छिक होता है। पुरस्कार की संरचना भी अलग तरह की होती है जो इस पर निर्भर करती है कि चुने हुए अंक परिणाम के अंक से उसी क्रम में मिलते हैं या उन्हें आपस में मिलाया जा सकता है आदि। एशिया और विशेषतः भारत में इसी तरह की लॉटरियां चलती हैं।

भारत में निम्न प्रकार की निष्क्रिय लाटरियां भी चलाई जाती हैं। मैक्स–3 और लकी–3 आंकड़ों के खेल के ऑनलाइन संस्करण हैं। फास्ट लॉटो, सुपर लॉटो और थण्डरबॉल भी लॉटो जैसे खेलों के ऑनलाइन संस्करण हैं।

निष्क्रिय लॉटरी :

निष्क्रिय लॉटरी में टिकिट पहले ही मुद्रित कर ली जाती है। पुरस्कार अग्रिम रूप से निश्चित कर दिए जाते हैं और वे टिकिटों के

विक्रय पर निर्भर नहीं होते। इसे ड्रॉ लॉटरी और पारम्परिक लॉटरी भी कहते हैं। एशिया और विशेषकर भारत की यह अत्यन्त लोकप्रिय प्रणाली है। एकल अंकीय लॉटरी, 2–डी, 3–डी और 4–डी जैसे खेल इसी श्रेणी में हैं।

1. एकल अंकीय लॉटरी :

यह सर्वाधिक लोकप्रिय और विवादस्पद लॉटरी है। यह भारत में संचालित नहीं होती क्योंकि उसे लॉटरी (नियमितीकरण) अधिनियम 1998 द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया है। इसमें पहला पुरस्कार उस विजेता को दिया जाता हैं जिसका टिकिट अंक परिणाम में घोषित अंक से मिलता है। बाद वाले पुरस्कार केवल आखिरी अंक पर निर्णीत होते हैं, उदाहरण के लिए यदि टिकिट अंक 4576849 है और चुना गया पुरस्कृत अंक 9 है, तो वे सब जिन्होनें 9 के अन्तिम अंक वाली टिकिटें खरीदी हैं, पुरस्कार के हकदार होंगे। इस तरह 10 टिकिटों में से 1 पर पुरस्कार मिलेगा। इसमें पुरस्कार की संभावना और 30 मिनट में एक बार निकाल आहरित किए जाने के कारणों से यह लॉटरी बहुत लोकप्रिय हुई। सवेरे 9 बजे शुरू होकर रात 10 बजे बंद होने वाली एकल अंकीय लॉटरी के प्रतिदिन 52 निकाल आहरित किए जाते थे। आय का 91 प्रतिशत पुरस्कार राशि के रूप में बंट जाता था और दस में से एक टिकिट पर पुरस्कार की सुनिश्चितता के कारण यह लॉटरी जन साधारण में बहुत लोकप्रिय हुई।

2. दो संख्या के (या) 2–डी खेल :

यहां भी पहला पुरस्कार उसी खिलाड़ी को जाएगा जिसके क्रमांक निकाल के क्रमांक से मिलते हों। बाद के पुरस्कार टिकिट क्रमांक के आखिरी दो अंकों पर निर्भर करती है। यदि टिकिट पर क्रमांक 15784 हो, तो जिनकी टिकिट के अंतिम अंक 84 होते हैं, उन्हें कुछ पुरस्कार राशि मिलती है। यहां 100 में से एक टिकिट पर पुरस्कार निश्चित है।

3. तीन संख्या के (या) 3–डी खेल :

इस खेल में पुरस्कार आखिरी तीन अंकों पर निर्भर करता है।

सैट 3–डी खेल :

भारत के कुछ राज्यों में सैट या लोकभाषा में 'समान' लॉटरी चलाई जाती है। एक सैट में 20, 45, 50, 60 या 100 टिकिटें होती हैं जिनमें एक समान संख्यांक होते हैं। इन्हें 5000 x 60 अंकित किया जाता है जिससे पुरस्कार राशि और सैट में टिकिटों की संख्या ज़ाहिर होती है। सभी साठ टिकिटों में वही संख्या होगी, उदाहरण के लिए, 27695। केवल श्रृंखला भिन्न होगी जिसे ए.बी. और ए.सी. आदि क्रम से अंकित किया जाएगा।

ऑनलाइन 3–डी खेल :

यह 3–डी या त्रिसंख्यीय खेल का ऑनलाइन रूप है। खिलाड़ी को 000 और 999 के बीच की संख्या का चुनाव करना पड़ता है। यह बहु–ऐच्छिक खेल है। एस.टी.आर. या सीधे खेल में चुनिंदा अंक निकाल के अंकों से उसी क्रम में मिलना चाहिए। बॉक्स खेल में चुनिन्दा अंक किन्हीं 6 संयोजन या संगत में से कोई हो सकता है। यदि निकाल संख्यांक 678 है, तब जिसकी चुनिंदा टिकिट पर 678, 687, 876, 867, 768 या 786 का संयोजन होता है, वह पुरस्कृत होगा।

उल्टे क्रम खेल में खिलाड़ी दो संख्यांक चुनता है। यदि वे निकाल के अंतिम दो संख्यांक से मिलते हैं, तो वह पुरस्कार प्राप्त करता है। किसी भी क्रम वाले खेल में खिलाड़ी तीन संख्यांक चुनता है, उनमें से यदि कोई दो संख्यांक सीधे क्रमं, उल्टे क्रम या टूटे क्रम में जोड़ी बनाता है, तो भी उसे इनाम मिलता है। पुरस्कार राशि इच्छित खेल के आधार पर निश्चित होती है।

ऑनलाइन 3–डी खेल के सात रूपांतरण उपलब्ध हैं, जैसे, सीधे अनुक्रमांक, बॉक्स–3, बॉक्स–6, सीधा क्रम, उल्टा क्रम, टूटा क्रम या कैसा भी क्रम। बॉक्स–3 उस समय लागू होता है जब चुनिंदा तीन अंकों में से कोई दो एक समान हो।

4. बंपर निकाल :

ऐसी लॉटरी बहुसंख्यांक होती है जिसमें परिणाम लंबे अंतराल से निकाले जाते हैं, इसलिए उनकी आवर्तन कम होती है। टिकिटों का मूल्य भी ऊंचा होता है। भारत में जैकपॉट के आधार पर टिकिट का मूल्य 50, 100 या 1000 हो सकता है। परंतु पुरस्कार राशि अच्छी भारी भरकम होती है। अक्सर बंपर लॉटरी का समय बड़े त्योहारों के समय निर्धारित किया जाता है, जैसे नव–वर्ष, दीपावली, पंजाब का बैसाखी या महाराष्ट्र का गणेश उत्सव। कुछ राज्यों में इन्हें मासिक कर दिया गया है।

ट्रिनीदाद और टोबेगो में इन्हें असाधारण पुरस्कार कहते हैं। ब्रिटेन में इन्हें सुपर ड्रॉ कहते हैं जहां उस पर 5 मिलियन पौंड का इनाम होता है।

लॉटो खेल :

1. लॉटो फास्ट :

खिलाड़ी के 1 से 31 के बीच में चुने 5 संख्यांक यदि परिणाम संख्यांक से मिलते हैं, तो उसे दो लाख रुपये का पुरस्कार मिलता है। प्रति सप्ताह सात परिणाम निकलते हैं। चार, तीन, दो संख्याओं के मेल पर भी पुरस्कार रखे जाते हैं।

2. सुपर लॉटो :

यह 6/49 का खेल है जिसमें यदि दांव लगाने वाले के सभी छः संख्यांकों का मेल परिणाम के संख्यांकों से होता है, तो उसे दो करोड़ रुपये पुरस्कार में दिए जाते हैं। मेल खाते पांच, चार और तीन के संख्यांकों पर भी पुरस्कार दिए जाते हैं। अगर छः संख्यांकों वाला कोई खिलाड़ी ना हो, तो पुरस्कार को अगले सप्ताह तक बढ़ा दिया जाता है।

3. थंडरबॉल :

खिलाड़ी को 1 से 42 के बीच 5 संख्यांक चुनने होते हैं और 1

से 15 के बीच एक थंडरबॉल संख्या का चुनाव करना पड़ता है। यदि पांचों संख्यांक और एक थंडरबॉल परिणाम से मिलता हो, तो उसे एक करोड़ का पुरस्कार मिलता है। अगर कोई विजेता ना हो, तो उसे आगे के लिए बढ़ा दिया जाता है। बड़े जैकपॉट पुरस्कार के अतिरिक्त पांच संख्या के मिलान वाले छोटे–छोटे इनामात भी होते हैं जहां एक, दो, तीन, चार संख्यांक थंडरबॉल संख्या से मिलते हैं और पांच, चार, तीन संख्यांक थंडरबॉल संख्या के समान हो।

अज़रबैजान देश में यह लॉटो 5+1 कहलाता है जहां खिलाड़ी को पांच सामान्य अंक और एक स्वर्ण अंक का मिलान करना पड़ता है। कुछ देशों में इसे पॉवरबॉल के रूप में खेला जाता है।

अमरीका में पॉवरबॉल अनेकानेक राज्यों में खेला जाता है, जिनमें बंपर निकाल होता है। हर परिणाम में एक कोठीनुमा ड्रम से पांच सफेद गेंद पहले से रखी 53 गेंदों में से निकाली जाती है और दूसरे ड्रम की 42 गेंदों में से एक लाल रंग की गेंद निकाली जाती है। ये निकाल बुधवार और शनिवार के दिन किए जाते हैं।

अमरीका में निम्न प्रकार के लॉटो खेल अनेक राज्यों में प्रचलित हैं।

4. 2 x 2 :

इसमें खिलाड़ियों को 1 से 26 के बीच दो लाल और दो सफेद अंकों का चुनाव करना होता है। इसके परिणाम अमरीका के बहुराज्जीय लॉटरी संघ के द्वारा संचालित होते हैं। इस खेल में प्रति सप्ताह छः परिणाम घोषित किए जाते हैं। पुरस्कार की राशि गेंदों की संख्या और परिणाम में घोषित अंक के अनुसार होती है।

5. उत्तर डाकोटा की हॉट लॉटो :

उत्तर डाकोटा के द्वारा 2002 में संचालित इस लॉटो की कीमत सिर्फ 1 डॉलर है और पुरस्कार 1 मिलियन डॉलर का है। दांव लगाने वाला 1 से 39 के बीच पांच अंकों का चुनाव करता है और 1 से 19

के बीच एक हॉट बॉल अंक को भी चुनता है। परिणाम हर बुधवार व शनिवार को पॉवरबॉल परिणाम के तुरंत बाद निकाले जाते हैं।

6. उत्तर डाकोटा का वाइल्ड कार्ड 2 :

सन् 1998 में उत्तर डाकोटा द्वारा चलाई गई इस लॉटरी को 1 डॉलर में दो खेलों के लिए खरीदा जाता है। पुरस्कार 100,000 डॉलर का होता है। भाग लेने वाले को 1 और 31 के बीच पांच अंकों का और 16 वाइल्ड कार्ड अंकों में से किसी एक का चुनाव करना पड़ता है।

7. मेगा मिलियन :

इसमें 1 और 52 के बीच किन्हीं छः अंकों का चुनाव किया जाता है। अलग–अलग पुरस्कार ढांचे की नौ ऐच्छिक लॉटरी होती है।

पॉवरबॉल मल्टीमिलियनरः

इस तात्कालिक खेल के 14 अमरीकी राज्य सदस्य हैं। बेतरतीब तरीके (Randomiser) से तीन प्रतिभागियों का चुनाव किया जाता है और वे एक खेल में भाग लेते हैं जिसे 'क्रेज़ी ऐट्स' कहते हैं।

स्पाइल खेल (Spiel games) :

यह खेल एक प्राथमिक खेल के साथ ऐच्छिक रूप से माध्यमिक स्तर पर खिलाया जाता है। इन खेलों को लॉटो जैसे खेलों के साथ–साथ चलाया जाता है। इस खेल का पहला स्थापक सन् 1975 में जर्मनी था। खिलाड़ियों को एक अतिरिक्त दांव ऐच्छिक रूप से खेलकर स्पाइल खेल में भाग लेने का अवसर दिया जाता है। खेल ऑनलाइन है या ऑफलाइन, उसके आधार पर खिलाड़ी को कंप्यूटर के द्वारा अंकों की एक श्रृंखला दी जाती है, या फिर टिकिट पर पहले से ही मुद्रित अंक के परिणाम के लिए क्रियाशील बनाया जाता है। स्पाइल खेल केनेडा और बहुत से यूरोपीय देशों में, व ऑस्ट्रेलिया और अमरीका के कुछ देशों में प्रचलित है।

कंप्यूटर लॉटरी :

भारत में निष्क्रिय लॉटरी खेलों को इलेक्ट्रानिक रूप में परिवर्तित

कर फुटकर शाखाओं से विक्रित किया जाता है ताकि खिलाड़ी उन्हें अपने कंप्यूटर टर्मिनल पर खेल सकें। इसे कंप्यूटर लॉटरी कहा जाता है। उसके संचालक इसका कुछ अंश कागज़ पर और कुछ कंप्यूटर पर चलाते हैं।

जोकर :

यह ताश के पत्तों का सरल खेल है जिसमें दांव खेलने वाला काला पान, लाल पान, ईंट या चिड़ी के पत्तों का चुनाव करता है। यदि वे परिणाम में निकाले गए पत्तों से मेल खाते हैं तो वह जीत जाता है।

बिंगो :

आज के बिंगो का रूप सीधे–सीधे इटली की नेशनल लॉटरी का उत्तराधिकारी है जिसे 'लो जियूओको डेल लॉटो ड इटालिआ' कहा जाता है। उसका पहला खेल सन् 1530 में शुरू हुआ और आज भी सप्ताह के अंतराल में खेला जाता है।

लॉटो के मूल रूप में तीन कतार और नौ खंड होते थे। प्रत्येक खंड में पांच अंक और चार रिक्त खाने होते थे जिन्हें बेतरकी तरीके से जमाया जाता था। भरे हुए खानों के अंक एक से नब्बे के बीच के थे। एक बैग में नब्बे टोकन होते थे, उनमें से कॉल देने वाला एक मुद्रित अंक वाला टोकन निकालता था। यदि यह अंक खिलाड़ी के कार्ड पर दर्ज होता, तो वह उसे आवृत कर देता था। जो खिलाड़ी पूरे खंड के अंक आवृत करता, उसे पुरस्कार मिलता था।

इस खेल को न्यूयार्क में एड लोवे ने सूखी हुई फल्लियों, रबर सील और गत्ते के जरिए खिलाया था। किसी खेल में अति उत्साहित होकर जीत की खुशी में एक महिला बीएनो (फल्ली) के बजाए 'बिंगो!' चिल्ला उठी, तभी से खेल का नाम बिंगो पड़ गया।

जब खेल लोकप्रिय हो गया तो एक समस्या उठी। पेंसिलवेनिया के विल्क्स बेरे के एक गिरजाघर ने वित्तीय कठिनाईयों से निजात

पाने के लिए एड लोवे लॉटरी का सेट खरीदा। लॉटरी के परिणाम में कई विजेताओं ने जीतने का दावा कर दिया। इसलिए बड़े पैमाने पर खेलने के लिए अनेक अंकों के संयोजन की आवश्यकता थी, जिसके लिए कोलंबिया यूनिवर्सिटी के गणित के प्रोफेसर कार्ल लेफलेर ने एड लोवे के निवेदन पर ऐसे कार्ड बनाए जिसमें अंकों का एक समूह कभी दोबारा नहीं आता था।

केनो :

चीन के हूण वंश को इसके आविष्कार का मूल माना जाता है। चिउंग ल्यूंग ने इसका आविष्कार सेना के लिए किया। इसकी लोकप्रियता प्रारंभ से लेकर वैसी ही बनी हुई है।

केनो के इस चीनी आविष्कार में 120 चरित्रों के आइडियोग्राफ होते थे। इनका चुनाव कन्फ्यूशियस और उसके शिष्यों द्वारा लिखित पुस्तक में से किया गया जिसमें हज़ार चीनी चरित्र विद्यमान थे। बाद में इन चरित्रों की संख्या को 90 तक सीमित कर दिया और कई वर्ष तक यही संख्या चलती रही। जब चीनी पहली बार अमरीका पहुंचे, तब इन अप्रवासियों ने इस खेल में से चरित्रों की संख्या अस्सी कर दी और आज तक वही संख्या चल रही है।

जब यह खेल लोकप्रिय हो गया और गैर चीनियों ने भी खेलना शुरू कर दिया तो इन चरित्रों को 1 से 80 के अंकों में बदल दिया गया। इन्हें छोटे–छोटे लकड़ी की गेंदों पर मुद्रित किया जाता था और संचालक उन्हें आपस में मिला देता था। विजेता अंकों को निकालने के लिए इन गेंदों को बतख की गर्दन के समान वाले ट्यूब में से निकालता था, इसलिए इसका नाम केनो गूस़ पड़ गया। चूंकि इन गेंदों को हाथों से मिलाया जाता था, इसमें पक्षपात होने की संभावना थी। इसलिए आजकल टेबल टेनिस की पिंगपांग गेंदों पर अंक मुद्रित किए जाते हैं। वे हवा के जरिए मिल जाते हैं और पारदर्शी केनो गूस ट्यूब में से निकाले जाते थे। सामान्यतः यह गूस दो होती है। प्रत्येक में 10 गेंदें समाती हैं। 20 गेंदों के चुनाव के बाद खेल समाप्त होता है।

बिंगो में संचालक अंक पुकारता जाता है जब तक कि विजेता जीत का दावा नहीं करता। परंतु केनो में केवल बीस संख्याएं चुनी जाती हैं और यदि कोई विजेता ना हो तो दांव पर लगाया गया धन वापिस जुआघर को दे दिया जाता है। यद्यपि इस खेल में केसिनो या जुआघर का हाथ है, फिर भी केनो अत्यन्त लोकप्रिय खेल है।

खुरच टिकिट :

इसे त्वरित लॉटरी भी कहा जाता है क्योंकि कागज़ पर चिपके लैटेक्स की परत को जब खुरचा जाता है, तब अंक दिखाई देता है। लैटेक्स 'हीविया ब्रासीलिन्सिस' नामक पेड़ के रस से बनता हैं। बहुत सी उपभोग सामग्रियां बनाने वाले इसी तकनीक को ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उपयोग करते हैं। सन् 1974 में मासाचूसेट्स अमरीका का पहला राज्य था जिसने खुरच लॉटरी चलाई। बाद में इसे 'साइंटिफिक गेम' नामक कंपनी ने विकसित किया जो 1973 की खेल समाधान प्रदाता थी। आज भी यह कंपनी अमरीका में कागज़ और ऑनलाइन खुरच खेल के क्षेत्र में सबसे अग्रगामी कंपनी है। इसी ने मासाचूसेट्स लॉटरी के लिए प्रारंभिक सोपान पर 25 मिलियन टिकिटें मुद्रित की जिनका मुद्रण 'शीट–फेड' प्रणाली पर किया गया।

सन् 1978 में स्विटजरलैंड की लॉटरी 'रोमानदे' यूरोप की प्रथम लॉटरी थी जिसने खुरच प्रणाली को चलाया। सन् 1999 में यही यूरोप का पहला देश था जिसने खुरच टिकिट को इलेक्ट्रानिक्स से पुनः उत्पादन करके लॉटरी के ऑनलाइन संस्करण, टैटिलो इलैक्ट्रॉनिक लॉटरी की शुरुआत की।

तत्काल लॉटरी प्रणाली के कई रूप हैं। कुछ राशियों के प्रतीक चिन्हों पर आधारित हैं। खिलाड़ी पांच तारांकित चिन्हों को खुरचता है। यदि दो में एक जैसे राशि चिन्ह हैं, तो वह जीत पेटी को खुरचकर निहित पुरस्कार राशि देख सकता है। बेल्जियम की केब्रिओ लॉटरी में बोनस के लिए भी खुरच कॉलम का प्रावधान किया गया है। यदि क्रेता को मुख्य खुरच में पुरस्कार न मिले, तो वह बोनस वाला भाग

खुरच सकता है। कुछ देशों में खुरच टिकिटों में बिंगो के ही रूप का प्रयोग किया है। इसमें दो खंड होते हैं। पहले में गेंदों के चित्र बने रहते हैं जिन्हें खुरचा जाता है, जिसके बाद अठारह अंकों का संख्यांक दिखाई देता है। इस संख्यांक का टिकिट के दूसरे खंड में दिए गए बिंगो संख्यांक से मिलान किया जाता है। मिलान की गई संख्याएं बिंगो कार्ड पर चिन्हित की जाती हैं। मिलान की संख्या पर या बने हुए नमूने या डिज़ाइन पर पुरस्कार राशि निर्भर होती है। प्रत्येक देश में खुरच लॉटरियां प्रचलित हैं और हरेक की अपनी–अपनी अलग पुरस्कार राशि है। जहां बेल्जियम में सोलह खुरच खेल चलते हैं, वहीं स्विट्‌जरलैंड में उनकी संख्या चौदह होती है।

संभावना निहित खेल (Probability Games):

खुरच खेल के समान इस लॉटरी की टिकिटों में अनेक छिपाए हुए स्थान होते हैं। हर टिकिट में संभावित जीत की पुरस्कार राशि दर्ज होती है। परंतु उसके लिए खिलाड़ी को सही स्थान पर खुरचना पड़ता है।

पुल–टैब खेल :

यह भी तात्कालिक परिणाम वाली लॉटरी है। टिकिटों पर 2–प्लाई का लैमिनेशन होता है। टिकिट के आगे वाले हिस्से पर लॉटरी का नाम, टिकिट मूल्य, जीतने की संभावना और पुरस्कार की संरचना आदि की विस्तृत जानकारी दी जाती है। टिकिट के पीछे वाले हिस्से पर तीन या पांच छिद्रयुक्त छोटी खिड़कियां या पेटियां होती हैं जिनमें पुरस्कार राशि या प्रतीक चिन्ह छिपे रहते हैं। इन पेटियों को तोड़कर खोलने से पुरस्कार का पता चलता है। इन्हें 'पिकल्स' और 'ब्रेक ओपन्स' भी कहते हैं।

बेटिंग या सट्‌टे के खेल :

ऐसे खेलों में घुड़–दौड़ या कुत्ता–दौड़ में संभावित विजेता पर सट्‌टा खेला जाता है। भारत में घुड़–दौड़ पर आधारित कोई लॉटरी नहीं है, परंतु शापूरजी और पल्लनजी जैसे कुछ कॉर्पोरेट इसके अनुमोदन हेतु प्रयासरत हैं।

खेलकूद लॉटरी :

इसमें या सट्टे में कोई विशेष अंतर नहीं है सिवाय इसके कि यहां फुटबॉल, टेनिस, क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेलों की टीम की संभावित विजय पर सट्टा लगाया जाता है। इसमें भारी भरकम राशि लगाई जाती है। भारत में कुछ मैच फिक्सिंग के प्रकरण हुए हैं, जहां मैच के परिणाम को अपने पक्ष में कर धन कमाने के प्रयास सट्टेबाजों ने किए हैं। यहां खेलकूद पर आधारित कोई लॉटरी नहीं है।

ऑनलाइन खेल :

आपस में लिंक किए गए कंप्यूटर्स पर लॉटो जैसे अंक वाले खेल होते हैं जिन्हें ऑनलाइन लॉटरी कहते हैं जिसके विस्तृत प्रकार अगले अध्याय में दिए गए हैं।

विशिष्ट रूप से निर्मित खेल (Customised Games) :

कुछ लॉटरी संचालक स्थानीय रीति रिवाज़ों या प्राथमिकताओं पर आधारित क्षेत्रीय लॉटरी चलाते हैं, जैसे कि स्वीडन और मोरक्को में 35 खेलों के परिणामों का बहु–दिवसीय अवधि में पूर्वानुमान लगाकर खेल प्रेमियों द्वारा लॉटरी खेली जाती है।

प्रसारित खेल (Televised games) :

प्रसारित विडियो खेलों की अंतःक्रिया में पारम्परिक खेलों की स्फूर्ति और टीवी के 'गेम–शो' का मज़ा लिया जा सकता है। जब उन्हें टीवी पर प्रसारित किया जाता है, तब क्रेता ऑनलाइन संचालकों से टिकिट खरीदकर उनमें भाग लेता है।

विडियो लॉटरी :

एक ही मशीन में बहुत से तेज खेलों को समाविष्ट कर दिया जाता है। सिक्कों या नोटों से दांव बनाए जाते हैं। खेलों को 'एनीमेटेड' किया जाता है। इनमें ताश के पोकर या ब्लैकजैक जैसे खेलों की नकल की जाती है।

केसिनो खेल :

इन्हें केसिनो यानि आधुनिक जुआघर में खेला जाता है। इनमें पहले केनो जैसे खेल प्रचलित थे, परंतु अब इनमें दूसरे ऑनलाइन खेल शामिल हो गए हैं जिनमें 'बैक्कारेट', 'ब्लैकजैक', 'क्रैप्स', 'रूलैट', 'केनो', 'स्लाट मशीन', 'विडियो पोकर', 'कैरिबियन स्टड पोकर', 'लैट–इट–राइड', 'हार्स–रेसिंग', 'पाइ–गौ–पोकर' बहुत लोकप्रिय हैं। भारत में 'बेक्कारैट', 'ब्लैकजैक', 'क्रेप्स' और 'स्लॉट मशीन' जैसे खेलों के प्रचलन की बड़ी संभावनाएं हैं और कुछ ऑनलाइन संचालकों ने इसके लिए प्रस्ताव भी दिए हैं।

1. बेक्कारैट (Baccarat):

इटली से आविष्कृत यह खेल फ्रांस और यूरोप में बहुत लोकप्रिय है। यूरोप के केसिनो का यह प्रमुख आकर्षण है। 'चमिन दे फेर' इसका प्रचलित यूरोपीय रूपांतरण है और 'बेक्कारैट एन बैंक्व' इसका एक ओर रूपांतरण है। बेक्कारैट इटली के 'बेक्कारा' का फ्रेंच समानार्थी है जिसका अर्थ है शून्य, इसमें 10 और सभी फेस कार्ड का मूल्य शून्य होता है। खिलाड़ियों की संख्या अधिक होने पर भी खेल में तो केवल दो हाथ ही हिस्सा लेते हैं – एक खिलाड़ी का और दूसरा बैंकर का। खिलाड़ी उस चाल पर दांव लगाते हैं जहां उनके अनुमान से स्कोर नौ की संख्या के सबसे समीप होगा। 10 को और फेस कार्ड को छोड़कर, जिनका मूल्य शून्य होता है, इक्के का मूल्य एक होता है और अन्य पत्तों का मूल्य उनके अंकित मूल्यों के बराबर होता है।

खिलाड़ी और बैंकर दोनों को दो–दो पत्ते दिए जाते हैं जिन्हें पलटकर रख दिया जाता है, पहले पत्ते बांटने वाला अपने पत्ते खोलता है, उसके बाद बैंकर अपने पत्ते जाहिर करता है। यदि एक पत्ते में 9 की संख्या आती हैं तो उसे 'नेचुरल' कहा जाता है। खेल उसके पक्ष में जाता है जिसे 'नेचुरल' विजय मिलती है। यदि पहले पत्ते में 8 का अंक आता है तो खेल समाप्त हो जाता है, क्योंकि 8 का अंक केवल 9 के 'नेचुरल' अंक से ही पराजित होता है। यदि दो

पत्तों का मूल्य 9 से अधिक हो, तो केवल आखिरी अंक पर निर्णय किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी के पास 9 और 4 के अंक वाले 13 का मूल्य भी होता है, तब भी उसे 3 माना जाएगा। यदि दो पत्तों से खेल का निर्णय नहीं होता है, तो तीसरा पत्ता भी बांटा जाता है। बैक्कारेट में सामान्यतः खेल समाप्ति के लिये तीन से अधिक पत्तों की आवश्यकता नहीं होती।

2. ब्लैकजैक :

दो दशक पहले जब एडवर्ड थॉर्प की पुस्तक 'बीट द डीलर' प्रकाशित हुई, तब ब्लैकजैक या इक्कीस लोकप्रिय हुआ। इस पुस्तक में खेल जीतने की रणनीति का विशद वर्णन है जो कि कंप्यूटर पर गणितज्ञों द्वारा निकाले गए डेटा पर आधारित है।

ब्लैकजैक 52 पत्तों की गड्डी से खेला जाता है जिसे 'सिंगल डेक गेम' या एक गड्डी का खेल कहते हैं। यह एक से अधिक गड्डियों से भी खेला जाता है जिसे 'मल्टीपल डेक गेम' या अनेक गड्डियों का खेल कहते हैं। फेस कार्ड के पत्तों का मूल्य दस होता है और दूसरे पत्तों का मूल्य उनकी आमुख मूल्य होती हैं। इक्के के दो मूल्य होते हैं – 11 और 1 जो खिलाड़ी की इच्छा पर आधारित होता है।

खेल में एक वितरक होता है जिसके साथ एक से लेकर सात खिलाड़ी तक होते हैं। वितरक केसिनो का प्रतिनिधि होता है और पत्ते बांटता है। जब सभी खिलाड़ी अपना दांव लगा चुके हैं, वितरक प्रत्येक को दो–दो पत्ते उल्टा करके बांटता है। स्वयं को भी दो पत्ते बांटता है जिसमें से एक उल्टा होता है, एक सीधा। यदि वितरक या खिलाड़ी को एक इक्के और एक दस मूल्य का पत्ता मिलता है, तो उसका मूल्य 21 यानि ब्लैकजैक हो जाता है और वह 3–2 पर जीत जाता है। जिस खिलाड़ी के पत्तों का योग 14 होता है वह "हिट" हो जाता है, यानि वह एक और पत्ता ले सकता है। यदि इस तीसरे पत्ते के द्वारा उसका योग 21 से अधिक हो जाए तो वह हार जाता है जिसे "बस्ट" होना कहते हैं। जिस खिलाड़ी के पास 17 या 18 का योग है वह "स्टेंड" करने का

gpl lottery ka khel.indd 41 11/15/2007 4:06:55 PM

निर्णय ले सकता है यानि वह अतिरिक्त पत्ता नहीं लेगा। यदि 21 का योग नहीं मिला और खिलाड़ी का योग वितरक के योग से कम है, तो खिलाड़ी हार जाता है। उदाहरण के लिए, यदि खिलाड़ी के पास 17 या 18 के मूल्य का पत्ता है और वितरक के पास 20 की संख्या का योग है, तो खिलाड़ी हार जाता है।

मल्टीपल डेक में दो, चार और कभी–कभी छः गड्डियों का उपयोग किया जाता है। खेल के नियम स्थान–स्थान पर परिवर्तनीय होते हैं।

3. क्रेप्स :

यह बहुत तेज़ और उत्तेजक खेल है। जहां ब्लैकजैक में खिलाड़ी को वितरक या केसिनो के विरुद्ध खेलने के अलावा दूसरा कोई तरीका नहीं है, क्रेप्स में वह पांसे के साथ या उसके विरुद्ध खेल सकता है। जब खिलाड़ी 'शूटर' के साथ दांव लगाए, तब उसे सही बाजी कहते हैं और उसके विरुद्ध लगाए, तब उसे गलत बाजी कहते हैं। क्रेप्स में दांव लगाने की अनेक विधियां है, जैसे पास–लाइन/डोन्ट–पास–बेट, कम/डोन्ट–कम–बेट, बाइ–बेट (Buy Bet), ले–बेट (Lay Bet) आदि। यदि 'शूटर' पास–लाइन दांव लगाता है और पहली फेंक पर 'नेचुरल' 7 और 11 खेलता है तो वह और अन्य सभी जिन्होंने पास–लाइन दांव लगाया है, जीत जाते हैं। यदि 2, 3 या 12 की संख्या खुलती है तो 'शूटर' और अन्य सभी दांव लगाने वाले हार जाते हैं। यदि कोई अन्य अंक खुलता है, तब उसे बिंदू–संख्या (पॉइन्ट–नंबर) कहते हैं। अगला दांव किस तरह का लगाया गया है, उस पर निर्भर होते हुए खेल बढ़ता जाता है।

इन खेलों में जिन पांसो का उपयोग किया जाता है, वे केसिनो पांसे कहलाते हैं जो साधारण पांसों से एक इंच या पौन इंच बड़े होते हैं। वे लाल रंग के हैं और कड़क, पारदर्शी प्लास्टिक के बने हैं। सुरक्षा के बतौर उन पर एक कोड संख्यांक भी मुद्रित होता है।

4. रूलैट :

इस खेल की शुरुआत फ्रांस में हुई जहां रूलैट का अर्थ है – छोटा चक्र। रोम के निवासी जो हमेशा मनोरंजन की तलाश में थे, वे रथ के चक्कों को आड़ा करके दांव का खेल खेलते थे। इस खेल का आविष्कार सत्रहवीं शताब्दी में फ्रांस के गणितज्ञ पास्कल ने किया। इंगलैंड में यह खेल सन् 1820 में आया और वहां से अमरीका चला गया। यूरोप के इस लोकप्रिय खेल में तीन सौ वर्षो से कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

रूलैट के चक्र में यूरोप में 37 विभाजन और अमरीका में 38 विभाजन किए जाते हैं। इन पर 1 से लेकर 36 की संख्या लाल और काले रंग में बराबर हिस्से में मुद्रित की जाती है। बाकी के खंड़ों में हरे रंग से यूरोपीय चक्र में 0 और अमरीकी चक्र के अड़तीसवें खंड में 00 अंक डाला जाता है। प्रत्येक खंड में दीवार सी होती है जहां चक्के को एक बार घुमाए जाने के बाद गेंद आकर रुक जाती है।

खिलाड़ी संचालक के विरुद्ध दांव लगाते हैं। संख्या, संख्यांक के समूह या रंग पर दांव लगाए जाते हैं। उसके बाद चक्के को घुमाकर उसमें बॉल फेंकी जाती है। यदि बॉल दांव पर लगी संख्या पर रुकती है, तो संचालक को या अन्य खिलाड़ियों को भुगतान करना पड़ता है जो उनके लगाए दांव पर निर्भर करता है। चक्र के हर घुमाव के पहले दांव लगाया जाता है।

5. स्लॉट मशीन :

सन् 1890 में सेन फ्रांसिस्को के कल बनाने वाले चार्ल्स फे ने स्लॉट मशीन का आविष्कार किया। उस समय मशीनों को सीखचों के पीछे रखा जाता था। यदि ग्राहक प्रतीक चिन्हों को सही जमा देता, तो उसे मुफ्त में शराब दी जाती थी। इन प्रतीक चिन्हों में पान, ईंट, चिड़ी जैसे ताश के पत्तों के चिन्ह, घंटियां, घोड़े की नाल और तारों के चिन्हों का उपयोग किया जाता था। आरंभिक मशीनों में यदि कोई दो घुड़नाल पंक्तिबद्ध जमा देता, तो उसे एक अमरीकी निकल और यदि

तीन घंटियां जमा ले तो दस निकल मिलते थे, इसलिए इन मशीनों को 'लिबर्टी बेल्स' भी कहा जाता था।

आज की मशीनों में विभिन्न प्रतीक चिन्हों वाली तीन रील है और प्रत्येक रील पर एक जैकपॉट का विजय चिन्ह होता है। खिलाड़ी के सिक्का डालने पर मशीन घूमने लगती है। प्रतिफल स्केल पर जिन प्रतीकों का संयोजन किया है, मशीन के घूमने पर यदि वही संयोजन आ जाता है तो खिलाड़ी जीत जाता है। 'कैश–आउट' बटन दबाते ही उसे पुरस्कार मिल जाता है।

सिक्के एकत्रित करने और भुगतान करने की विधि स्वचालित होने के कारण यह मशीन लोकप्रिय हुई। बाद में हरबर्ट स्टीफन मिल्स ने उसी मशीन का संशोधित रूप प्रस्तुत किया जिसमें लंबे हैण्डिल होते थे और मशीन चलाने में सुविधा रहती थी। सन् 1930 के दशक में जब स्लॉट मशीन को अवैध कर दिया गया था, तब न्यायालय की एक पेशी में एक न्यायाधीश ने इसे 'एक हाथ का लुटेरा' करार दिया था। कारण यह था कि केसिनो का संचालक खिलाड़ियों का फायदा उठाकर लाखों कमाता था। तब से यह मिल्स मशीन के नाम से विख्यात हो गई।

सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप के खेल :

1. **लॉटो डाउफिन (Loto Dauphin) :**

इस खेल में 90 अंकों के 8 से 12 बोर्ड होते हैं। प्रत्येक बोर्ड में 'डाउफिन', 20 'काउन्टर' और अलग–अलग चार रंगों की 20 डिस्क होती हैं। खिलाड़ी 1 से अधिक बोर्ड ले सकता है। वह काउन्टर को उन अंकों पर रखता है जिसका उसने चुनाव किया है। उसके बाद वह डाउफिन को रंगीन डिस्क के साथ अपने पसंद के अंकों पर रखता है। यदि वह अंक निकाले गए अंकों से मिलता जुलता है, तो खिलाड़ी पुरस्कार का अधिकारी होता है।

2. लॉटो देस मॉन्यूमेंट्स दे पेरिस (Loto des monuments de Paris) :

इस खेल में वॉटर कलर के लिथोग्राफ किए हुए कार्ड का उपयोग किया जाता हैं जिस पर पेरिस के स्मारकों के चित्र होते हैं। कार्ड के कॉलम पर अंक डले होते हैं। घोषित किए हुए अंक छोटे से पारदर्शी काउन्टर से ढांक दिए जाते हैं, जैसा कि बिंगो में होता है।

3. बिरिबी :

इसमें कार्ड पर अंक डले 70 वर्ग खंड होते हैं और उसी संख्या के गोल किए गए छोटे–छोटे जैतून में चर्म पत्र रखे जाते हैं। जैतून को ढकने के लिए हैल्मेट का उपयोग किया जाता था। खिलाड़ी किसी एक अंक पर अपना दांव लगाता है। थैली में से जैतून निकालकर जब निकाला हुआ अंक प्रदर्शित किया जाए और वह खिलाड़ी के चुने हुए अंक से मेल करे, तब उसे लगाए गए दांव से 64 गुना अधिक पुरस्कार दिया जाता है।

4. कावागनोल :

यह खेल भी बिरिबी के समान ही होता है। मगर यहां पर खिलाड़ी को पांच या नौ वर्गीय खंडों का कार्ड दिया जाता है।

5. बार लॉटरी :

यह लॉटरी एक चक्र पर कैफे में और बार में खेली जाती थी। चक्र को ढलवा लोहे के आधार पर खड़ा किया जाता था। खेल में अलग–अलग विषयों पर, जैसे ग्रामीण दृश्यावली और दन्त–कथा पर आधारित हाथ से बनाए हुए चित्र होते थे।

6. बेगाटेली, केकीलोरम और टिवोली :

इन खेलों में छोटी सी गेंद या किसी चीज़ को एक ढालू सतह पर लुढ़काया जाता था जो संख्यांक डले हुए बॉक्स पर आकर रुकती थी। यह पिन बॉल मशीन का ही पूर्ववर्तीय रूप लगता है।

दांव के प्रकार :

1. एकल दांव (सिंगल बेट) :

जब खिलाड़ी एकल परिणाम वाले ऑनलाइन खेल की लॉटरी टिकिट खरीदे, तब इसे एकल दांव कहते हैं।

2. एक साथ अनेक दांव (मल्टीपल बेट्स) :

इसमें खिलाड़ी एक ही समय अनेक प्रविष्टियों को एक साथ खरीद सकता है, जैसे, एक से अधिक लॉटो बेट या खुरच टिकिटों का एक पैक खरीदने पर मल्टीपल बेट बनता है।

3. अभिदान द्वारा दांव लगाना (Subscription) :

लॉटरी संचालक के यहां खिलाड़ी अपना खाता खोलता है। खिलाड़ी के बतलाए हुए अंक पर संचालक उस अंक की प्रविष्टि करता है। यह भागीदारी निश्चित अवधि के लिए उसका खाता समाप्त होने तक चलती है।

4. सामूहिक दांव (ग्रुप बेट्स) :

इसे सिंडीकेट या पूल दांव भी कहते हैं जहां ग्राहक खिलाड़ी अपनी धनराशि को एकत्रित कर अनेक खेलों में अपना दांव लगाते है जिससे उनकी जीत के आसार बढ़ जाते हैं। पुरस्कार जीतने पर पुरस्कार की राशि सिंडीकेट के सभी सदस्यों में बंट जाती है।

7. ऑनलाइन लॉटरी

विगत पच्चीस वर्षो से विश्वस्तरीय ऑनलाइन खेल प्रचलित हैं और अत्यधिक सफल व्यवसाय बन गए हैं। इसके अस्तित्व में आने के बाद अमरीका में खिलाड़ियों की भागीदारी में वृद्धि हुई जहां वयस्कों के वर्ग में 90 प्रतिशत इसमें भाग लेने लगे हैं। यह विश्व में खेलों का सबसे बड़ा बाज़ार है और यहां ऑनलाइन लॉटरियों से 15000 लखपति बन चुके हैं। इंगलैंड में सन् 1997 में प्रारंभ हुई इस लॉटरी के 10,000 निर्गम विक्रय केन्द्र थे जिनकी संख्या अब 36,000 हो गई है। 60 प्रतिशत से अधिक लोग इस खेल के भागीदार है। विकसित देशों के अतिरिक्त ऑनलाइन लॉटरी ब्राजील, भारत और फिलिपीन्स जैसे विकासशील देशों में भी प्रचलित है। इस वैश्विक ऑनलाइन लॉटरी में 125 अरब डॉलर या 6000 अरब रुपये का व्यवसाय होता है जिसमें 10 प्रतिशत वृद्धि की संभावना है।

भारत में ऑनलाइन लॉटरी की शुरुआत सन् 2002 में हुई। इस खेल की शुरुआत का श्रेय सिक्किम राज्य को जाता है, जब वहां के मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग ने इसे शुरू करने का निर्णय लिया। एस्सेल समूह की प्लेविन पहली ऑनलाइन कंपनी थी जिसने भारत में सिक्किम शासन के लिए 'सुपर लॉटो' लॉटरी शुरू की। पहले ही निर्गम में 1.8 मिलियन टिकिटें बिक गई। पहले निर्गम में जब किसी भी क्रेता ने उसे नहीं जीता, तब इसे आगे बढ़ा दिया गया। तब मई में विमलकुमार गजमड़ ने 8.61 करोड़ में से कर घटाकर 7.75 करोड़ का पुरस्कार जीता। ऑनलाइन लॉटरियां सिक्किम में आज भी संचालित हैं। वर्तमान

में महाराष्ट्र, सिक्किम, नागालैंड व अरुणाचल में यह संचालित है। इन राज्यों ने ऑनलाइन कागज़ लॉटरी के विक्रय की भी अनुमति दे दी है। इनके अलावा पंजाब और मेघालय ने भी अनुमति दी है।

बहुत से देशों के खिलाड़ियों ने ऑनलाइन लॉटरी खेलना शुरू कर दिया है। भारत में संभवतः तीन वर्षों में ये कागज़ लॉटरी के विक्रय से आगे निकल जाएगी। कागज़ लॉटरी में संख्यांक पूर्व मुद्रित होते हैं जिन्हें छोटी गुमठियों पर बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन जैसे सार्वजनिक स्थानों पर बेचा जाता है। इनके परिणाम भी स्थानीय भाषा के दैनिक समाचार पत्रों में छापे जाते हैं। ऑनलाइन लॉटरी में विक्रेता को ऑनलाइन लॉटरी के विक्रय केन्द्र पर जाना होता है। वहां पंजीकरण के बाद खिलाड़ी को प्रयोक्ता नाम और कूट शब्द दिया जाता है। खिलाड़ी को एक भुगतान पर्ची दी जाती है और चुने गए अंक को काट दिया जाता है। एक दूसरा ऐच्छिक विकल्प भी है जिसे 'लकी पिक' कहते हैं जहां कंप्यूटर, खिलाड़ी के लिए अंक का चुनाव करता है। जिस स्थान पर लॉटरी के विक्रय केन्द्र हैं उन्हें पी.ओ.एस. टर्मिनल या विक्रय केन्द्र कहते हैं। सभी विक्रय केन्द्र एक केन्द्रीय सर्वर से किसी बड़े शहर में, जो बीच मे स्थित हो, उससे जुड़े होते हैं। जैसे ही खिलाड़ी किसी अंक का चुनाव करता है, उसे वी.एस.ए.टी. (वेरी स्माल अपेरचर टर्मिनल), सी.डी.एम.ए. (कोड डिवीज़न मल्टीपल एक्सेस), वायरलैस फिडिलिटी (वाई–फाई), इंटरनेट या जी.पी.आर.एस. (जेनरल पैकेज रेडियो सर्विस), सेटेलाइट या रेडियो के जरिए मुख्य सर्वर को सम्प्रेषित करके इन जानकारियों के साथ स्टोर कर दिया जाता है जिसमें टिकिट क्रय करने की तारीख व समय, परिणाम का दिनांक और टर्मिनल की पहचान शामिल होती है। यह मुख्य सर्वर चुने हुए संख्यांक को लॉक कर देता हैं ताकि उस संख्यांक का चुनाव अन्य कोई क्रेता ना कर सके। जब वितरक को भुगतान पर्ची दी जाती है, तब उसे वह एक टर्मिनल से निकलता है और सुरक्षित थर्मल–स्लिप तुरंत छप जाती है। इस छपी टिकिट पर भी सभी उपर्युक्त जानकारियां दी जाती हैं।

ऑनलाइन लॉटरी के टिकिट परिणाम घोषित होने के पूर्व अंतिम मिनट तक विक्रय की जा सकती हैं। इसके दूसरे लाभों में खेल की त्वरित गति और परिणाम का सीधा प्रसारण देखने को मिल जाता है जिससे इस खेल में पारदर्शिता आती है। परिणामों की घोषणा स्वचालित आयतित मशीनों पर की जाती है। परिणामों को टीवी पर दिखाया जाता हैं। उन्हें समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया जाता हैं और ऑनलाइन विक्रय केन्द्रों पर भी देखा जा सकता है। इसमें कागज़ लॉटरी से यह भी फर्क है कि यदि ऐसा कोई विजेता नहीं मिलता जो पुरस्कृत संख्यांक को संयोजित करता है तो उस स्थिति में पुरस्कार की राशि आगे बढ़ा दी जाती हैं। अन्य बातें, जैसे पुरस्कार राशि को प्राप्त करने और उसकी अवधि इत्यादि की प्रक्रिया वही होती है जो कागज़ लॉटरी में होती है।

ऑनलाइन संचालकों ने स्मार्ट कार्ड का ऐच्छिक विकल्प भी दिया हैं जिसके माध्यम से खिलाड़ी फुटकर विक्रय केन्द्र के अलावा कहीं से भी दांव लगा सकता है। क्रेडिट कार्ड की खरीदी पर खिलाड़ियों को 12 अंकों का अकाउंट नंबर और 4 अंकों का कूट शब्द दिया जाता है। यदि खिलाड़ी फोन पर लॉटरी खेलना चाहें तो वह फोन पर ही अपना संख्यांक दे सकता है। परंतु वह सिक्के डालकर चलने वाले पी.सी.ओ. के फोन का उपयोग नहीं कर सकता है। लॉटरी संचालक के निर्देशों के अनुसार पहले तो वह अपना 12 अंकों वाला अकाउंट नंबर और कूट शब्द देता है। उसके बाद वह अपने पसंदीदा खेल के अनुसार तीन, पांच या छः अंक देता है। टिकिट मुद्रित हो जाती है और भविष्य के उपयोग के लिए केन्द्र में रखी जाती है। पुरस्कार का दावा पेश करते समय खिलाड़ी को अपना कार्ड दिखाना ज़रूरी होता है। इसी तरह क्रेता एस.एम.एस. सुविधा का उपयोग करते हुए अकाउंट नंबर, कूट शब्द और अपने चयन किए गए संख्यांक भी भेज सकता है।

भारत की ऑनलाइन लॉटरी की कंपनियां :

चूंकी ऑनलाइन लॉटरी संचालित करने वाली राज्य सरकारों ने अपनी टेंडर शर्तो के अनुसार किसी विदेशी कंपनी के साथ संबद्धता का

gpl lottery ka khel.indd 49 11/15/2007 4:06:56 PM

उल्लेख किया, तो काफी कंपनियों को अंर्तराष्ट्रीय कंपनियों से तकनीकी निवेश लेना पड़ा। भारतीय कॉर्पोरेट संस्थानों ने जी.टेक, इंट्रालॉट, आई.एल.टी.एस., ओलिवेट्टी जैसी भूमण्डलीय कंपनियों से इकरारनामा स्थापित किया और उनके सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर तकनीकियों का उपयोग किया।

भारत की सबसे पुरानी कंपनी 'सुगाल एंड दमानी' ने अपने संसाधनों का एकत्रिकरण किया और कंप्लॉट नामक एक आंतरिक लॉटरी प्रणाली का प्रारंभ एवं विकास किया। कंप्यूटर टर्मिनल के द्वारा सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर की देशी तकनीकों का उपयोग करते हुए इस कंपनी ने लॉटरी टिकिटों का विक्रय किया है। इस कंपनी की अनेक खूबियां हैं, जैसे अल्प संचालन व्यय, बेहतर नियंत्रण और कार्यकुशलता। कंपनी ने पंजाब और महाराष्ट्र में 18,000 टर्मिनलों का संस्थापन किया हैं। स्थानीय लॉटरी क्रेताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कंपनी ने आंतरिक (in-house) तकनीक को विकसित किया है। **सुगाल एंड दमानी द्वारा विकसित एकीकृत लॉटरी प्रणाली विश्व की सर्वाधिक उन्नत और लचीली प्रणालियों के समतुल्य है और अपनी उच्च गुणवत्ता, विश्वसनीयता और अपने में विस्तार की संभावना और अपनाए जाने योग्य सुरक्षित संचालन के लिए विख्यात है। यह पहली भारतीय कंपनी है जिसने सी.डी.एम.ए. तकनीक का आंकड़े संबंधन के लिए उपयोग किया है और जिसने ब्रिटेन की नेशनल लॉटरी के संचालन के लिए बोली लगाई है।**

'अपोलो इंटरनेशनल', 'एस्सार ग्रुपस फॉरच्यून लॉटरी', 'मार्टिन लॉटरी ग्रुपस् इनलॉट टेक्नॉलॉजीस् एंड स्मार्टविन', 'विडियोकॉन ग्रुपस् धूत इंटरटेनमेंट', 'एस्सेल ग्रुपस् प्लेविन लॉटरी', 'फोरब्स ग्रुपस लॉटरी डिवीज़न धनधनाधन', 'सिक्सो एंड के. के. मोदी ग्रुप्स सनशाइन इंडिया लॉटरी' – ये कुछ अन्य ऑनलाइन लॉटरियों का संचालन करने वाली भारत में कॉर्पोरेट कंपनियां हैं।

8. लॉटरियों के अन्य उद्देश्य

धर्मार्थ लॉटरियां :

मनोरंजन के खेल की लॉटरियों के अलावा लॉटरी का उपयोग विभिन्न लोकहित कार्यों के लिए भी किया जाता हैं। यद्यपि नियमित लॉटरी से प्राप्त आय का उपयोग सार्वजनिक परियोजनाओं के लिए किया जाता है, धर्मार्थ लॉटरी का उपयोग लोकहित व मानव हित के लिए किया जाता है।

सन् 1996 में मयटन्स लॉटरी की स्थापना वारविकशायर के मयटन हैमलेट हॉस्पाइस के लिए किया गया जहां उन रोगियों का उपचार होता हैं जो गंभीर रूप से रोगग्रस्त होते हैं। ग्लोबलॉट इसी तरह की धर्मार्थ लोकहित की लॉटरी हैं जो चार धर्मार्थ संगठनों के द्वारा चलाई जाती है। मानव अधिकार संरक्षण, रेडक्रॉस और रेड क्रेस्सेंट सोसयटी का अंतर्राष्ट्रीय संघ, विश्व प्रकृति निधि (डब्लयु. डब्लयु. एफ.) सी.ए.आर. ई. इंटरनेशनल को ग्लोबलॉट से सहायता मिलती है। नाइजीरिया की कनु हार्ट फाउंडेशन बच्चों की ओपन–हार्ट शल्यक्रिया के लिए अपनी स्वयं की लॉटरी संचालित करती है। अभी तक इस कार्यक्रम से 68 बच्चे लाभान्वित हुए हैं।

नीदरलैंड इस तरह की तीन धर्मार्थ लॉटरी चलाता है, नेशनल पोस्टकोड लॉटरिज़्, स्पॉन्सर लॉटरिज़् और बैंक गीरो लॉटरिज़्। नेशनल पोस्टकोड लॉटरिज़् सामाजिक न्याय मंत्रालय से अनुज्ञा प्राप्त धर्मार्थ लॉटरी है जो समाज व पर्यावरण के लिए सहायता करती है। यह एमनेस्टी इंटरनेशनल, यूनाईटेड नेशन्स हाई कमिश्नर फॉर रिफ्यूजी,

यू.एन.एच.सी.आर., प्रकृति और पर्यावरण की डच सोसायटी, डच रेड क्रॉस, विश्व प्रकृति निधि और स्टिचिंग डी.ओ.ई.एन. को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इन परियोजनाओं के लिए संस्था ने 1.2 अरब यूरो की सहायता की है। स्पॉन्सर लॉटरिज खेलखूद, संस्कृति और कल्याण केन्द्र की सहायता के लिए स्थापित की गई। अब तक इस लॉटरी ने 70 मिलियन यूरो का अनुदान किया है। बैंक गीरो लॉटरिज् नीदरलैंड की पहली धर्मार्थ लॉटरी थी। इसने अब तक हार्ट फाउण्डेशन, एन्टी–कैंसर संगठन, एड्स निधि और प्रिंस बर्नार्ड कल्चर फंड के लिए 79 मिलियन यूरो की मदद की।

आयरलैंड की लॉटरी ने पुर्नवास लॉटरी के माध्यम से पुर्नवास वर्ग के लिए धन उपार्जन किया है। यह संस्था विकलांगों के लिए संरक्षण, प्रशिक्षण और रोज़गार की व्यवस्था करती है।

'द ओल्ड ओप्पोस' धर्मार्थ लॉटरी इंगलैंड में स्थित है और गेमिंग बोर्ड फॉर ग्रेट ब्रिटेन द्वारा पंजीकृत है। यह 'एस.एस.ए.एफ.ए. फोर्सेस हेल्प' को वित्तीय सहायता देती है जिनसे भूतपूर्व सैनिकों और उनके परिवारों के लिए कल्याणकारी योजनाएं चलती है। इसके अतिरिक्त वह 'रॉयल नेवल बेनेवलेंट ट्रस्ट' और 'एक्स–पो एसोसिएशन', यानि जलसेना और भूतपूर्व युद्ध कैदियों के लिए गठित संघों को सहायता प्रदान करती है। सन् 1974 में प्रारंभ 'सर मैकेल सोबेल हॉउस' ऑक्सफोर्ड में रोग से पीड़ित लोगों के लिए एक 'हॉस्पैस' या आश्रय बनाया गया। इसे चलाने के लिए और जनता में इसकी गतिविधियों की जानकारी देने के लिए 1999 में 'सोबेल लॉटरी' शुरू की गई।

तमिलनाडु में सन् 2000 में 'डेफ चाइल्ड इंडिया' संचालित की गई जो ब्रिटेन की 'नेशनल लॉटरी चेरिटीज़ बोर्ड' की भागीदारी से चल रही है।

भारत में पश्चिम बंगाल में (धर्मार्थ उद्देश्य के लिए) और केरल में (गिरजाघर परियोजनाओं के लिए) विभिन्न लॉटरियां चलाई गई।

gpl lottery ka khel.indd 52 11/15/2007 4:06:56 PM

सन् 1980 में सुगाल एंड दमानी, जो भारत के सर्वप्रथम लॉटरी प्रचालकों में से एक हैं, उन्होंने हैदराबाद में मेडिसिटी कॉलेज और अस्पताल के निर्माण के लिए बीजक धन उपलब्ध कराया। उन्होंने चेन्नई की कैंसर संस्था और हैदराबाद की भारतीय विद्या भवन के लिए भी लॉटरी संचालित की। इसी भारतीय विद्या भवन के ऑडिटोरियम का निर्माण भी लॉटरी निधि से किया गया ।

दूसरे बहुत से देशों में भी बड़ी संख्या में धर्मार्थ लाटरियां चलाई जाती हैं।

ग्रीन कार्ड लॉटरी :

यह लॉटरी अमरीका में रोज़गार के लिए परमिट प्रदान करने वाली रेफल लॉटरी हैं। अमरीका में सन् 1990 में वीसा लॉटरी प्रोग्राम भी संचालित किया गया जिसे डाइवर्सिटी वीसा या ग्रीन कार्ड लॉटरी कहते हैं। इससे गैर अमरीकी नागरिकों को रोजगार परमिट और स्थायी निवास मिलता हैं। 'केनटुकी कॉनसुलर सेन्टर' कंप्यूटर के द्वारा बेतरतीब अंक का चुनाव करता है। अमरीका का 'डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट' इस लॉटरी के जरिए 90,000 विजेताओं का चुनाव करता है, परंतु इनमें से प्रथम 50,000 को वीसा दिया जाता है। केनेडा, भारत, मैक्सिको, फिलीप्पीन्स आदि देशों को इस लॉटरी कार्यक्रम में भाग लेने की पात्रता नहीं होती है।

विरासत लॉटरियां (Heritage Lotteries) :

विरासत के संरक्षण हेतु वित्त जुटाने के लिए बहुत सी 'हेरिटेज' लॉटरियां चलाई जाती हैं।

'ट्वीड रिवर हेरिटेज प्रोजेक्ट' ब्रिटेन की 4 मिलियन पौंड की परियोजना है जो हैरिटेज लॉटरी बोर्ड की वित्तीय सहायता से चलती है। इसका उद्देश्य ट्वीड नदी की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत का उन्नयन करना है।

एच.एल.एफ. (द हेरीटेज लॉटरी फंड) ब्रिटेन के लोगों को अपनी

विरासत को जानने और उसका संरक्षण करने के लिए सक्षम बनाती है। एच.एल.एफ. ने ग्रीनविच की 'रॉयल ऑबज़र्वेटरी' को 7 मिलियन पौंड का पुरस्कार दिया है ताकि उसे संरक्षित रखा जा सके। इसी निधि से बेलफास्ट के सेंट जॉर्ज मार्केट के पुर्ननिर्माण के लिए सहायता मिली है। सन् 1890 में निर्मित यह मार्केट अब भी विद्यमान है। इसी लॉटरी ने सन् 2005 में तितली गणना परियोजना (Garden butterfly count project) को 50,000 पौंड का पुरस्कार दिया है जिससे वहां की जनता का बेहद प्रतिसाद मिला है।

9. लॉटरी का निकाल

पुरस्कृत संख्यांकों को अव्यवस्थित तरीके से निकालना 'ड्रॉ' कहा जाता है।

यद्यपि संख्यांकों को इस प्रकार चुनने की अवधारणा आम है, फिर भी हर देश में अलग–अलग तरीके होते हैं। भारत में घूमने वाली गोल कोठियों का उपयोग किया जाता है। अज़रबैजान में 1 से 90 तक के संख्यात्मक कोठियों का उपयोग किया जाता है। इन्हें एक विशेष थैले में रखकर खेल के नियमानुसार एक के बाद एक निकाला जाता है। उदाहरण के लिए, बिंगो खेल के लिए 41 कोठियों को चुना जाता है। कुछ खेलों के लिए लॉट्रोन नामक लॉटरी मशीन का उपयोग भी किया जाता है।

भारत में निम्नांकित तीन विधियों का उपयोग होता है :

मशीनी निकाल :

जिस हॉल में निकाल या परिणाम आयोजित होता है, वहां एक आयताकार मशीन सुप्रकट स्थान पर रखी जाती है। मशीन में घूमती हुई छः वर्तुलाकार डिस्क होती हैं। प्रत्येक डिस्क पर 0 से 9 अंक होते हैं। ये डिस्क बिना गियर वाले चक्र और चैन से चलित होती है जो एक पैडल से जुड़े रहते हैं। कभी–कभी मशीन में मोटर लगी रहती है जो एक स्विच से चालू होती है। निर्णायकों की सहमति के बाद मशीन चालू की जाती है। जब डिस्क का घूमना बन्द होता है, मशीन की फ्रेम में स्थित छोटे से छिद्र से प्रत्येक डिस्क का अंक दृष्टिगोचर होता है। इन अंकों को लिखा जाता है। यह सिलसिला बाईं ओर से शुरू होता

gpl lottery ka khel.indd 55 11/15/2007 4:06:56 PM

है। छः अंकों का क्रम पुरस्कार की संख्या मानी जाती है। परिणाम समिति के अध्यक्ष द्वारा इन विजेता पुरस्कारों को अभिलिखित किया जाता है। इसी प्रणाली से द्वितीय व तृतीय पुरस्कारों को चुना जाता है। चूंकि बाद के पुरस्कार अंतिम के पांच, चार आदि अंकों के आधार पर निर्णीत होते हैं, उनके अनुसार आवश्यक गोल डिस्कों का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई पुरस्कार अंतिम चार अंकों के आधार पर निर्णीत होता है, तब बाईं ओर की दो वर्तुलाकार डिस्कों को ढांक दिया जाता है। परिणाम निकलने के बाद और सभी विजेता पुरस्कारों को अभिलिखित करने के पश्चात् समिति के सदस्य उस पंजी पर हस्ताक्षर करते हैं।

हस्तचालित विधि :

परिणाम के लिए नियत स्थान पर छः या आवश्यक संख्या में कोठियां रखी जाती हैं। प्रत्येक पर उनकी पहचान के लिए 1, 2 या 6 के लेबल के साथ–साथ उनके द्वारा निरूपित अंक, जैसे लाख, दस हज़ार, हज़ार, सौ, और दस की इकाइयां उन पर स्पष्ट रूप से छापी जाती हैं। हर कोठी में 0 से 9 अंक तक की 10 चिप या डिस्क होती है। वर्णानुक्रम की अंकन पद्धति के अनुसार बनाई गई श्रृंखला के लिए एक अलग कोठी रखी जाती है क्योंकि टिकिट पर के.ए. 367289 जैसे अंक अंकित होते हैं जैसा कि भारतीय लॉटरी के अध्याय में लिखा गया है। निर्णायकों की उपस्थिति में प्रत्येक चिप या डिस्क को प्लास्टिक बैग से ढांका जाता है। निर्णायकों की सहमति से घंटी बजते ही सभी कोठियों को घुमाया जाता है और उन्हीं के संकेत पर घुमाना बंद कर दिया जाता है। हर कोठी से एक चिप या डिस्क निकाली जाती है। डिस्क के अंक एक–एक करके निर्णायकों को प्रदर्शित किए जाते हैं। इन अंकों को बोर्ड पर उसी श्रृंखला से लिखा जाता है जैसे वे निकाले गए थे। श्रृंखला को चुनने के लिए सातवीं कोठी का प्रयोग किया जाता है। श्रृंखला के साथ छः अंकों वाला अंतिम संख्यांक विजेता संख्यांक होता है। डिस्क 1 से 6 के क्रम में लाख से चालू होती है और

अधोगमन करती हुई घटती संख्या की इकाईयों की ओर जाती है। यदि पुरस्कार अंतिम पांच अंकों के संख्यांक से निर्णीत होता है, तब उसी से संबंधित यानि 2 से 6 की कोठियों को घुमाया जाता है। इसी तरह यदि अंतिम तीन या चार संख्यांक पर आधारित निकाल देना हो, तो उसी के अनुरूप कोठियों को संचालित किया जाता है। सभी अंकों के चुनाव और रजिस्टर में प्रविष्टी के बाद निर्णायक समिति के सभी सदस्य उस पर हस्ताक्षर करते हैं।

पर्चियों के प्रयोग की हस्तचालित विधि :

जो धर्मार्थ लॉटरी का संचालन करते हैं, वे अक्सर इस विधि का उपयोग करते हैं। इसमें अंक मुद्रित पर्चियों को एक कोठी में रखा जाता है। इन पर्चियों की संख्या विक्रय की गई लॉटरी की टिकिटों के बराबर होती है। कोठी को हिलाकर अंदर रखी पर्चियों को अच्छी तरह मिलाया जाता है और फिर आवश्यक संख्या में उन पर्चियों को निकाला जाता है।

आजकल की मशीनों में विजेता संख्यांक को निकालने के लिए गेंदों का उपयोग भी किया जाता है। यह विधि अमरीका और अन्य काफी देशों में अपनाई गई है, इसका वर्णन नीचे दिया गया है। अनेक प्रकार के परिणामों की संख्या बढ़ने के साथ–साथ बहुत से देशों ने स्वचालित ड्रॉ मशीन का उपयोग शुरू कर दिया है।

बॉलसेट विधि :

इसमें तीन ड्रॉ मशीनों और गेंदो के छः सैट्स का उपयोग होता है। निकाल के लिए केवल दो मशीनों का चुनाव किया जाता हैं। 'लॉटो' खेल के लिए इन मशीनों को 'सुपर लॉटो प्लस ड्रॉ मशीन' और 'मेगा ड्रॉ मशीन' कहा जाता है। सफेद गेंदों के तीन सैट का उपयोग 'सुपर लॉटो प्लस ड्रॉ' के लिए और जामुनी गेंदों के तीन सैट का उपयोग 'मेगा ड्रॉ' के लिए किया जाता है। गेंदों को एक डिब्बे में रखा जाता हैं जिस पर मुद्रित संख्या वाली धातु की सील लगी रहती है। जब सील तोड़ी जाती है, तब इस संख्या को दर्ज किया जाता है। यदि ये मशीन

gpl lottery ka khel.indd 57 11/15/2007 4:06:56 PM

या बॉल ना चल पाए, तब तीसरी मशीन और गेंद के सैट का उपयोग किया जाता हैं। वास्तविक निकाल के पहले इन मशीनों और गेंदों की जांच की जाती है, परिणाम निकलने पर उन्हें दर्ज किया जाता है। उसके बाद इन परिणामों का सांख्यिकी अधिकारी द्वारा विश्लेषण किया जाता है जो सांख्यिकी ंके बेतरतीब होने को प्रमाणित करता है।

मशीन की जांच के बाद वे औपचारिक निकाल के लिए तैयार हो जाती हैं। यह सुनिश्चित किया जाता हैं कि विनिर्दिष्ट समय के पश्चात् 'पूल' बन्द कर दिया जाए। मशीन में उल्टी दिशा में घूमने वाले हैंडल के जरिए कोठी घूमती है। अंक डले गेंद इस घूमती कोठी में गिराए जाते हैं। एक यंत्रीकृत प्रणाली के द्वारा एक–एक करके गेंदों की उल्लिखित संख्याओं को खेल के प्रकार के अनुसार निकाला जाता है।

स्वचालित निकाल :

'फेन्टसी 5 डेली डरबी टी. एम.' और 'डेली 3 ड्रॉ' जैसे खेलों के लिए इस विधि का उपयोग किया जाता हैं। स्वचालित निकाल की शुरुआत सन् 1998 में हुई क्योंकि तब तक खेलों के प्रकार व संख्या में काफी वृद्धि हो गई थी और ऐसी विधि की आवश्यकता महसूस हो रही थी जो ज्यादा तेज़ व कार्यकुशल हो और जिनके रखरखाव पर कोई खर्च ना होता हो।

स्वचालित ड्रॉ मशीन या ए.डी.एम. कंप्यूटर के समान होती है। निकाल के लिए दो मशीनें और तीन विधियों का प्रयोग किया जाता है। मशीन और विधि का निर्णय लेने के लिए अव्यवस्थित संख्या वाला कार्यक्रम चलाया जाता है। कंप्यूटर के हार्ड ड्राइव में अंक डली सुरक्षा सील होती है, ताकि जो सॉफ्टवेयर बेतरतीब संख्यांक उत्पन्न करता है, उसे बदला ना जा सके क्योंकि उसे मशीन के आंतरिक हिस्से में स्थायी तौर पर लगा दिया जाता हैं। कभी–कभी किसी मशीन के कार्य न कर पाने की स्थिति में तीसरी आरक्षित मशीन का प्रयोग किया जाता है।

अमरीका में प्रयुक्त हस्तचलित विधि :

इस विधि में फेन्टसी–5 के प्रवेश कूपन अमरीका के पोस्ट आफिस द्वारा लॉटरी कार्यालय में ट्रे (किश्तीनुमा थाल) और रेक्स (बिना पल्ले की अलमारी) पर निर्गमित किए जाते हैं। एक ट्रे में लगभग 1200 लिफाफे होते हैं और हर 'रैक' पर 36 ट्रे होते हैं, हर ट्रे पर संख्यांक डला रहता हैं।

एक विनिर्दिष्ट निकालकर्ता जो लॉटरी का नियोजित कर्मचारी नहीं होता, वह ट्रे पर मुद्रित संख्यांक वाले अपारदर्शी कैप्सूलों को एक कोठी में रखता है, फिर कोठी में से एक कैप्सूल निकालता है। इसी विधि से चुने जाने वाले विजेताओं की संख्या के अनुरूप वह अनेक कैप्सूल निकालता है। इस तरह चुने गए संख्यांक के प्रत्येक ट्रे को एक के बाद एक लाया जाता है। निकालकर्ता एक स्केल की सहायता से बिना देखे एक लिफाफा निकालता है, यह प्रक्रिया सभी विजेताओं के चुने जाने तक सतत् चलती रहती है। अन्य सभी लिफाफे नष्ट कर दिए जाते हैं।

क्रय किए गए टिकिट पर परिणाम की तारीख और समय अंकित कर दिया जाता है। किसी अपरिहार्य कारणों से इस दिनांक को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पड़ने पर शासन को ऐसा करने का अधिकार है। परंतु ऐसी संशोधित दिनांक को इश्तिहार के जरिए प्रकाशित करना ज़रूरी है। सभी देशों में परिणाम जनता के समक्ष निकाले जाते हैं। इन्हें टीवी पर उसी समय प्रसारित भी किया जाता है। विभिन्न सुरक्षा के प्रबन्ध किए जाते है और संबन्धित उपकरणों की सुरक्षा हेतु आवश्यक उपाय भी किए जाते हैं ताकि उनके साथ कोई हेरफेर न हो।

10. भारतीय लॉटरियों की कार्यप्रणाली

वर्तमान में लॉटरी व्यवसाय में 20,000 करोड़ रुपये की राशि लगी हुई है। कुल 28 राज्यों और 7 केन्द्रशासित राज्यों में से 10 में ही लॉटरी संचालित होती है। इस लॉटरी बाज़ार में बड़ी संभावनाएं हैं। अरुणाचल, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, सिक्किम जैसे पूर्वी राज्य अपनी आय के लिए लॉटरी पर निर्भर हैं क्योंकि धन का उपार्जन करने के लिए उनके पास अन्य कोई संसाधन नहीं है। लॉटरी चलाने वाले अन्य राज्य हैं पश्चिम बंगाल, केरल, पंजाब और महाराष्ट्र।

औपनिवेशक शासकों द्वारा संचालित लॉटरी :

भारतीय लॉटरी का 300 वर्ष पुराना इतिहास है। पुर्तगाली शासन के दौरान गोवा में लॉटरी चलाई गई और मद्रास में अंग्रेजों के शासन के वक्त कोलकाता में लॉटरी चलाई जाती थी। आज तमिलनाडु के नाम से जाने वाले राज्य में सन् 1700 में लॉटरी के परिणाम निकाले जाते थे। लॉटरी का पहला संदर्भ सन् 1781 के अभिलेख में मिलता है। लॉर्ड मैकार्टनी के शासन के प्रथम वर्ष में लन्दन से प्रेषित 26 जनवरी सन् 1782 को जारी एक पत्र में उन्होंने लिखा कि "हैदरअली की फौंजो द्वारा रौंद दिए जाने के बाद कर्नाटक की जनता अकालग्रस्त हो गई और खज़ाना खाली हो गया था।" उसने लिखा कि काउंसिल के सदस्य सरकार से बगैर कोई पारिश्रमिक लिए अपने कर्तव्यों का निर्वाहन कर रहे थे। चूंकि इंगलैंड भेजे गए भुगतान के बिलों पर पाबन्दी थी, इसलिए मैकार्टनी ने बंगाल सरकार को स्थानीय ऋण और लॉटरी का आवेदन देने का प्रयास किया। यद्यपि लॉटरी के द्वारा सरकारी खजाने

की परिपूर्ति कराने का उसका प्रयास असफल हो गया, परंतु उससे एक मनोरंजक, आय उपार्जन करने के माध्यम की शुरुआत हो गई।

एक स्वतंत्र व्यवसायी, पीटर मैसी कासिन के पत्रों ने उद्घाटित किया कि उन्होंने मद्रास के फोर्ट सेंट जार्ज में एक विनिमय केन्द्र स्थापित करने का प्रस्ताव रखा जिसके खर्च की लॉटरी द्वारा प्रतिपूर्ति की जाती। 29 जून 1787 को ब्रिटिश शासन के साथ हुए पत्र व्यवहार में उन्होंने एक ऐसे स्थान का परामर्श दिया "जहां लेन–देन हो सके, विवादों व मतभेदों का निराकरण हो सके। सरकार ने उनके सुझाव को अनुमोदित कर दिया क्योंकि मुख्य इंजीनियर, कोलोनेल रॉस ने कैस्सिन के प्रस्तावित निर्माण स्थल को अनुपयुक्त घोषित कर दिया। तब कैस्सिन ने रॉबर्ट हग्स की संपत्ति खरीदने की सलाह दी। अपने पत्र में उन्होंने लिखा, "चूंकि निजी जायदाद खरीदने से इमारत की लागत बढ़ जाती है, मैंने लॉटरी के संवर्धन का सुझाव देने की हिमाकत की है। माननीय कंपनी के कोष में धन जमा कर दिया जाए। लॉटरी के परिणाम की घोषणा तक उसे वहीं बिना ब्याज के जमा रहने दिया जाए और संलग्न ज्ञापन के अनुसार उसका उपयोग लॉटरी पुरस्कार देने के लिए किया जाए।"

उनके सुझाव के अनुसार 100,000 पगोड़ा को 10 पगोड़ा के 10,000 हिस्सों की टिकिटों में बांटना था। 5000 पगोड़ा का पहला पुरस्कार, 2500 के दो द्वितीय पुरस्कार, 1000 पगोड़ा के पांच तृतीय पुरस्कार, 500 पगोड़ा के दस चतुर्थ पुरस्कार, 250 पगोड़ा के बीस पंचम पुरस्कार, 100 पगोड़ा के पचास षष्टम पुरस्कार, 50 पगोड़ा के सौ सप्तम पुरस्कार, और 20 पगोड़ा के 2750 अष्टम पुरस्कार रखे गए। सरकार को 10,000 पगोड़ा का लाभ मिला। इस धनराशि से हग्स साहब का घर खरीदा गया जहां वर्तमान में फोर्ट म्यूज़ियम स्थित है।

ज्ञापन

पुरस्कार	संख्या	धनराशि	योग
1	1	5000	5000
2	2	2500	5000
3	5	1000	5000
4	10	500	5000
5	20	250	5000
6	50	100	5000
7	100	50	5000
8	2750	20	55000

पहले निकाल की टिकिटें 500

अंतिम निकाल की टिकिटें 260

स्टार पगोड़ा के 2,938 पुरस्कार 90,000

7,062 रिक्त

10,000 टिकिटें

नोटः दो रिक्त स्थानों के लिए पुरस्कार नहीं और सबसे छोटा पुरस्कार दो टिकिटों की कीमत के बराबर है।

{यह ज्ञापन 'वेस्टिजेस ऑफ ओल्ड मद्रास वॉल्यूम–3 से लिया गया है।}

मार्च 1791 में 50,000 पगोड़ा वाली 'नेटिव इंहेबिटेंट्स मद्रास लॉटरी फंड' चलाई गई और इससे प्राप्त लाभ का उपयोग निशक्त पुरुष शरणस्थल और निर्धन, लंगडे और अंधत्व से ग्रस्त मद्रास के निवासियों के लिए किया गया।

दिसम्बर 1791 में 50,000 पगोड़ा वाली दूसरी लॉटरी चली और लाभांश का उपयोग उन मार्गों के लिए किया गया जिन सड़कों का रखरखाव सरकार के द्वारा नहीं होता था।

सन् 1795 और सन् 1796 में माउंट रोड का पुनरुद्धार और मरम्मत का कार्य किया गया। वार्षिक लॉटरी के लाभ का उपयोग इसी परियोजना के लिए व पुरुष आश्रम और लोक हित के अन्य कार्यों के लिए किया गया। वर्तमान कमांडर–इन–चीफ सेतु के पास स्थित नदी पर पक्के नदीपथ का निर्माण किया गया।

सन् 1796 में ब्लैकटाउन के एक सौ से अधिक ईसाई निवासियों ने वहां गिरजाघर की मांग की। मानसिक रुग्णालय के लिए आबंटित राशि का 1/6 हिस्सा इस गिरजाघर के निर्माण हेतु उपयोग किया गया।

सन् 1799 में शरणस्थली और रोड लॉटरी की समिति ने शरणस्थली और रोड लॉटरी के अगस्त 1795 और नवम्बर 1799 के दौरान उत्पाद का ब्यौरा प्रस्तुत किया और इन्हीं कार्यों को जारी रखने के लिए अनुमति मांगी।

यह विवरण इस प्रकार है :

नदीपथ सेतु के निर्माण का व्यय	– 2917
कब्रिस्तान के पास सेतु निर्माण का व्यय	– 2806–21–56
ब्लैकटाउन में प्रोटेस्टेंट गिरजाघर के निर्माण का व्यय	– 1500
मातृदेश के सहायता के लिए व्यय	– 5000
सैनिक शरणस्थली पर व्यय	– 6000
मद्रास के पास के मार्गों के सुधार हेतु 21 सित. 96 से 24 नव. 99 तक का व्यय	– 12170
शेष	– 1209–10–76
पगोड़ा	31602–32–52

मैथ्यू कैम्पबेल नामक एक आर्टिलरी लॅफ्टिनेंट की डायरी से उन दावों की जानकारी मिलती हैं जो उन्होंने सन् 1823 और सन् 1828 के बीच में अपने दोस्तों के साथ समय–समय पर लगाए थे। इन दावों के कुछ सीधे–सादे कारण थे, जैसे कि पांच वर्षों में उन्हें वापिस इंगलैंड जाना था, एक लेफ्टिनेंट प्रिचर्ड बैंगलोर से गुजरने वाले थे इत्यादि। इन सभी में लॉटरी टिकिट ही दांव पर लगती थी। इससे उस समय की लॉटरी की लोकप्रियता का पता चलता है। लॉटरी से प्राप्त आय का उपयोग धर्मार्थ कार्यों के लिए किया जाता था। पुरुष शरणस्थली का प्रेस, जहां फाल्कोनर और कैम्पबेल की डायरियां मुद्रित हुई थी, उसे भी लॉटरी से सहायता मिली। मद्रास के गवर्नर, सर चार्ल्स एडवर्ड ट्रेवेल्यन ने अपने एक पत्र में लोक सुविधाओं के कार्यों में वित्तीय सहायता के लिए राज्य संचालित लॉटरी की उपयोगिता का जिक्र किया है। मद्रास में लॉटरी से प्राप्त धन का उपयोग प्रसिद्ध मूर मार्केट के निर्माण के लिए (जो बाद में अग्निकांड में नष्ट हो गया), विक्टोरिया पब्लिक हॉल, रिपन बिल्डिंग और सरकारी संग्रहालय के लिए किया गया।

समिति द्वारा संचालित लॉटरियों के अतिरिक्त विभिन्न लोक संस्थाओं को उनकी परियोजनाओं के लिए धन एकत्रित करने के उद्‌देश्य से अनुमति प्रदान की गई। ऐसी ही चिंगलपेट जिले में सेंट जोसफ अनाथालय की सहायतार्थ रैफल लॉटरी चलाई गई। यह रैफल इस संस्था के लिए सन् 1920 से चलाई जा रही थी। पहले दस पुरस्कारों में 2000 रुपये की मोटर कार, 500 रुपये की हीरे की अंगूठी से लेकर 20 रुपये के मूल्य की वस्तुएं शामिल थी। दो रुपये से दस रुपये तक के मूल्यों के 990 पुरस्कार रखे गए। पुरस्कार विजेता चाहे तो पुरस्कार के एवज में नगद राशि भी ले सकता था।

सरकार निजी लॉटरियों को केवल सार्थक व प्रशंसनीय कार्यों के लिए ही अनुमति देती थी। एक डॉ. कृष्णा रेड्डी ने कड़प्पा जिले में भूमि खरीदी। जब पारिवारिक कलह के कारण उसे बेचने पर प्रतिबंध लगाया गया, तो उन्होंने भूमि को विभिन्न भू–खंडों में बांटकर लॉटरी

के द्वारा विक्रय करने की अनुमति मांगी जिसे शासन ने स्वीकृति देने से इंकार कर दिया।

मंदिर जीर्णोद्धार के लिए लॉटरी :

तमिलनाडु के इतिहास मे धार्मिक उद्‌देश्यों के लिए लॉटरी संचालन के प्रकरण मिलते हैं। सुचीन्द्रम में धानुमलयम मंदिर जंगली वनस्पतियों से आच्छादित हो गया था। त्रावणकोर के राजा श्री अयिलियम ने उसके जीर्णोद्धार का कार्य सन् 1875 में प्रारंभ करवाया। बहुत जल्दी धन समस्या आड़े आ गई। शेष कार्य पर 70,000 रुपये का व्यय अनुमानित था। राजा के परामर्शदाता, वाइकोम के ब्रम्ह श्री पाचू मूथाथु ने धन उगाही के लिए लॉटरी चलाने की सलाह दी। राजा ने लॉटरी टिकिट छापने का आदेश दिया। उस समय जब सोने की कीमत तीन रुपये प्रति सावरेन थी, प्रत्येक टिकिट का मूल्य एक रुपये रखा गया। योजना लोकप्रिय हुई और उससे 40,000 रुपये की आय अर्जित की गई। जो कुछ कमी थी उसकी शासन द्वारा पूर्ति की गई और जीर्णोद्धार का काम संपन्न हुआ। लॉटरी की आय से 13,350 सावरेन खरीदी जा सकती थी। आज के सोने की बुलियन 9,000 रुपये प्रति सावरेन की दर से आज की कुल आय 12,01,50,000 रुपये हुई होती।

निर्णयन में लॉटरी की उपयोगिता :

सार्थक कार्यों के अतिरिक्त समुचित निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी लॉटरी सहायक होती है। स्थानीय प्रशासनिक संस्थाओं, जैसे पंचायत या नगरपालिका के प्रतिनिधियों के चुनाव में जन प्रतिस्पर्धियों को जब बराबर–बराबर मत मिलते हैं, तब किसी एक व्यक्ति के चुनाव के लिए लॉट डलवाए जाते है। यात्रा उत्सव और माघ पंचमी के समय जब बहुत से आवेदकों के मध्य आबंटन होता है, तब गोवा के श्री शांतादुर्गा देवी मंदिर के अतिथिगृह के फ्लेटों का आबंटन लॉटरी के द्वारा किया जाता है। फरवरी 2004 में मध्यप्रदेश शासन ने शराब दुकानों की नीलामी बंद करके लॉटरी निधि से उनका आबंटन किया जिससे शराब माफिया का खात्मा कर दिया गया।

स्वातंत्रोत्तर लॉटरी :

स्वतंत्रता के बाद केरल प्रथम राज्य था जहां प्रादेशिक लॉटरी प्रारंभ की गई हालांकि निजी लॉटरियां चल रही थी। केरल के बाद अन्य राज्यों ने भी अपने–अपने कारणों से अभिप्रेरित हो लॉटरी की स्थापना की। कुछ राज्यों ने अपने वित्तीय संसाधनों को मजबूत करने, कुछ ने सट्टा और मटका जैसे अवैध जुआ पर अंकुश लगाने और कुछ ने लोक कल्याण के लिए धन संचय करने के उद्देश्य से लॉटरी की स्थापना की। सत्तर के दशक में तमिलनाडु शासन ने अन्धत्व व भिक्षावृत्ति निवारण के लिए लॉटरी प्रारंभ की। भारत–पाक युद्ध के बाद तमिलनाडु ने सुरक्षा निधि लॉटरी भी स्थापित की। राजस्थान शासन ने भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के सामाजिक परियोजनाओं के क्रियान्वयन हेतु लॉटरी संचालित की। लॉटरी चलाने के कारण जो भी रहे हों, लॉटरी लोकप्रिय हो गई। भारत में राज्य प्रायोजित लॉटरी संचालनालय लॉटरी द्वारा चलित होती है जो सामान्यतः वित्त मंत्रालय के अधीन होती है।

लॉटरी संचालन के कार्यकलाप :

सबसे पहले लॉटरी टिकिट का डिज़ाइन तैयार किया जाता है, मुद्रण के क्रमांक डाले जाते हैं, प्रेस में कागज़ की आपूर्ति की जाती है, फिर टिकिटों की रसीद, उनका विक्रय, परिणाम निकालना, विजेताओं के टिकिट लेना व उन्हें सत्यापन के लिए मुद्रक प्रेस भेजना, पुरस्कार राशि का भुगतान करना, निर्धारित समयावधि मे परिणाम का लेखा–जोखा कर उसे बन्द करना, विक्रय उपरान्त बची टिकिटों का पुनर्चक्रण कर उनकी लुग्दी बनाई जाती है। जिन विजेताओं ने जीती राशि का दावा प्रस्तुत नहीं किया, उस धन राशि को वापिस सरकारी कोष में जमा करना और लेखे का समायोजन जैसे कार्य किए जाते हैं।

भारत में लॉटरी की तीन श्रेणियां हैं :

1. केन्द्र द्वारा संचालित – वर्तमान में केन्द्रीय शासन द्वारा कोई लॉटरी प्रचलित नहीं है।

2. राज्य शासन द्वारा प्रचलित लॉटरी

3. राज्य/केन्द्रीय शासन द्वारा प्राधिकृत निजी लॉटरी

प्रथम दो श्रेणियां भारतीय संविधान की संघीय तालिका की प्रविष्टी क्रमांक 40 में शामिल की गई हैं। निजी लॉटरियां राज्य सूची की प्रविष्टी क्रमांक 34 में सम्मिलित हैं। धर्मार्थ व स्वास्थ्य सेवा की लाटरियां इसी तीसरी श्रेणी में शामिल हैं। जो लॉटरियां राज्य द्वारा प्राधिकृत नहीं है, उन्हें वर्ष 1870 से भारतीय दंड संहिता की धारा 294(अ) के अंतर्गत अपराध माना जाता है।

आर.एम.डी.सी. केस के मुकदमे में उच्चतम न्यायालय ने अनुच्छेद 19(1)(जी) के अंतर्गत लॉटरी को व्यवसाय का दर्जा देने से इन्कार कर दिया। इसलिए लॉटरी एक विशेष प्रकार की आर्थिक गतिविधि है।

1. राजकीय नियम :

लॉटरी को खेल मानने के लिए केन्द्रीय व राज्य सरकारों ने अब कुछ नियम बनाए हैं। सन् 1998 तक राज्य लॉटरियों के लिए कोई कानून नहीं थे और राज्य सरकारें अनुच्छेद 258(1) के अंतर्गत राष्ट्रपति से आदेश प्राप्त कर लॉटरियां चलाती थी। उच्चतम न्यायालय ने एच. अनराज बनाम महाराष्ट्र राज्य प्रकरण में यह स्थापित किया कि संसद ने राज्य लॉटरियों के बारे में कोई भी कानून नहीं बनाया है। अतः राज्य सरकारों को अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है। अप्रैल सन् 1994 में सुप्रीम कोर्ट ने कुछ अधोलिखित विनिर्देशन राज्य लॉटरियों के संचालन हेतु दिए हैं जिनका चलन अधिकांश राज्य सरकारों की कार्य प्रणाली में था। वे इस प्रकार हैं :

(अ) विभिन्न राज्य सरकारों का प्रतीकचिन्ह और लोगो (logo) टिकिट पर छपा हुआ होना चाहिए।

(ब) टिकिट का विक्रय राज्य सरकार द्वारा ही होना चाहिए। वह किसी एक वितरक/एक विक्रय एजेंट या कई एजेंटों के द्वारा विक्रय कर सकती है।

(स) टिकिट विक्रय से प्राप्त आय सरकारी कोष में जमा होनी चाहिए।

(द) परिणाम निकालने की प्रक्रिया राज्य शासन द्वारा संचालित होनी चाहिए।

(इ) जिस पुरस्कार के लिए कोई दावा पेश ना हुआ हो, उसकी धनराशि वापिस शासकीय कोष में जानी चाहिए।

ये प्रावधान लॉटरी के नियंत्रण के अधिनियम सन् 1998 में शामिल किए गए हैं जिनकी संवैधानिक वैधता को उच्चतम न्यायालय द्वारा स्वीकृति दी गई है।

2. लॉटरी का वितरण :

राज्य सरकारों ने वितरक/एजेंट बनाने के लिए कुछ शर्तो को अनुबद्ध किया है जो अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग होती है। इन शर्तों में आयु सीमा, निवास स्थल, टिकिटों की न्यूनतम संख्या जो निर्गमित की जाएंगी आदि शामिल होती है। एजेंटों को टिकिट के आमुख मूल्य पर कमीशन प्राप्त करने की पात्रता है, कमीशन अलग–अलग राज्यों में 5 से 40 प्रतिशत तक हो सकता है। जब एजेंट कोषालय से टिकिट क्रय करता है तो वह अपना कमीशन काट कर बाकी राशि का भुगतान करता है। यदि उसके द्वारा विक्रय की गई किसी टिकिट पर पुरस्कार मिलता है, तो पुरस्कार राशि का निश्चित प्रतिशत, बोनस के रूप में भी प्राप्त करने की उसे पात्रता होती है।

3. टिकिटों का मुद्रण :

टिकिट छापने का कार्य किसी व्यक्ति या कंपनी को निविदा जारी कर सौंपा जाता है। मुद्रण में टिकिट की डिज़ाइन और निर्गम शामिल होता है। ऐसे निविदाकर्ता जो मुद्रण के लिए निविदा देते हैं, उनका नाम प्रतिभूति मुद्रकों की तालिका में शामिल होना चाहिए। निविदा के दो भाग होते हैं – वित्तीय और तकनीकी। तकनीकी निविदा में निविदा

प्रस्तुत करने वाले को कंपनी के ब्यौरे जैसे कर्मचारियों का पदानुक्रम, कर्मचारियों की संख्या और प्रेस की मुद्रण क्षमता आदि देने पड़ते हैं। राज्य के लॉटरी संचालनालय के एक दल द्वारा प्रतिभूति प्रेस का निरीक्षण किया जाता है ताकि सुरक्षा पहलुओं की जानकारी दी जा सके। मुद्रण के दौरान अनेक सुरक्षात्मक उपाय किए जाते हैं ताकि लॉटरी टिकिटों में हेराफेरी या द्विरावृति ना हो सके। शासन के द्वारा जो सहमति पत्र लिखवाया जाता है, उसमें शासन मुद्रक से टिकिटों का बीमा भी करवाता है। टिकिटों को हस्तांरित करने के बाद शेष दोषपूर्ण, कटीफटी टिकिटों को संचालनालय के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में शासन द्वारा अनुमोदित विधि से नष्ट कर दिया जाता है।

4. पुरस्कार संरचना :

टिकिटें छः अंकों की संख्याओं में विशिष्ट श्रृंखला से निर्गमित की जाती है। यह श्रृंखला वर्णानुक्रम में प्रस्तुत की जाती है। इनकी संख्या 000000 से 999999 तक दस लाख टिकिटों प्रति श्रृंखला में होती है।

पुरस्कार विजेताओं को परिणाम निकालने की प्रक्रिया से चुना जाता है। अविक्रित टिकिटों पर पुरस्कार की पात्रता नहीं होती। यदि निकाल में किसी अविक्रित टिकिट का नंबर आ जाए तो परिणाम की प्रक्रिया को उस समय तक दोहराया जाता है जब तक कि विक्रित टिकिट का नंबर नहीं निकलता। परंतु कभी–कभी अविक्रित टिकिट भी परिणाम में शामिल हो जाता है, इसे फुटकर विक्रेता की टिकिट मान लिया जाता है क्योंकि उसने पहले से ही उस टिकिट की राशि का भुगतान कर दिया है। एक टिकिट पर किसी विशेष खेल में केवल एक पुरस्कार की पात्रता होती है। यदि टिकिट एक से अधिक पुरस्कार के लिए निकाली गई है, तो टिकिट धारक को सर्वाधिक राशि का पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार छः अंकों की संख्या पर दिया जाता है, यथा के.पी 825619। कुछ खेलों में उसी अंक पर, परंतु अलग श्रृंखला पर तीन सांत्वना पुरस्कार दिए जाते हैं, जैसे के.डी 825619 या के.एल 825619

या के.एफ 825619। सामान्य रूप से तीन द्वितीय पुरस्कार अलग–अलग श्रृंखला पर और छः अंकों की संख्यांक पर भी दी जाती है। इसी तरह की प्रक्रिया तीसरे पुरस्कार के लिए होगी जिनकी संख्या तीन या पांच हो सकती है। चौथे और पांचवे पुरस्कार के लिए जीत के अवसर बढ़ जाते हैं, क्योंकि केवल अंतिम पांच आंकडों का ही बगैर श्रृंखला के संज्ञान लिया जाता है। दूसरे पुरस्कार चार और तीन संख्या वाले नंबरों के निकाल पर दिए जाते हैं। परिणाम शासकीय राजपत्र और कुछ स्थानीय भाषाई समाचार पत्रों में प्रकाशित किए जाते हैं।

5. पुरस्कारों पर दावा :

5000 रुपये तक की पुरस्कार राशि एजेंट से या जिला लॉटरी कार्यालय से टिकिट समर्पण करने पर ली जा सकती है। पुरस्कार का दावा परिणाम की तारीख से तीस दिनों के अंदर प्रस्तुत करना होता है। अगर पुरस्कार राशि इससे अधिक हो, तो राज्य लॉटरी संचालक से उसका दावा करने के लिए एक आवेदन पत्र प्रस्तुत करना आवश्यक है। भारत में केवल 18 प्रतिशत लोग ही लॉटरी के खेल में शामिल होते हैं। उनमें से भी केवल 8 प्रतिशत नियमित रूप से लॉटरी खेलते हैं। भारतीय लॉटरी बाज़ार में अधिकाधिक कागज़ लॉटरी ही प्रचलन में है। केन्द्रीय शासन ने देश की सभी संचालित लॉटरियों पर लॉटरी नियंत्रण अधिनियम 1998 को निरस्त कर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया था। इस निर्णय के विरुद्ध कई राज्यों ने प्रतिवाद दिया कि ऐसा करने पर अन्य नुकसानों के अलावा मुख्यतः उन्हें लॉटरी से प्राप्त होने वाली आय और रोज़गार के अवसर देने की सुविधा पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। इसलिए राज्य शासन और लॉटरी के प्रतिनिधियों ने लॉटरी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के बजाए उसका नियमितीकरण और उसे व्यवस्थित करने की मांग की है।

gpl lottery ka khel.indd 72 11/15/2007 4:06:57 PM

11. भारतीय लॉटरी के वित्तीय पहलू

लॉटरी व्यवसाय में टिकिट विक्रय और पुरस्कार राशि के वितरण के अतिरिक्त अन्य वित्तीय पहलू भी होते हैं।

शासन को आय :

जब कोई राज्य सरकार लॉटरी संचालन के लिए निविदा आमंत्रित करती है, तब दावेदार को विनिर्दिष्ट धरोहर राशि (ई.एम.डी.) जमा करनी पड़ती है, जो वापसी योग्य होती है। सफल निविदाकर्ता को सुनिश्चित सुरक्षा निधि भी जमा करनी पड़ती है। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि संचालक सहमति–अवधि के पहले ही अध–बीच–काम न छोड़ दे, ऐसा करने पर सुरक्षा निधि जप्त कर ली जाती है। क्योंकि ये राशियां वापिसी योग्य होती हैं, शासन को केवल ब्याज भर का लाभ होता है। आय का बड़ा हिस्सा तो शासन को केवल टिकिटों के विक्रय से ही मिलता है। निविदाकर्ता न्यूनतम आय की गारंटी भी प्रस्तुत करता है। उदाहरणार्थ, एक ऑनलाइन लॉटरी संचालक ने पांच वर्षो की अवधि में शासकीय कोष को लगभग 1100 करोड़ रुपये की क्रमशः आय का वादा किया था। इसे पांच वर्ष की अनुज्ञा शुल्क (लाइसेन्स फीस) भी कहा जाता है। एक राज्य संचालक ने सात वर्षो की अवधि में 1141 करोड़ रुपये या कुल व्यवसाय का 17 प्रतिशत आय का प्रस्ताव दिया था। टिकिट विक्रय से प्राप्त आय के अतिरिक्त शासन को संचालक द्वारा देय विक्रय–कर से प्राप्त आय भी मिलती हैं, जो अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग होती है। पश्चिमी बंगाल में विक्रय–कर स्लैब प्रणाली से लगाया जाता है। प्रत्येक राज्य की लॉटरी जनित आय भी

उसकी स्वयं की लॉटरी की रूपरेखा और दूसरे राज्यों की योजना के अनुसार अलग–अलग होती है। उदाहरण के लिए, केरल राज्य में वहां की लॉटरी टिकिट की अपेक्षा मेघालय और नागालैंड की टिकिटों की मांग अधिक है। कारण यह है कि जहां केरल लगभग 50 प्रतिशत अदायगी करता है, दूसरे राज्य लगभग 80 प्रतिशत उच्चतर पुरस्कार की निकाय धन राशि पेश करते हैं। कागज़ लॉटरी की अपेक्षा ऑनलाइन लॉटरी से अधिक आय प्राप्त होती है।

लॉटरी संचालक की वित्तिय स्थिति :

जमा राशि के अलावा संचालक को शासन से खरीदी टिकिटों पर बैंक गारंटी भी देनी पड़ती है। चूंकि वह टिकिटों के विक्रय के बाद ही शासन को स्वत्वशुल्क (रॉयल्टी) देता है, इसलिए बैंक गारंटी से शासन के वित्तीय हित सुरक्षित रहते हैं।

इसके अतिरिक्त संचालक को आंतरिक ढांचे पर बड़ी राशि खर्च करनी पड़ती है। लॉटो खेल संचालित करने पर संचालक कंपनी को तीन सौ टर्मिनल स्थापित करने पर करीब 100 करोड़ रुपये खर्च करने पड़ते हैं। एक बार स्थापित करने पर अतिरिक्त टर्मिनल का मूल्य तुलनात्मक रूप से कम हो जाता है। उदाहरण के लिए, अतिरिक्त 1000 कंप्यूटर लगाने पर बाद में केवल 100 करोड़ रुपये का व्यय होगा।

एजेंट के वित्तीय पक्ष :

ऑनलाइन लॉटरी में जब कोई व्यक्ति किसी लॉटरी संचालक कंपनी का फुटकर टिकिट विक्रेता बनना चाहता है, तब उसे आवेदन के साथ एक निश्चित धनराशि जमा करनी होती है। जब कंपनी उस एजेंट के वित्तीय स्त्रोतों से आश्वस्त हो जाती है, वह उसके क्षेत्र में टर्मिनल और सॉफ्टवेयर स्थापित करती है। उसका कमीशन अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग होता है। यदि उसके द्वारा विक्रित टिकिटों में से किसी को पुरस्कार मिलता है, तो उसे प्रतिशतता कमीशन मिलता है। यह कागज़ लॉटरी व ऑनलाइन लॉटरी दोनों के लिए लागू होता है। दोनों ही स्थितियों में बोनस कमीशन का प्रतिशत विभिन्न राज्यों में अलग–अलग होता है।

12. भारतीय लॉटरी में कर संबंधी मामले

लॉटरी पर आयकर :

भारत में लॉटरी से प्राप्त पुरस्कार आयकर अधिनियम 1961 की धारा 56(2) के अंतर्गत कर योग्य है। कर–राशि सकल राशि में से काटी जाती है। यह सकल राशि आयकर की विशेष दर पर कर योग्य होती है जो वर्तमान में 30 प्रतिशत है एवं उसपर आयकर अधिनियम 1961 की धारा 115 (बी बी) के अंतर्गत अधिभार भी लगता है।

स्त्रोत पर कर कटौती (टी.डी.एस.) :

लॉटरी के जिन पुरस्कारों पर 5000 रुपये से अधिक की प्राप्ति हो तब आयकर अधिनियम 1961 की धारा 194(बी) के अनुसार कर कटौती की जाती है।

– वार्षिक पुरस्कार योजना के प्रकरण में जहां पुरस्कार किश्तों में दिए जाते हैं, वहां पुरस्कार की प्रत्येक किश्त पर कर कटौती होती है।

– जहां पुरस्कार वस्तुओं के ही रूप में दिए जाते हैं, वहां पुरस्कार देने वाले एजेंट को पुरस्कार देने के पहले ही विजेता से टैक्स वसूली कर लेनी चाहिए। जहां आंशिक रूप से वस्तुओं से व आंशिक रूप नकद राशि से पुरस्कार दिए जाते हों, तब वहां दोनों के कुल मूल्य के आधार पर कर की वसूली की जाती है। यदि पुरस्कार की नगद राशि का अंश कर देने के लिए अपर्याप्त हो, तब उतनी शेष कर राशि, विजेता से वसूल करने के उपरान्त ही एजेन्ट को पुरस्कार देना चाहिए, अन्यथा उसे ही आयकर का भुगतान करना पड़ेगा।

1. वे प्रकरण जहां स्त्रोत पर कटौती (टी.डी.एस.) लागू नहीं होती :

- कराधान लॉटरी के एकल पुरस्कार पर लागू होता है, ना कि पूरे वित्त वर्ष के दौरान प्राप्त पुरस्कारों पर। यदि खिलाड़ी दो अलग–अलग अवसरों पर 5000 रुपये से कम राशि से पुरस्कृत होता है, जिसका योग निर्धारित राशि से यदि कम होता है, उदाहरणार्थ यदि वह अलग–अलग समय पर 3000 रुपये का पुरस्कार जीतता है, तब उस स्थिति में स्त्रोत पर आयकर की कटौती नहीं होगी।
- जिस पुरस्कृत नंबर पर दावा प्रस्तुत नहीं हुआ हो और/या पुरस्कार राशि वितरित ना की गई हो, तब भी स्त्रोत पर कटौती नहीं की जाएगी।
- जब लॉटरी विक्रेता या एजेंट को बोनस या कमीशन के रूप में आय होती है, तब उसे भी धारा 194(बी) के तहत कर–योग्य नहीं माना जाता।
- बची हुई वे टिकिटें जो नहीं बिकी हैं, उन पर अगर पुरस्कार मिले, तो वह एजेंट के व्यवसाय की आय है। वह लॉटरी का पुरस्कार नहीं है, इसलिए वह भी कर–योग्य नहीं होती।

2. लॉटरी टिकिट के विक्रय पर प्राप्त कमीशन पर स्त्रोत कटौती (टी.डी.एस.) :

यदि भुगतान की राशि एक हज़ार से अधिक हो, तो धारा 194(जी) के अंतर्गत लॉटरी के एजेंट या विक्रेता से स्त्रोत पर कटौती होगी। यह केवल एक कमीशन के संदर्भ में है, ना कि वित्तीय वर्ष के दौरान प्राप्त कुल कमीशन में।

यहां यह भी निर्दिष्ट किया जाना चाहिए कि स्त्रोत पर कर कटौती तभी होगी, जब एजेंट को वास्तव में कमीशन का भुगतान किया गया हो। यदि एजेंट ने शासन से लॉटरी टिकिट खरीदी और उसे कमीशन

के विरुद्ध, जो बाद में दिया जाता है, कोई डिस्काउंट या टिकिट क्रय के मूल्य में कमी की जाए, तब उस स्थिति में भी स्त्रोत पर आयकर नहीं काटा जाएगा।

सेवा कर :

हाल ही में भारत सरकार ने एजेंट को दिए जाने वाला कमीशन सेवा कर में शामिल कर लिया है, इसलिए उसके द्वारा प्राप्त कमीशन पर सेवा कर भी लगेगा। यह व्यवसाय लॉटरी टिकिट के क्रय और विक्रय के आधार पर चलता है, इसलिए टिकिट के क्रय व विक्रय पर सेवा कर नहीं लगाया जाता।

विक्रय कर/वैट :

वर्ष 2005 तक राज्य शासन कागज़ लॉटरी और ऑनलाइन लॉटरी दोनों के विक्रय पर, विक्रय कर लगाती रही जिसका प्रतिशत अलग–अलग होता था। वर्तमान में लॉटरी पर विक्रय कर नहीं लगता।

लॉटरी कर :

राज्य शासन ऑनलाइन व कागज़ लॉटरी पर कर संचय करते हैं, जिसका प्रतिशत हर राज्य में भिन्न–भिन्न होता है। केरल, महाराष्ट्र और पंजाब ऐसे राज्य हैं जो लॉटरी कर वसूलते हैं।

gpl lottery ka khel.indd 77 11/15/2007 4:06:58 PM

gpl lottery ka khel.indd 78 11/15/2007 4:06:58 PM

13. लॉटरी के कुशल संचालन के लिए

भारतीय लॉटरी व्यवसाय में लॉटरी संचालकों व संपूर्ण संचालन प्रक्रिया पर कुछ आरोप लगाए जाते हैं। यदि इन आरोपों में कहीं आंशिक सच्चाई भी होती, तो शासन को आय की काफी हानि होती है। यह स्थिति इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि इसके लिए कोई प्रभावी व्यवस्थापन का तंत्र अस्तित्व में नहीं है। इन अनियमितताओं को दूर करने के लिए लॉटरी का निषेध मात्र कोई उपाय नहीं है।

कुछ राज्य तो संचालकों से निश्चित लाभ राशि लेते हैं जो कभी–कभी निम्नतम 550 रुपये प्रति निकाल होता है, चाहे कितनी ही लॉटरी टिकिटें क्यों ना मुद्रित की गई हो। इस कारण अनेक लॉटरियां चल निकली हैं जिसका लाभ संचालक को ही मिलता है। शासन को लाभान्वित करने के लिए उन्हें मुद्रित टिकिटों के अंकित मूल्य पर निश्चित प्रतिशत संचालक से लेना चाहिए जो कम से कम 5 प्रतिशत होना चाहिए।

– इसी तरह राज्यों ने टिकिटों के मूल्यों या सकल व्यवसाय से निरपेक्ष निश्चित विक्रय कर आरोपित किया है। इससे शासकीय कोष में कोई खास वृद्धि नहीं होती बल्कि संचालक को ही लाभ पहुंचता है। अब विक्रय कर के स्थान पर लॉटरी कर लागू हो गया है, इसलिए लॉटरी कर की स्लैब प्रणाली को टिकिट विक्रय व्यवसाय राशि से जोड़ना चाहिए, ऐसा सुझाव है। उदाहरण के लिए, 40 लाख रुपये की टिकिट विक्रय से 40,000 रुपये लॉटरी कर का संचय किया जा सकता है। 40 लाख या 60 लाख रुपये

के विक्रय से 60,000 रुपये एकत्र किए जा सकते हैं।

- दूसरा पहलू यह है कि लॉटरी प्रतिबन्धित करने से उसके उन उद्‌देश्यों की पूर्ति नहीं होती जिनके लिए उसका निषेध किया गया हैं क्योंकि उसमें दूसरे राज्यों की लॉटरी प्रवेश कर जाती हैं। जिस टिकिट का मूल्य 11 रुपये होता है, उसे गैर कानूनी तरीके से 11.50 रुपये में खरीदा जाता है। लॉटरी लगाने वाला तो उस स्थिति में भी टिकिट खरीदता ही है। नुकसान उस राज्य सरकार को ही होता है क्योंकि उसे लॉटरी कर की आय नहीं प्राप्त होती।

- जब स्थानीय लॉटरी प्रतिबंधित की जाती है, तब लोग विदेशों के ऑनलाइन खेलों को अपनाने लगते है जिससे विदेशी विनिमय की हानि होती है।

- बहुधा लॉटरी योजना से राज्यों को उस तरह से लाभ नहीं होता जैसा होना चाहिए। ऐसा निविदा आमंत्रित करते समय या सहमति पत्र का मसौदा या प्रारूप तैयार करते समय अधिकारियों की लापरवाही के कारण होता है।

- कुछ राज्यों में शासन व संचालक के बीच के इकरारनामों में प्रति योजना की टिकिटों की संख्या का उल्लेख नहीं किया जाता। यदि राज्य शासन, टिकिटों की संख्या पर आधारित राजशुल्क (रॉयल्टी) लेता है, तो संचालक छोटी योजना की लॉटरी का चुनाव करते हुए न्यूनतम संख्या में टिकिटें मुद्रित करता है। यदि आवश्यक हुआ तो बाद में केवल पुरस्कार वहन करने वाली टिकिटों का मुद्रण करता है। ऐसी स्थिति में जो पुरस्कार खिलाड़ी को मिलना चाहिए था, वह संचालक को मिल जाता है। यदि राज्य शासन कोई निश्चित राशि का राजशुल्क लेता है, तब संचालक बड़े पैमाने की लॉटरी की योजना बनाता है और उतनी टिकिटें मुद्रित करता है जिनकी संख्या विक्रय के लिए चिन्हित टिकिटों से अधिक होती

हैं। उदाहरण के लिए, एक योजना के एक निकाल के लिए 56 लाख टिकिटें छपवाई गई, जबकि उपलब्ध बाज़ार में केवल 15 लाख टिकिटों के विक्रय की संभावना थी। इस अतिरिक्त मुद्रण का लाभ उसके बड़े पुरस्कार की संभावना के साथ संचालक को ही मिलता है।

– कभी–कभी सहमति पत्र में शासन और एकमात्र–विक्रय–एजेंट (एस.एस.ए.) के बीच वास्तविक लाभ की हिस्सेदारी की शर्तो का उल्लेख नहीं होता है जिससे शासन को हानि पहुंचती है।

– किसी विशेष प्रकरण में जहां शासन ने निर्देश दिया था कि टिकिटों के अंकित मूल्य का 91 प्रतिशत पुरस्कार राशि में दिया जाना चाहिए, वहां केवल 78 प्रतिशत राशि ही वितरित की गई।

– पुरस्कार वितरण के समय आयकर के अलावा अन्य कोई भी कटौती नहीं की जानी चाहिए, परंतु एकमात्र–विक्रय–एजेंट अतिरिक्त राशि भी काट लेते हैं, जिससे उनके आकस्मिक व्यय की पूर्ति हो सके जो 10 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तक हो सकती है। बहुत से खिलाड़ियों को इसकी जानकारी नहीं होती और उनकी पुरस्कार राशि का छोटा अंश इसमें चला जाता है।

– कभी–कभी एकमात्र–विक्रेता–एजेंट शासन से अनुमति लेकर परिणाम निरस्त कर देते हैं। परंतु शासन इसका सत्यापन नहीं करता कि टिकिट बेची भी गई या नहीं। यदि टिकिटें बेची गई तो एकमात्र–विक्रेता–एजेंट विक्रय आय की पूरी राशि ले लेता है और हानि खिलाड़ी और शासन दोनों की होती है। ऐसे भी प्रकरण हुए है जहां यह धन राशि असामाजिक लोगों के हाथ चली गई है।

– सहमति पत्र में संचालक द्वारा पुरस्कार राशि या राजशुल्क (रॉयल्टी) शासकीय कोष में निश्चित अवधि तक नहीं जमा की जाने पर उसके ऊपर लगने वाले जुर्माने या ब्याज़ का उल्लेख भी नहीं होता है।

- लॉटरी खेलने वाले को भ्रमित करने का एक और तरीका है कि परिणाम घोषित होने के दिन उसे गलत संख्यांक के टिकिट निर्गमित किया जाए और कुछ दिन बाद उसका संशोधन पत्र निकाला जाए। जो वास्तव में पुरस्कृत है, वह भ्रमित होकर अपनी टिकिटें फेंक देता है। वितरक जिन टिकिटों पर पुरस्कार का दावा प्रस्तुत नहीं किया गया, उनकी दूसरी प्रति तैयार कर पुरस्कार का दावा कर लेता है।
- ऐसी शिकायतें मिली हैं जहां एजेंटों ने अविक्रित टिकिट पर पुरस्कार घोषित करने या मूल परिणाम बदलने के लिए अधिकारियों को प्रभावित किया है।
- कुछ निजी मनोरंजन व्यवसाय में रत एजेंसी ग्राहकों को कैशकार्ड बेचती है, इस निर्देश के साथ कि उनका उपयोग विशेष फुटकर विक्रेता से सामान्य खरीदी के समय किया जा सकता है, जब कि वास्तव में उनका उपयोग लॉटरी बेचने के लिए किया जाता हैं। यहां भी शासन को हानि होती है।

उपर्युक्त आरोपों को दृष्टिगत करते हुए सरकार की ओर से व्यवस्थित नियमन की आवश्यकता है जिससे शासन एवं व्यवसाय को दीर्घकालीन लाभ प्राप्त होगा। इन समस्याओं के निराकरण हेतु नियमन की किसी निकाय की स्थापना केवल लॉटरी व्यवसाय के लिए एस.ई.बी. आई. और टी.आर.ए.आई. के प्रतिमान पर की जानी चाहिए।

14. लॉटरी खेलने वाले का संरक्षण

यद्यपि लॉटरी से शासन को अच्छी आय होती है, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि खिलाड़ियों को सभी स्थितियों में पर्याप्त रूप से संरक्षण मिले। इस संरक्षण की आवश्यकता विभिन्न कारणों से उत्पन्न होती है।

लॉटरी संचालक अपने विभिन्न खेल योजनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विज्ञापन देते हैं। **ऐसे विज्ञापनों में यह संदेश जाना चाहिए कि लॉटरी एक तरह का मनोरंजन है, आय का साधन या रोज़गार का विकल्प नहीं, जैसा कि कुछ देशों ने किया है।** यह विशेषतः उस समय होता है जब निजी संचालक लॉटरी चलाते है। ब्रिटेन की नेशनल लॉटरी ने कुछ मार्ग निर्देश बनाए हैं जिनसे खिलाड़ी को संरक्षण मिलता है। उनका अनुमोदन करने की आवश्यकता है। ब्रिटेन के बेटिंग एंड गेमिंग एक्ट ऑफ सन् 1960 में कहा गया है कि लॉटरी के खेल के अवसर की वहीं अनुमति दी जानी चाहिए जहां वे अनुरूपण या नकल ना होने की मांग को संतुष्ट करते हों। विज्ञापन का संहिता (कोड) होता है जिसमें विज्ञापन की शैली और विषय वस्तु के प्रतिमानों का, टिकिट डिज़ाइन, लक्ष्य के श्रोता आदि का उल्लेख होता हैं। **इसलिए लॉटरी की प्रायोजना आर्थिक कठिनाईयों के समाधान के रूप में नहीं की जानी चाहिए। कागज़ लॉटरी बेचने वाले देशों में वहां के फुटकर विक्रय केन्द्र और ऑनलाइन खेल के केन्द्रों में वैधानिक चेतावनी होनी चाहिए।**

कागज़ और ऑनलाइन लॉटरी के विक्रय केन्द्रों पर जानकारी के

पर्चे होने चाहिए जो हर प्रकार की लॉटरी के लिए विस्तारपूर्वक खेलने की विधि, पुरस्कार की संरचना और विजेता होने की संभावना प्रदर्शित करें। संभावना के तत्व को रेखांकित करते हुए यह संदेश स्पष्ट रूप से दिया जाए कि खिलाड़ी केवल पुरस्कार राशि मात्र से आकर्षित होकर भुलावे में ना आए। सामान्य तौर पर वे योजनाएं जहां पुरस्कार की राशि बड़ी होती है, उसे जीतने के अवसर कम हो जाते हैं। अमरीका में टिकिटों में ही जीत के अवसरों का उल्लेख होता है।

शासन को टिकिटों पर यह भी छापना चाहिए कि पुरस्कार राशि में से आयकर के अलावा और कोई कर नहीं काटा जाएगा ताकि खिलाड़ी को इसकी पूर्व जानकारी रहे।

दूसरा पहलू बहुधा सामाजिक कार्यकर्ताओं और लॉटरी विरोधी संगठनों के द्वारा उठाया गया है कि एकाएक धन प्राप्ति के कारण कौन सी हानियां होती हैं। ऐसे जैकपॉट अक्सर निम्न और मध्य वर्ग के समूहों के साथ होता है जिन्हें बड़ी पुरस्कार राशि एकाएक मिल जाती है। इससे उनके सामाजिक स्तर में होने वाले परिवर्तन और सूचना माध्यमों से प्राप्त ख्याति से वे स्वयं को समायोजित नहीं कर पाते। विदेशों से ऐसे उदाहरणों की जानकारी मिली है जहां इस प्राप्त जैकपॉट संपदा के कारण परिवार टूट गए हैं। इसका समाधान यही है कि सकल राशि एक साथ ने देकर किश्तों में दी जाए। अमरीका में आजकल कुछ लॉटरी योजनाओं में पुरस्कार राशि एक बार में विजेता के हाथों ना जाकर कुछ वर्षों में धीरे–धीरे दी जाती है। यद्यपि यह वार्षिकी प्रावधान वर्तमान में ऐच्छिक है, परंतु इसे अनिवार्य किया जा सकता है।

लॉटरी की योजना ऐसी हो जिसमें खिलाड़ियों की अत्यधिक अथवा अनियंत्रित भागीदारी ना हो। खिलाड़ी अक्सर पुरस्कार राशि की विशालता से प्रभावित होता है, ना कि विजेता बनने की संभावना से। मनोवैज्ञानिकों के पास के साक्ष्य बताते हैं कि लॉटरी क्रेता अपने विजेता होने के अवसरों को अति–अनुमानित या व्यक्तिगत खतरों का आकलन कम कर लेते

हैं और इस वजह से भी अत्यधिक खेल होते रहते हैं। ऐसा भारत में एकल अंकीय लॉटरी और खुरच लॉटरी के संदर्भ में हुआ है, और तब से उन्हें प्रतिबंधित कर दिया गया है। इन्हीं कारणों से लॉटरी के त्वरित खेल ब्रिटेन में समय के अंतराल पर खिलाए जाते है। वहां उच्च संचालक को अधिकार होता है कि वह उन खेलों पर रोक लगा दे जो व्यक्तियों को अत्यधिक भागीदारी के अतिरेक से प्रोत्साहित करते हैं। यद्यपि ब्रिटेन में खिलाड़ी के व्यवहार और खर्च करने की विधि का अध्ययन किया गया है, मगर वहां भी उन खिलाड़ियों पर शोध नहीं हुआ है जो लॉटरी के खेल में अत्यधिक संलिप्त रहते हैं।

पुरस्कार राशि को भी सीमित करने की आवश्यकता है। ब्रिटेन में पाया गया है कि जहां पुरस्कार राशि बड़ी है, वहां लॉटरी के खिलाड़ियों की संख्या में भी 62 प्रतिशत से 74 प्रतिशत तक का इज़ाफा हुआ है। अध्ययन से यह भी जाहिर हुआ हैं कि जहां पुरस्कार राशि बहुत बड़ी हो, वहां खिलाड़ी अपने आर्थिक, सीमित साधनों के बाहर जाकर टिकिटों पर व्यय करते हैं। परंतु यदि पुरस्कार राशि कम कर दी जाए, तब उससे शासन को आय की हानि होती है। इसलिए पुरस्कार राशि अनुकूल हो, न कम न ज्यादा जिससे कि खिलाड़ी की खेल में संलिप्तता ना बढ़े और साथ ही शासन को अच्छी आय भी मिल सके।

सभी देशों ने पुरस्कार राशि को प्राप्त करने के दावे और उसके वितरण के लिए समय सीमा निर्धारित की है। परंतु कुछ प्रकरणों में संचालक इस सीमा के अंदर भुगतान नहीं करते। इससे विजेता को ब्याज़ की हानि उठानी पड़ती है और यह हानि बड़े पारितोषकों में और भी बढ़ जाती है। संचालक को तो ब्याज़ के रूप में आय प्राप्त हो ही जाती है।

नाबालिगों को लॉटरी का लक्ष्य नहीं बनाना चाहिए। प्रत्येक देश में टिकिट क्रेताओं के लिए न्यूनतम आयु निर्धारित की गई है। भारत में महाराष्ट्र शासन ने 18 वर्ष की न्यूनतम आयु निर्धारित की हैं। यही

न्यूनतम आयु अधिकांश देशों में रखी गई है। ब्रिटेन में यह न्यूनतम आयु 16 वर्ष की है। मलेशिया सहित कुछ देशों में यह सीमा 21 वर्ष की है। फिनलैंड़ में इसे घटाकर 15 वर्ष कर दिया गया है। केनेडा के ब्रिटिश कोलंबिया और अमरीका के नेब्रास्का में यह आयु सीमा 19 वर्ष की है। इसके बावजूद नाबालिग लोग लॉटरी में भाग लेते हैं। उन्हें यह आदत अक्सर अपने माता–पिता से मिलती है। इसीलिए सिंगापुर में माता–पिता को लॉटरी के खेल में बच्चों को साथ लाने की मनाही है, ना वे उनकी उपस्थिति में खेल सकते हैं और ना ही वे बच्चों को अंक का चुनाव करने के लिए कह सकते हैं। लॉटरी विक्रेता को यदि खिलाड़ी की आयु के बारे में शंका हो, तब वह उससे उसका पहचान पत्र मांगने के लिए अधिकृत है। यदि कोई विक्रेता नाबालिग को खेल की अनुमति दे, तो सिंगापुर पूल लॉटरी उस पर जुर्माना लगाती है या उसका लाइसेंस निरस्त कर देती है।

ब्रिटेन के 'ट्रेडिंग स्टेंडर्ड' विभाग को विभिन्न उत्पादों की खरीद पर आयु परीक्षण करने का अधिकार है। इसके लिए विभाग को 16 वर्ष की आयु से कम बच्चों का उपयोग करने की अनुमति है। ब्रिटेन में लॉटरी खेलने के लिए यह आयु वैध मानी जाती है। यदि विक्रेता इससे कम आयु के बच्चों को टिकिटों का विक्रय करता है, तो उसके संचालन को कम से कम तीन माह के लिए निलंबित कर दिया जाता है। इसी कारण अब तक 118 टर्मिनल हटाए जा चुके हैं। ब्रिटेन के लॉटरी संचालकों ने अपना स्वयं का परीक्षण कार्यक्रम विकसित किया है जिसे ऑपरेशन चाइल्ड कहते हैं।

ब्रिटेन ने 'गेम डिज़ाइन प्रोटोकॉल' नामक एक डिज़ाइन उपकरण समाज वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और बाज़ार शोधकर्ताओं की सहायता से बनाया है। इस उपकरण के द्वारा पता किया जाता है कि किस खेल में अति संवेदनशील, असुरक्षित बाल समूहों के लिए कितनी अंतर्निहित अधिक/मध्यम/कम हानि की संभावना होती है। यह अति संवेदनशील असुरक्षित बाल समूह, आर्थिक रूप से कमज़ोर और आसानी से लॉटरी की लत में

संलिप्त होने वाले अवयस्कों का समूह होता है। इस उपकरण में खिलाड़ी के व्यवहार का इच्छित नियत व्यवहार के विरुद्ध नाप लिया जाता हैं। इस कारण से नए खेलों को एक–समय–में–एक के सिद्धांत पर बाज़ार में उतारा जाता हैं। ब्रिटेन में 'ऑप्टीमम' नामक एक कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है जो कि मूल रूप से भू–जनसांख्यिकी उपकरण है। विक्रय केन्द्र की स्थिति, यानि कि वह वाणिज्यिक जिले में है या अल्प आय समूह के मध्य स्थित है, इसके आधार पर विज्ञापन की व्यूह रचना की जाती है।

अमरीका में सामान्यतः लॉटरी संचालक भारी पुरस्कार राशि के विजेता को वित्तीय और विधिक परामर्श भी देते है। ब्रिटेन में 50,000 पौंड से अधिक जीतने वालों को वित्तीय व विधिक विषयों पर विस्तृत जानकारी दी जाती है। यदि पुरस्कार राशि 250,000 है, वहां स्वतंत्र वित्तीय और न्यायिक सलाहकारों की सेवाएं दी जाती हैं। इन उपायों से सुनिश्चित हो जाता है कि लॉटरी खिलाड़ी जैकपॉट द्वारा इस एकाएक प्राप्त होने वाली संपत्ति का आनन्द के साथ उपभोग करें और खुशी से उसका दम ना घुट जाए।

लॉटरी काण्डों में फंसने के दुष्परिणाम से ग्राहकों को बचाने के लिए अधिकांश संचालक जागरूकता अभियान चलाते हैं। कॉलोरेडो लॉटरी अपने ग्राहकों को **अलर्ट (ALERT)** यानि सावधान के लघु शब्द द्वारा निवेदन करती है ताकि उनके हित सुरक्षित रहें। इस शब्द का प्रत्येक अक्षर विस्तारित होने पर ऐसा बनता है।

(Ask Questions) सवाल पूछिए

(Listen Carefully) ध्यान से सुनिए

(Educate Yourself) स्वयं को शिक्षित कीजिए

(Refuse to be pressured) दबाव में मत आइए

(Tell the Authorities) अधिकारियों को बताइए

15. सुरक्षात्मक उपाय

सभी देश ऐसे अनेकों उपाय अपनाते हैं यह सुनिश्चित करने के लिए कि टिकिटों के साथ कोई हेराफेरी ना हो सके, परिणामों का निकाल निर्धारित प्रक्रिया से हो और मशीनें पूर्णतः दोषरहित हों।

टिकिटों के मुद्रण के लिए सुरक्षात्मक कदम :

भारत में केवल वही मुद्रक टिकिट मुद्रण का कार्य कर सकतें हैं जो प्रतिभूति मुद्रक हों या जिन्हें रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया या इण्डियन बैंक एसोसिएशन ने अनुमोदित किया हो। लॉटरी टिकिटों पर श्रृंखला या संख्यांक छपने के स्थान पर भीतर तक प्रवेश करने वाली सुरक्षात्मक स्याही का उपयोग होता हैं।

राज्य शासन टिकिटों की प्रामाणिकता के लिए अपना प्रतीक चिन्ह (लोगो) और वैधानिक शक्ति प्राप्त शासकीय अधिकारी के हस्ताक्षर की प्रतिकृति मुद्रित करती है। साथ ही, उन पर विशेष प्रतिभूति चिन्ह भी अंकित किए जाते हैं जिन्हें समय–समय पर परिवर्तित कर दिया जाता हैं ताकि उनकी नकल ना की जा सकें। मुद्रक को टिकिटों का बीमा भी करना पड़ता है। मुद्रण कार्य की समाप्ति के बाद उपयोग में लाई गई सभी प्लेटों को साफ कर दिया जाता है। बची हुई रद्‌दी व दोषपूर्ण टिकिटों को राज्य लॉटरी संचालनालय के अधिकारियों की उपस्थिति में नष्ट कर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त राज्य शासन नकद राशि या बैंक गारंटी की सुरक्षा जमानत भी लेती है ताकि टिकिटों का मुद्रण सुनिश्चित एवं सुरक्षित रूप से हो सके।

चीन में बी.ज़ेड.पी. (Beijin Zhongcai Printing Co. Ltd.) गुणात्मक

नियंत्रण की संस्था है जो टिकिट उत्पादन के हर स्तर पर विद्युतीय, रसायनिक, यांत्रिकीय और ऑप्टिकल परीक्षण कराती है। टिकिटों की फैक्टरी से रवानगी के पहले अवैध टिकिटों को बी.ज़ेड.पी. के विशेष क्षेत्र में नष्ट कर दिया जाता है। इज़राइल में मिफाल हपायिस अपनी लॉटरी टिकिटें विदेशों में छपवाती है ताकि कोई धोखाधड़ी ना हो। ब्रिटेन में हर खुरच कार्ड पर एक अनूठा सत्यापन क्रमांक होता है और साथ ही बार–कोड भी होता है। मिसौरी में निश्चित संख्या की खुरच टिकिटों के निर्यात पर उन्हें मुद्रक द्वारा और फिर मिसौरी की लॉटरी और मिस्सौरी की 'हाइवे पट्रोल लेबोरेटरी' द्वारा उनकी जांच की जाती है। प्रतिवर्ष स्वतंत्र अंकेक्षक के द्वारा तीसरी बार जांच की जाती है।

विपणन एजेंटो के द्वारा किए गए सुरक्षात्मक कार्य :

विपणन एजेंट टिकिटों को विक्रय के लिए प्रेषित करने के पहले सुनिश्चित करते हैं कि टिकिटों के क्रम संख्यांक सही हो। यदि ऐसे टिकिटें मिलें जो खराब हो या जिन पर गलत संख्या है, तो वे वापिस लॉटरी संचालनालय में नष्ट करने हेतु या उनके बदले दूसरी टिकिटें प्राप्त करने हेतु भेज दी जाती हैं।

अविक्रित टिकिटें :

किसी भी योजना की अविक्रित टिकिटों को विक्रय उपरांत तुरंत पंच कर दिया जाता है ताकि उनका दुरुपयोग ना हो सके। ऐसी पंच की गई टिकिटें ताले में सुरक्षित बंद कर दी जाती है जब तक कि पुरस्कृत टिकिट, यदि कोई हो, तो उसे इस सुरक्षित स्थान से बाहर वापिस ना निकालना पड़े।

पुरस्कार प्राप्त टिकिटें :

जब लॉटरी के खिलाड़ी अपनी पुरस्कार प्राप्त टिकिटों को प्रस्तुत करते है, तब उन टिकिटों को गिन कर पंच किया जाता है और मूल्य के अनुसार उनका वर्गीकरण किया जाता है। प्रत्येक टिकिट के परिणाम का सही दिनांक, निकाला गया संख्यांक आदि के जांच का भौतिक सत्यापन होता है। यह सत्यापन पुरस्कार प्राप्ति के लिए पेश की गई नकली या

धोखाधड़ी से बनाई टिकिटों को रोकने के लिए आवश्यक है।

परिणाम के दौरान सुरक्षा :

भारत में राज्य सरकारों ने निर्णय लिया है कि कुछ योजनाओं की लॉटरियों के परिणाम संचालक के उपस्थिति में और अन्य शासन द्वारा नियुक्त न्यायाधीश की उपस्थिति में संचालित हो। प्रत्येक निकाल के पहले सहायक मशीनों की जांच इन निर्णायकों द्वारा की जाती है। अमरीका के ऑरेगन राज्य में अव्यवस्थित अंक वाले जेनरेटर की 'ऑरेगन स्टेट पुलिस गेमिंग इन्फोर्समेन्ट सेक्शन' और एक बाहरी प्रयोगशाला (एक्सटर्नल लेबोरेट्री) द्वारा परीक्षण कर उसे योग्य प्रमाणित किया जाता है। ऑरेगन में राज्य निष्पक्षता, सुरक्षा और समाकलन को इस एजेंसी के द्वारा सुनिश्चित किया जाता है। सभी देशों में नागरिकों को परिणाम निकालने की प्रक्रिया देखने की अनुमति दी जाती है।

इज़राइल जैसे देशों में व्यवसायिक सांख्यिकीय अंकेक्षकों के द्वारा परिणामों का जांच किया जाता है।

उत्तर अमरीकी राज्यों में संपूर्ण प्रक्रिया पारदर्शी होती है। जनता को लॉटरी के अभिलेख देखने की स्वतंत्रता है और सूचना तंत्र (मीडिया) भी उनका परीक्षण कर सकता है। अनेक राज्यों में लॉटरी से संबंधित कर्मचारी और उनके परिवारों को लॉटरी खेलने की अनुमति नहीं है। इस निषेध प्रावधान का आशय है कि जनता में यह सवाल नहीं उठे कि यदि किसी कर्मचारी को पुरस्कार मिलता है, तो कहीं उस परिणाम को विजेता के पक्ष में करने के लिए हेराफेरी तो नहीं की गई। मिस्सौरी लॉटरी में एक सुरक्षा संभाग है जिसका उत्तरदायित्व है कि वह विभिन्न सुरक्षात्मक उपायों का प्रबंध और पर्यवेक्षण करे।

अमरीका में मशीनों में उपयोग की जाने वाली गेंदों (बॉल्स) को ताला डले डिब्बों में रखा जाता है जिस पर संख्यांकों से अंकित धातु की सील लगाई जाती है। माह में एक बार हर बॉल का वजन और नाप लिया जाता है ताकि उसके सही नाप तौल का आकंलन हो सकें। इन

गेंदों की घनत्व समुत्थान शक्ति, गोलाई आदि की भी जांच की जाती है। जिस लॉटरी खेल में अपरान्ह या संध्याकालीन परिणाम निकाले जाते हैं, उन्हीं गेंदों के सैट को पुनः उपयोग में नहीं लाया जाता। लॉटो और टेक–फाइव जैसे खेलों में गेंदों के सैट को हर तिमाही में बदल दिया जाता है। विन–4 जैसे खेलों में एक बार, और पिक–10 जैसे खेलों में दो बार गेंदों के सेट को बदल दिया जाता है। परिणाम की घोषणा के बाद मशीन को सील लगे कमरे में रखा जाता है और उस पर चौबीसों घंटे निगरानी रखी जाती है। इसके अतिरिक्त कमरे में चेतावनी की घंटियां और गतिविधियों के निरीक्षण के लिए डिटैक्टर्स लगाए जाते हैं। कमरे के ताले में दो चाबियां होती हैं, जिनमें से एक निजी प्रतिनिधि को सौंपी जाती है। प्रवेश के लिए सील को तोड़ना पड़ता है, उसके अंक को लॉग बुक में भविष्य के सत्यापन हेतु लिखा जाता है। स्वचालित परिणाम निकालने वाली मशीन के कंप्यूटर के हार्डवेयर में ऐसे अंक से अंकित सुरक्षा सील होती है जिसे तोड़ा नहीं जा सकता। जो सॉफ्टवेयर अव्यवस्थित संख्याएं निकालता है, उसे भी परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

ब्रिटेन में सभी फुटकर विक्रय केन्द्रों पर सी.सी.टी.वी. (closed circuit televisions) होते है। कुछ प्रकरणों में इनके द्वारा लिए गए चित्रों की सहायता से अपराधियों को पकड़ा गया है। ड्रॉ मशीनें बी. एस.आई. (ब्रिटिश स्टैंडर्ड इन्स्टीट्यूशन) के प्रतिमानों के अनुसार बनाई जाती है। परिणाम में उपयोग में लाई जाने वाली गेंदों को सुरक्षित डिब्बों में सील कर रखा जाता है, व उनकी समानता की जांच के लिए उनका तौल और वज़न नियमित रूप से लिया जाता हैं। सी.सी.टी.वी. के द्वारा बराबर जांच की जाती है कि मशीनों के साथ कोई हस्तक्षेप ना हो।

कंप्यूटर और ऑनलाइन लॉटरी की सुरक्षा :

कंप्यूटर और ऑनलाइन लॉटरी के संचालन में हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और संगठनात्मक मुद्दे, जैसे कर्मचारी की गलती, दुर्भावनापूर्ण उद्देश्य से हस्तक्षेप और प्राकृतिक आपदाओं के लिए सुरक्षात्मक उपाय किए जाते हैं।

1. उपयोगकर्ता के लिए प्राधिकार :

सिस्टम में केवल एक कूट शब्द के द्वारा पहुंच बनती है जिसकी जानकारी केवल प्राधिकार प्राप्त अधिकारियों को होती है।

2. टर्मिनल की पहचान और अनुज्ञप्ति :

प्रत्येक हार्डवेयर टर्मिनल की अपनी अलग पहचान होती है जिसके स्तर को सत्यापित किया जा सकता है। केवल ऐसे ही प्राधिकृत टर्मिनल को कार्य करने की अनुमति होती है।

3. पहुंच (एक्सेस) के नेटवर्क की सुरक्षा :

पी.ओ.एस. का प्रत्येक टर्मिनल केन्द्रीय सर्वर पर एजेंट के कूट शब्द की अनुमति के बाद ही पहुंच सकता है। पूरा नेटवर्क इस तरह कार्य करता है कि यदि सुरक्षा तंत्र में यदि कहीं दोष आ जाए तो मुख्य सर्वर से टर्मिनल का संपर्क काटा जा सकता है। एक वास्तविक निजी नेटवर्क (वी. पी. एन.) निर्मित किया जाता है ताकि यदि सार्वजनिक नेटवर्क का उपयोग भी किया जाए, तो भी सुरक्षित सहायक नेटवर्क उसमें बन सकें जिससे कि लॉटरी का उपयोग करने वाले और सर्वर को भी बाहरी प्रभावों से बचाया जा सके। वी. पी. एन. से एक अलग आई.डी. द्वारा और मोडेम के जरिए कूट शब्द की वैधता हासिल करने के बाद ही संपर्क हो सकता है। वी. पी. एन. उपयोग के द्वारा वाइरस जनित प्रतिकृति होने की संभावना को कम किया जा सकता है।

4. 'कोर नेटवर्क' सुरक्षा :

लॉटरी संचालक अपने सर्वर की संस्थिति लिंक करने के लिए दूरसंचार के सेवा प्रदाता के 'कोर नेटवर्क' का उपयोग करते है। चूंकि दूरसंचार सेवाएं सर्वोच्च स्तर की सुरक्षा तकनीक का उपयोग करती है, संचालक को उत्तम सुरक्षा मिल जाती है।

5. फायर वॉल :

सभी सर्वर को 'फायर वॉल' नामक एक सुरक्षित युक्ति के पीछे रखा जाता है। यह हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर पर आधारित होती है तथा

अनाधिकृत घुसपैठ को रोकती है। यदि ऐसी घुसपैठ पकड़ ली जाए तो उसकी तुरंत रिपोर्ट की जाती है।

6. आकंडों की सुरक्षा :

आंकड़ासंचय (डेटाबेस) को प्रोग्राम सॉफ्टवेयर के पीछे रखा जाता है ताकि उपयोग करने वालों की सीधे पहुंच आंकड़ासंचय तक ना हो सके। कारोबार इसी सॉफ्टवेयर के माध्यम से होता है जहां पहले उसकी जांच होती है। इस आंकड़ासंचय के प्रबंधन के लिए संपर्क का प्राधिकार कुछ ही अधिकारिक व्यक्तियों को दिया जाता है।

7. व्यवसाय की निरंतरता और आपदा–मुक्ति के उपाय :

प्राकृतिक या मानवीय आपदाओं से सुरक्षा के लिए अलग–अलग भू–कंपीय क्षेत्र में सर्वर स्थित होते है। उदाहरण के लिए, प्राथमिक सर्वर मुंबई में स्थित है (जो भू–कंपीय क्षेत्र क्रमांक 4 में आता है) और बैंक सर्वर बेंगलोर में है (जो क्षेत्र क्रमांक 1 में शामिल है)। इन दोनों सर्वर के बीच आंकड़ासंचय (डेटाबेस) की अनुकृति तैयार हो जाती है जिससे कि आपातकालीन स्थिति में संचालन बिना अवरोध के अन्य साइट पर स्थानान्तरित हो सके।

8. भौतिक सुरक्षा :

स्थापन केन्द्रों पर जहां सर्वर स्थापित किए गए हैं, संचालन हेतु न केवल सर्वोत्तम पर्यावरण मिलता है परंतु 'बायोमेट्रिक एक्सेस कंट्रोल' जैसे आधुनिकतम यंत्रो से सर्वोत्तम भौतिक सुरक्षा भी मिलती है। ऐसी साइट पर केवल अधिकारिक व्यक्तियों को प्रवेश की अनुमति है।

9. टिकिट मुद्रण :

टिकिटों, परामर्श पर्चियों और टर्मिनल द्वारा प्रदत्त क्रय के दस्तावेजी प्रमाणों पर केन्द्रीय सर्वर द्वारा एक अद्वितीय संख्यांक दिया जाता है। यह इसका सूचक होता है कि वह केन्द्रीय सर्वर द्वारा प्रमाणित है। साथ ही प्रत्येक टिकिट पर निर्गम के साथ अलग बार–कोड भी स्थित किया जाता है।

राज्य शासन ने विनिर्दिष्ट किया है कि ऑनलाइन और विक्रय केन्द्र पर मुद्रित कंप्यूटर लॉटरी टिकिट पर भी शासन का प्रतीक चिन्ह और सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर की अनुकृति मुद्रित होनी चाहिए ताकि खिलाड़ी को यह जानकारी रहे कि यह ऑनलाइन लॉटरी खेल शासन द्वारा अधिकृत है। टिकिट पर पूर्व मुद्रित क्रमांक भी होता है और उसके जारी किए जाने का समय भी होता है। जिस कागज़ पर टिकिट छापी जाती है उसके विशेष लक्षण भी होते हैं ताकि उनकी छद्‌म कापी ना बन सके।

10. पुरस्कार का भुगतान :

पुरस्कार देने के पहले पुरस्कार प्राप्त टिकिटों की 'स्कैनिंग' की जाती है। केन्द्रीय सर्वर स्कैन किए गए **आँकडों** का सत्यापन टिकिट जारी करने के पहले जमा किए गए **आँकडों** से करता है। सर्वर के द्वारा दावा अवधि की समाप्ति पर उन पुरस्कारों की तालिका भी तैयार की जाती है जिन पर दावा प्रस्तुत नहीं किया गया ताकि पुरस्कार राशि शासकीय कोष में जमा की जाए।

16. फुटकर विक्रेताओं की भूमिका

लॉटरी की सफलता फुटकर विक्रेताओं के नेटवर्क पर आधारित होती है। वे जनता और लॉटरी संचालक के बीच में कड़ी का काम करते हैं। चूंकि वे लॉटरी के अंतिम उपभोक्ता के सीधे संपर्क में रहते हैं, लॉटरी की सफलता उन्हीं पर अवलंबित है। इसलिए शासन और लॉटरी संचालक इन विक्रेताओं को अभिप्रेरित करने में कार्यरत रहते हैं।

भारत में केरल राज्य में लगभग पैंतीस हज़ार फुटकर विक्रेता हैं, महाराष्ट्र में करीब डेढ़ लाख, पंजाब में तीस हज़ार, हरियाणा में लगभग बीस हज़ार और कर्नाटक में करीब डेढ़ लाख लोग फुटकर विक्रेता हैं। पश्चिमी बंगाल में इसकी संख्या लगभग पचास हज़ार है।

भारत में कोई भी व्यक्ति फुटकर विक्रेता बन सकता है। अपनी योग्यता से विक्रय केन्द्र को स्थापित करने और चलाने के अलावा अन्य किसी शैक्षिक योग्यता की आवश्यकता नहीं है। अन्य बहुत से देशों के समान, यदि उनके द्वारा विक्रय की गई टिकिट पर पुरस्कार मिलता है, तो उन्हें बोनस कमीशन दिया जाता है। उदाहरण के लिए, जब सिक्किम की पहली ऑनलाइन लॉटरी पर 8.61 करोड़ की टिकिट पर जैकपॉट पुरस्कार की घोषणा की गई, तब उस टिकिट विक्रेता को 8.61 लाख का एक प्रतिशत की दर से कमीशन मिला। यह उनके नियमित कमीशन के अतिरिक्त होता है। सामान्यतः टिकिट का मूल्य एक से लेकर सौ रुपये तक होता है। विक्रेता एजेंट का कमीशन राज्य–दर–राज्य और योजना–दर–योजना 4 प्रतिशत और 25 प्रतिशत के बीच का होता है। इसी तरह पुरस्कार राशि भी टिकिट मूल्य के 30

प्रतिशत और 91 प्रतिशत के बीच की होती है।

कनेक्टिकट में एक 'मिस्टरी शॉपर' योजना है। संचालनालय के प्रतिनिधि इन फुटकर केन्द्रों पर बिना पूर्व सूचना के पहुंचते हैं। उनकी रिपोर्ट के आधार पर किसी विशिष्ट लॉटरी के सर्वोत्तम प्रदर्शन पर पुरस्कार दिया जाता है। वहीं पर एक 'प्रीमियम पॉइंट रिवार्डस' योजना भी होती है जिसमें विशिष्ट खेल की टिकिटों को बेचने पर वे कुछ अंक अर्जित करते हैं। इन अंकों के बदले उन्हें लॉटरी के उत्पाद या 'गिफ्ट सर्टिफिकेट' मिलते हैं।

बेल्जियम के राज्य लॉटरी विपणन विभाग के अनेक कार्यो में एक यह भी है कि नए खेल और खिलाड़ी का व्यवहार विकसित करने के अलावा वे वितरण नेटवर्क से व्यक्तिगत संपर्क बनाते हैं। विपणन और विज्ञापन विभाग निरंतर प्रोत्साहन के बतौर कार्यक्रम भी संगठित करते हैं, जिससे सर्वोत्तम विक्रय केन्द्रों को अभिप्रेरित और पुरस्कृत किया जा सके।

केनटकी के 'सेल्स इंसेन्टिव प्रोग्राम' में निश्चित विक्रय लक्ष्य प्राप्त करने पर फुटकर विक्रेताओं को प्रेरणादाई पुरस्कार भी दिए जाते हैं।

इज़राइल में "सर्वोत्तम आकर्षक लॉटरी केन्द्र" में नियमित अंतराल पर प्रतियोगिताएं भी कराई जाती हैं। कुशल नेटवर्किंग को सुनिश्चित करने के लिए लॉटरी विभाग के द्वारा विक्रेता, वितरक और विपणन में लगे कर्मचारियों के लिए बहुमुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशाला भी चलाई जाती है।

मासाचूसेट्स राज्य लॉटरी, एजेंटों के लिए लॉटरी निकालती है, जिसमें टिकिटों की एक पुस्तिका के विक्रय पर एजेंट को भाग लेने की पात्रता होती है। वह जितनी पुस्तिकाएं बेचेगा, उसे परिणाम में भाग लेने के लिए उतनी ही प्रविष्टियां मिल जाएगी। हर पखवाड़े में लगभग हज़ार एजेंटों को पचास डॉलर से दस हज़ार डॉलर तक के पुरस्कार मिल जाते है। दो महीनों में एक बार 'ग्रेंड प्राइज़ ड्रॉ' आयोजित होता

है, जिसमें 2,50,000 डॉलर का एक और 50,000 डॉलर के चार पुरस्कार रखे जाते हैं।

'न्यू मेक्सिको लॉटरी अथॉरिटी' एक प्रेरक विपणन कार्यक्रम चलाता है जहां पी.ओ.एस. के प्रदर्शन आदि पर अंक देकर बढ़ावा देता है जिसके आधार पर स्वर्ण पदक या रजत पदक प्रदान किया जाता है। इसमें विक्रेता को कुल विक्रय का 0.5 प्रतिशत और 0.25 प्रतिशत का अतिरिक्त पुरस्कार मिलता है।

इस लॉटरी में कर्मचारियों के लिए एक अलग योजना है। जब उनके प्रतिनिधि फुटकर विक्रय केन्द्रों पर जाते हैं, वे वहां के लिपिकों और काउण्टर पर कार्य करने वालों को सही जानकारी देने पर, खेलों की उन्नति पर, वर्तमान में चल रहे पुरस्कृत नंबर की प्रविष्टी आदि के लिए अंक देते है जिनके एवज में उन्हें पुरस्कार मिलते हैं।

ट्रिनिदाद और टोबेगो में प्रारंभ में टिकिटों के आमुख मूल्य की तीन गुना राशि जमा करनी पड़ती थी जिसे बाद में वास्तविक मूल्य के बराबर कर दिया गया। एजेंटों को पन्द्रह प्रतिशत कमीशन मिला। जब लॉटरी सफल हो गई तो शासन ने इस कमीशन को उनके प्रोत्साहन के लिए सत्रह प्रतिशत कर दिया।

gpl lottery ka khel.indd 100 11/15/2007 4:06:59 PM

17. लॉटरी के सहायक उद्योग

लॉटरी उद्योग से काफी व्यवसायों को सहायता मिलती है। लाभान्वित होने वाले ऐसे व्यवसाय विज्ञापन, मुद्रण, परिवहन, खेल सेवा उपलब्ध कराने वाले टेलीकॉम सेक्टर, मुद्रण और चाक्षुक माध्यम से संबंधित होते हैं।

विज्ञापन :

विज्ञापन लॉटरी व्यवसाय का अनिवार्य अंग है, जिससे उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मिलता है। विज्ञापन, मुद्रित या दृश्य रूप से विज्ञापन बोर्ड, पोस्टर, लटकते हुए साइन बोर्ड के द्वारा किया जाता है।

ब्रिटेन में संचालक हर वर्ष के प्रारंभ में अपने चार प्रमुख त्वरित खेलों के विपणन के लिए एक लाख पौंड खर्च करते हैं। उत्तर अमरीकी लॉटरी में कुल आय का 1.17 प्रतिशत विज्ञापन पर व्यय होता है। यह राशि उन मादक पेय पदार्थो और प्रसाधन सामग्री बनाने वाली कंपनियों के व्यय से बहुत कम होती है जो क्रमशः 7.5 प्रतिशत और 8.8 प्रतिशत व्यय करती है। सन् 1996 में अमरीका में विज्ञापन पर 400 मिलियन डॉलर खर्च किए गए और उससे प्राप्त आय चौंतीस अरब डॉलर की हुई।

भारत मे जब ऑनलाइन लॉटरी संचालित हुई, सभी बड़े शहरों और नगरों में विशाल विज्ञापन बोर्ड के द्वारा उन्हें विज्ञापित किया गया। चूंकि ये ऑनलाइन लॉटरियां भारत में पहली बार प्रारंभ की गई थी, संचालकों ने दैनिक समाचार पत्रों में निःशुल्क खेल के कूपन प्रकाशित

करवाए। अभी भी इनके विज्ञापन 68 समाचार पत्रों में दस भाषाओं में सभी राज्यों में चलते हैं, जहां उनकी लॉटरी संचालित होती है। उनका मुख्य लक्ष्य 'ब्राण्ड' को बनाकर लोगों को उससे परिचित कराने का था। अब यह लक्ष्य अलग खेलों पर निर्धारित हो गया है। यहां एक ऑनलाइन संचालक लॉटरी उत्पाद शुरू करने पर उसके विज्ञापन अभियान पर 2.5 करोड़ रुपये व्यय करता है। इसका वार्षिक बजट 65 करोड़ रुपये है एवं साप्ताहिक और दैनिक लॉटरी खेलों के प्रसार–प्रचार के लिए दो अलग–अलग विज्ञापन एजेंसियां काम करती हैं।

जब एक दूसरे संचालक ने अपना 'ब्राण्ड' बाज़ार में उतारा, तब उसने अपने विज्ञापन के बजट के लिए 85 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया। बजट में विज्ञापन व्यय का हिस्सा हर योजना के लिए अलग–अलग होता है। उदाहरण के लिए, किसी विशेष खेल के विज्ञापन पर स्थानीय भाषा के प्रेस के लिए 99 प्रतिशत मुद्रण–बजट होता है। सामान्य रूप से विज्ञापन बजट प्रतिवर्ष पच्चीस करोड़ होता है। अन्य एक संचालक का विज्ञापन बजट 150 करोड़ (1500 मिलियन) रुपये है।

सूचना माध्यम पर शोध करने वाली एक फर्म, टी.ए.एम. एडेक्स ने अपने शोध द्वारा बताया कि भारत में सन् 2002 में सभी लॉटरियों के कुल विज्ञापन व्यय का 70 प्रतिशत ऑनलाइन लॉटरियों के विज्ञापन पर किया गया। वर्ष सन् 2003 में यह 80 प्रतिशत हो गया। महाराष्ट्र, बंगाल और केरल में जहां उच्च संभावना के बाजार हैं, वहां लॉटरियों के बहुत विज्ञापन दिए जाते हैं। उन राज्यों में सन् 2002 और सन् 2003 में लॉटरी उद्योग के कुल व्यय का क्रमशः 1.07 प्रतिशत और 1.34 प्रतिशत व्यय विज्ञापन पर किया गया।

मुद्रण :

जहां कागज़ लॉटरी टिकिटों का मुद्रण प्रतिभूति या न्यासीय प्रेस द्वारा किया जाता है, वहीं ऑनलाइन टिकिटें खेल के समय पी.ओ.एस. टर्मिनल पर मुद्रित की जाती हैं। ब्रिटेन की नेशनल लॉटरी प्रति

gpl lottery ka khel.indd 102 11/15/2007 4:06:59 PM

सप्ताह 25 मिलियन टिकिटें बेचती है। भारत में महाराष्ट्र राज्य केवल एक सप्ताह में दो अंकों वाले खेलों के लिए 16.8 मिलियन टिकिटें मुद्रित करता है। दूसरी योजना की टिकिटों की संख्या उनके परिणामों के आवर्तन पर निर्भर करती है। हर सप्ताह भारतीय ऑनलाइन लॉटरी संचालक 17 मिलियन से अधिक टिकिटों का विक्रय कर लेता है। केनेडा के ब्रिटिश कोलंबिया लॉटरी निगम ने वर्ष 2000 में 'लिविंग लार्ज' लॉटरी के लिए 6,60,000 टिकिटों का मुद्रण किया। 'सिंगापुर स्वीप' में हर निकाल के लिए 2.7 मिलियन टिकिटें मुद्रित की गई। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि कितने बड़े पैमाने पर मुद्रण कार्य किया जाता है।

इसके अतिरिक्त मुद्रण उद्योग को विज्ञापन और पोस्टरों से भी लाभ मिलता है।

कागज़ उद्योग :

कागज़ उद्योग अप्रत्यक्ष रूप से लाभांवित होता है क्योंकि बड़े पैमाने पर टिकिट मुद्रण का कार्य होता है जिसमें टनों कागज़ का उपयोग होता है।

परिवहन :

लॉटरी व्यवसाय में परिवहन उद्योग को भी लाभ मिलता है क्योंकि मुद्रित टिकिटों को विभिन्न स्थानों तक पहुंचाया जाता है।

खेल से संबंधित अन्य सेवाएं :

कागज़ लॉटरी में केवल परिणाम निकालने की मशीनों का उपयोग होता है। जैसे–जैसे ऑनलाइन लॉटरी लोकप्रिय होती जा रही है, मशीनों का उपयोग भी बढ़ गया है क्योंकि ऑनलाइन लॉटरी में हस्तचालित काम बहुत कम है।

खेल सेवा उपलब्ध कराने वालों में तात्कालिक खुरच टिकिट निर्माता, अद्वितीय और नए कागज़ और ऑनलाइन खेलों के आविष्कारक, नेटवर्क विघन निवारण करने वाले, लॉटरी गुमठियों के और परिणाम निकालने वाली मशीनों व ऑनलाइन टर्मिनल की डिज़ाइन व निर्माण

करने वाले सम्मिलित हैं। 'साइंटिफिक गेम्स कॉरपोरेशन', 'ओबरथर गेमिंग टेक्नोलॉजीस्' एवं 'जी.टी.इ.सी.एच. गेमिंग सोल्यूशंस' अंतर्राष्ट्रीय खेलसेवा उपलब्ध करने वाली कुछ प्रसिद्ध कंपनियां हैं। अमरीका के सोलह राज्यों में साथ ही कोरिया, नार्वे, स्विटजरलैंड और शंघाई में 'साइंटिफिक गेम्स' ने ऑनलाइन खेलों का संचालन किया है। जी.टी.इ.सी.एच. ने 400,000 से अधिक पी.ओ.एस. टर्मिनल स्थापित किए हैं। ओबरथर टेक्नोलॉजी के पचास देशों में सौ से अधिक उपभोक्ता हैं।

चेन्नई की एक 'आटोमेशन' कंपनी के डिज़ाइन विभाग ने लॉटरी टर्मिनल की डिज़ाइन बनाई है जिसमें घूमता हुआ अंकीय प्रदर्श (डिजिटल डिसप्ले) बनाया गया है जिससे 360 अंश से भी प्रदर्श देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त बड़े प्रिंट रोल को रखने, खुली टिकिटों को रखने और जैमिंग की आपातस्थिति में स्वतः ढक्कन खोल कर कागज़ों को विमुक्त करने का प्रावधान किया गया है। चूंकि ऑनलाइन खेलों में मशीनें संचालन में बहुत कम समय लेती हैं, इसलिए उन्हें तेज गति से चलाना ज़रुरी है। इन मशीनों की डिज़ाइन इस तरह है कि वे प्रति घंटा 900 टिकिटें तैयार करने की क्षमता रखती हैं। ऑनलाइन लॉटरी खिलाड़ियों के लिए अनेक संचालकों ने पूरे देश में 25,000 से अधिक पी.ओ.एस. (Point Of Sales) टर्मिनल स्थापित किए हैं। लॉटरी टर्मिनल की देश में आपूर्ति करने वालों में एच.सी.एल. एक प्रमुख कंपनी है।

भारत में संचालकों के लिए खेल के हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर की आपूर्ति 'इंटरनेशनल लॉटरी' और 'टोटलाइज़ेटर सिस्टम्स' से, और परिणाम निकालने की मशीनें अमरीका के 'स्मार्ट प्ले इंटरनेशनल इनकॉर्पोरेशन' द्वारा उपलब्ध कराई जाती हैं। परंतु सुगाल एंड दमानी ने देशज प्रणाली विकसित की है और उनका सॉफ्टवेयर स्थानीय कंपनियों द्वारा उपलब्ध कराया जाता है।

दक्षिणी कैरोलीना में 'बीटेल क्राइटिरीओन' की दो मशीनों का उपयोग विजेता संख्यांक निकालने के लिए किया जाता हैं, एक सफेद गेंदों के लिए और दूसरी लाल गेंदों के लिए।

सॉफ्टवेयर उद्योग :

जहां खेल का सॉफ्टवेयर टोटलाइज़ेटर जैसी कंपनियों द्वारा तैयार किया जाता है, वही ऑनलाइन और कंप्यूटर लॉटरी संचालकों को अपने कुछ अन्य व्यवसाय को चलाने के लिए ऐसे सॉफ्टवेयर की आवश्यकता होती हैं जिनमें प्रशासनिक, लेखाकर्म और वित्तीय सॉफ्टवेयर सम्मिलित हों। इनके द्वारा वित्तीय प्रवाह और बर्हिप्रवाह की जानकारी रखने, परिणामों को नियमित व स्वचालित विधि से अद्यतन रखने और उप–एजेंट, फुटकर विक्रेताओं के नेटवर्क के मध्य वितरण की देखरेख का काम किया जाता है। ऐसे सॉफ्टवेयर के अतिरिक्त लॉटरी संचालकों और संघों की अपनी वेबसाइट होती है। इनकी वेबसाइट की मेजबानी करने, उन्हें उन्नतशील और आधुनिक बनाने में बहुत सी लघु सॉफ्टवेयर कंपनियों को लाभ मिलता है।

टेलीकॉम सेक्टर :

ई–मेल, टेलीफोन व एस.एम.एस. के जरिए लॉटरी खेलों में बढ़ती भागीदारी में वी.एस.ए.टी, सी.डी.एम.ए. और जी.पी.आर.एस. तकनीकों का जो विस्तृत उपयोग होता है, उससे टेलीकॉम कंपनियों को लाभ पहुंचता है। भारत में रिलायंस, एयरटेल जैसी निजी कंपनियों द्वारा प्रदत्त डेटा सेवाओं का सर्वाधिक उपयोग करने वाला क्षेत्र लॉटरी का है।

समाचार पत्र :

समाचार पत्रों को विज्ञापन और लॉटरी परिणाम प्रकाशित करने से प्रसारण संख्या में निरंतर वृद्धि होने से बहुत फायदा मिलता है। 'योग लक्ष्मी', 'अथिरष्टम' और हाल में शुरू 'धनवर्षा' जैसे समाचार पत्र केवल लॉटरी के विशिष्ट कार्य के लिए समर्पित हैं। इनके 95 प्रतिशत स्थान लॉटरी से संबंधित समाचार व परिणाम से भरे होते हैं।

शोध व विकास :

चूंकि लॉटरी की योजनाओं और खेलों में लगातार नयापन लाने और उनकी मशीनों में तेज गति लाने की आवश्यकता है, इसलिए खेल सेवाएं उपलब्ध कराने वाले और सॉफ्टवेयर के उद्योग निरंतर शोध व विकास में लगे रहते हैं।

gpl lottery ka khel.indd 106 11/15/2007 4:06:59 PM

18. लॉटरी के नियम

लॉटरी संचालक :

लॉटरी संचालन के नियम अधिकांश देशों में अधिकतर एक समान हैं। ये इस पर निर्भर करते हैं कि लॉटरी सरकार चलाती है या कोई निजी फर्म। भारत के समान बहुत से यूरोपीय और उत्तर अमरीकी राज्यों में लॉटरी क्षेत्रीय आधार पर संचालित होती है। थाईलैंड और स्पेन जैसे देशों में लॉटरी राष्ट्रीय स्तर पर संचालित होती है। डेनमार्क, नीदरलैंड, जर्मनी, इटली और पुर्तगाल में निगमों द्वारा संचालित होती है जो शासकीय नियंत्रण में है। ये अधिकतर वित्तमंत्रालय या राजस्व विभाग के क्षेत्राधिकार में होते हैं।

अज़रबैजान में अज़रलॉटरेया निगम को जानकारी देनी पड़ती है कि लॉटरी योजना किस तरह चलाई जाएगी और लॉटरी टिकिट का नमूना प्रतिभूति राज्य समिति (एस.सी.एस.) को प्रेषित किया जाता है। साथ ही जानकारी में लॉटरी के नाम और प्रकार, संचालन अवधि, वर्णन, परिणाम का दिनांक, पुरस्कारों की संरचना, पुरस्कार वितरण के नियम और संचालित लॉटरी के क्षेत्र का वर्णन होता है।

ब्रिटेन में नेशनल लॉटरी कमीशन के द्वारा नेशनल लॉटरी नियंत्रित की जाती है।

जापान के नियमानुसार बैंक द्वारा लॉटरी चलाई जाती है।

टिकिटें :

लगभग सभी देश टिकिट पर सूचनाएं अंकित करते हैं। इनमें

निगम का नाम, लॉटरी का नाम व प्रकार, मुद्रित टिकिटों की संख्या, प्रत्येक टिकिट का मूल्य, उसका क्रमांक, पुरस्कार राशि और परिणाम का दिनांक जैसी जानकारी शामिल होती है। अज़रबैजान में लॉटरी टिकिट के मुद्रक का नाम, उसका पंजीयन क्रमांक और जिस संगठन के द्वारा लॉटरी का लाइसेंस दिया गया है, ये सब जानकारियां दी जाती हैं।

अमरीका के अधिकांश राज्यों में टिकिट ऑनलाइन या डाक द्वारा नहीं खरीदी जा सकती। यद्यपि वे अनिवासियों को लॉटरी खेलने की अनुमति देते हैं, लॉटरी टिकिट केवल फुटकर व्यापारियों से ही खरीदने पड़ते हैं। यह टिकिट भी क्रेडिट कार्ड से ना होकर नकद से ही क्रय की जा सकती है। जहां पुरस्कृत निवासियों को केवल राज्य कर देना होता है, अनिवासी क्रेताओं को पुरस्कृत राशि पर अठाईस प्रतिशत अतिरिक्त संघीय कर देना पड़ता है। **परंतु स्पेन जैसे देश अपनी लॉटरी उत्पादों को इंटरनेट पर उपलब्ध कराते हैं ताकि विश्व के किसी भी कोने से कोई भी व्यक्ति उन्हें खेल सके। कुछ देश अभिदान के आधार पर टिकिटों का विक्रय करते हैं जिसमें खिलाड़ी निर्दिष्ट संख्या में आगामी खेलों के लिए टिकिट क्रय कर सकता है।**

कुछ देश पुरस्कार विजेताओं को तय करने के लिए केवल विक्रित टिकिटों को परिणाम में भाग लेने की अनुमति देते हैं। अज़रबैजान इनमें से एक है। यही सिद्धांत भारतीय राज्यों में प्रचलित है। महाराष्ट्र की बंपर राशि वाली टिकिटों पर गारंटीशुदा और बगैर गारंटी के पुरस्कार निर्धारित होते हैं, जिसमें गारंटी के पुरस्कार केवल विक्रित टिकिटों के आधार पर और बगैर गारंटी के पुरस्कार सभी मुद्रित टिकिटों के आधार पर दिए जाते हैं।

परिणाम :

सभी देशों में परिणामों की घोषणा के समय जनता उपस्थित हो सकती है। अधिकांश देश टीवी पर परिणाम प्रक्रिया का सीधा प्रसारण

करते हैं, लॉटरी संचालनालय का कोई एक प्रतिनिधि परिणाम निकालते समय अनिवार्य रूप से उपस्थित रहता है। अमरीका के ऑरेगन में 'स्टेट पुलिस गेमिंग एनफोर्समेंट सेक्शन' के अधिकारी को परिणामों के दौरान उपस्थित रहना पड़ता है। भारत के कुछ राज्यों में शासन द्वारा पांच सदस्यीय समिति और उसके अध्यक्ष को परिणाम के समय उपस्थित रहने के लिए नियुक्त किया जाता है। महाराष्ट्र राज्य में लॉटरी उपनिदेशक मासिक और बंपर राशि के परिणामों का पर्यवेक्षण करता है। परिणाम से प्राप्त संख्यांकों को अभिलेख में नोट किया जाता है, सत्यापित किया जाता है, जिस पर समिति के सदस्य हस्ताक्षर करते हैं। उत्तर अमरीकी राज्यों में परिणाम प्रबंधक विभाग के कर्मचारी एक स्वतंत्र प्रमाणित लोक लेखाकारों के प्रतिनिधि की उपस्थिति में परिणाम प्रक्रिया का संचालन करते हैं। इस प्रक्रिया को लिपिबद्ध किया जाता है और लॉटरी निदेशक उसका अनुमोदन करता है। स्वतंत्र प्रतिनिधि सुनिश्चित करता है कि परिणाम निकालने में निर्धारित प्रक्रिया का पालन किया गया है। यदि प्रक्रिया के अनुसार परिणाम ना निकाले गए हो, तो उसे परिणाम को रोकने का अधिकार है। ऐसी परिस्थिति में उसे लॉटरी निर्देशक को विस्तृत लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत करनी पड़ती है। परिणाम की विधि और सुरक्षा उपायों का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पेंसिलवेनिया जैसे राज्यों में फुटकर विक्रेताओं को लॉटरी में भाग लेने की अनुमति होती है। अज़रबैजान और अमरीका के फ्लोरिडा जैसे राज्यों में संचालनालय, लॉटरी संचालक और लॉटरी के माल आदि की आपूर्ति करनेवाले कर्मचारियों को लॉटरी खेलने की अनुमति नहीं है।

पुरस्कारों का दावा :

दावा पेश करने की अवधि अलग–अलग देशों में अलग होती है, और भारत और अमरीका में भिन्न–भिन्न राज्यों के लिए अलग–अलग होती है। अधिकांश भारतीय राज्यों में दावे की अवधि 90 दिनों की होती है। अमरीका के जॉर्जिया में तात्कालिक खेलों के लिए 90 दिनों की और दूसरे खेलों के लिए 180 दिनों की अवधि होती है। ट्रिनिदाद और

टोबैगो में खुरच खेलों के लिए छः माह और अन्य के लिए एक साल की अवधि होती है। सभी देशों में एक निश्चित सीमा तक पुरस्कार राशि फुटकर विक्रेता से प्राप्त की जा सकती है। बड़ी धन राशि, एक दावा प्रपत्र और टिकिट प्रस्तुत करने के बाद संचालनालय से ली जाती है। अज़रबेजान में परिणाम से सात दिनों के भीतर पुरस्कार वितरण आरंभ हो जाता है।

अमरीका की बहुराजकीय लॉटरियों में खिलाड़ियों को पुरस्कार उसी राज्य से प्राप्त करना पड़ता है जहां उन्होंने टिकिट खरीदी थी।

प्राप्त आय का वितरण :

बहुत से देशों में लॉटरी से प्राप्त आय का कम से कम 50 प्रतिशत पुरस्कार के रूप में देने की व्यवस्था है। रशियन फेडरेशन कानून में न्यूनतम 50 प्रतिशत पुरस्कार के रूप में देने की व्यवस्था है जो लॉटरी की आय की अधिकतम सीमा से 80 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। देश उन उद्‌देश्यों को भी सीमित करते हैं, जिनके लिए लॉटरी की आय को खर्च किया जाता है। उदाहरण के लिए ऑरेगन में आय के सोलह प्रतिशत भाग से अधिक व्यय प्रशासनिक उद्‌देश्यों पर खर्च नहीं किया जा सकता। दक्षिण केरोलिना में शिक्षा लॉटरी अधिनियम (एजूकेशन लॉटरी एक्ट) निरूपित करता है कि लॉटरी संचालन का मूल्य और फुटकर विक्रेताओं का कमीशन कुल विक्रय से पन्द्रह प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। लॉटरी संचालित करने वाले सभी देशों में जिन पुरस्कारों पर कोई दावा नहीं किया गया, वे सभी पुरस्कार के पूल में वापिस जमा कर दिए जाते हैं – कभी–कभी उनका छोटा सा प्रतिशत सामुदायिक योजनाओं के लिए भी आबंटित किया जाता है। अमरीका के मोन्टाना राज्य में ऐसे दावा ना किए गए पुरस्कार सामान्य निधि में जमा कर दिए जाते हैं। भारत में ऐसी पुरस्कार राशि शासकीय कोषालय में जमा कर दी जाती है।

ब्रिटेन में केवल तीन बार जैकपॉट को आगे बढ़ाया जा सकता है, अगर अब तक भी कोई विजेता नहीं पाया जाता तो जैकपॉट राशि को

बोनसबॉल पुरस्कार निधि में जोड़ दिया जाता है।

फुटकर विक्रेता/एजेंट :

किसी फुटकर विक्रेता या एजेंट को लॉटरी का लाइसेंस उसके द्वारा दिए गए प्रत्यय पत्र के आधार पर उस स्थान पर लॉटरी चलाने के लिए दिया जाता है। अमरीका की डेलावेर लॉटरी के लिए एजेंट द्वारा अपना लाइसेंस प्रदर्शित करना आवश्यक होता है। वह अपना विक्रय उसी स्थान पर कर सकता है जिसके लिए उसके लाइसेंस में निर्देश दिया गया हो।

केरल जैसे कुछ राज्यों ने निर्दिष्ट किया है कि एजेंट बनने के लिए व्यक्ति की आयु इक्कीस वर्ष की होनी चाहिए। वह लाइसेंस प्राप्ति के आवेदन में केवल राज्य के एक स्थान के लिए आवेदन कर सकता है। उसे उस क्षेत्र का निवासी होना चाहिए और उसमें विनिर्दिष्ट न्यूनतम टिकिटों की संख्या उठाने की क्षमता होनी चाहिए। फ्लोरिडा और डेलावेर में एजेंट की न्यूनतम आयु क्रमशः अठारह और इक्कीस वर्षों की निर्धारित की गई है।

भारत के कुछ राज्यों में एजेंटों को प्राधिकृत करते समय शुल्क लिया जाता हैं। पेंसिलवेनिया में 15 डॉलर का लाइसेंस शुल्क तात्कालिक टिकिटों के विक्रय पर लिया जाता है। मिसौरी में फुटकर विक्रेता को 50 डॉलर की बॉण्ड शुल्क का भुगतान करना पड़ता है।

मिसौरी लॉटरी विधान में अल्प संख्यकों द्वारा लॉटरी व्यवसाय चलाने पर लॉटरी व्यवसाय की उपसंविदा के अंतर्गत दस प्रतिशत और महिलाओं द्वारा व्यवसाय कंपनी चलाने पर पांच प्रतिशत दिया जाता है।

अन्य राज्यों की लॉटरी :

भारत में यदि कोई राज्य अपनी स्वयं की लॉटरी संचालित करता है, तब वह अपने क्षेत्र में अन्य राज्यों के टिकिटों के विक्रय पर बंदिश नहीं लगा सकता। मगर अमरीका में कोई भी राज्य अपने ही राज्य में अपनी टिकिटों का विक्रय करा सकता

है। यदि कोई खिलाड़ी अमरीका में अन्य राज्य में भ्रमण के लिए जाए तो वहां लॉटरी खेल सकता है। परंतु पुरस्कार प्राप्ति के प्रकरण में उसे उसी राज्य से उस टिकिट का पुरस्कार लेना होगा। यही बात अमरीका की अंतर्राज्जीय लॉटरियों पर लागू होती है। यदि कोई खिलाड़ी ऐसे राज्य का निवासी है जहां लॉटरी संचालित नहीं होती, तब वह अपने गृह राज्य के बाहर भी लॉटरी लगा सकता है। यदि बाद में उसे पुरस्कार की जानकारी मिलती है, वह अपने गृह राज्य से ही पुरस्कार का दावा कर सकता है। ऐसा इसलिए है कि वहां प्रतिबंध लॉटरी के विक्रय पर ही है, ना कि लॉटरी की खरीदी पर।

अन्य नियम :

दक्षिण डकोटा लॉटरी ने निर्दिष्ट किया गया है कि जो संविदाकर्ता टिकिटें, सामग्री और अन्य सेवाओं की आपूर्ति करता है, वह कोई तोहफा, उधार या किसी प्रकार की रिश्वत कमीशन के सदस्य को या लॉटरी के कर्मचारियों को नहीं दे सकता।

अज़रबैजान में संचालकों को परिणाम निकाल के एक घंटा पहले एस.सी.एस. को अविक्रित टिकिटों और उन्हें नष्ट करने की विधि संबंधी रिपोर्ट भेजनी पड़ती है। परिणाम से तीन दिनों के भीतर परिणामों की रिपोर्ट अज़रलॉटरेया के द्वारा एस.सी.एस. को प्रस्तुत करनी पड़ती है। ये परिणाम निकाल के तीन दिनों के भीतर प्रकाशित हो जाने चाहिए।

सभी देश और राज्य उस एजेंट के लाइसेंस को निरस्त कर सकते हैं जो नियमों का पालन नहीं करता है। जैसे अवयस्क खिलाड़ियों को टिकिट बेचना, टिकिटों के साथ, विशेषकर खुरच खेलों के साथ हेराफेरी करना और पुरस्कार राशि का संपूर्ण भुगतान ना करना या हिस्सों में करना। ब्रिटेन में प्रथम वर्ष में ही सत्ताईस फुटकर एजेंटों के लाइसेंस निरस्त कर दिए गए थे। ट्रिनिदाद और टोबेगो में कोई भी एजेंट लॉटरी बोर्ड के साथ हुए इकरारनामों को दो माह का नोटिस देकर समाप्त कर सकता है।

भारत में वर्तमान नीति के अनुसार लॉटरी का व्यवसाय, जुआ और सट्टा विदेशी लागत लगाने वालों के लिए नहीं खुले हैं, जो एफ. डी.आई., एफ.आई.आई. पोर्टफोलिओ इनवेस्टमेंट, एन.आर.आई./ओ.सी. बी. पोर्टफोलियो इनवेस्टमेंट और एन.आर.आई./ओ.सी.बी इनवेस्टमेंट के साथ गैर प्रत्यावर्तन पर आधारित है। बड़ी पूंजी लगाने वाले, जोखिम उठाने वाले विदेशियों के लिए भी लागत लगाने पर प्रतिबंध है। मिन्नेसोटा राज्य लॉटरी में विज्ञापन का व्यय सकल आय के 2.75 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।

कुल 120 देशों में जहां लॉटरी संचालित की जाती है, चीन ही एकमात्र ऐसा देश है जिसने अपनी लॉटरी के नियमन के लिए कोई कानून निर्मित नहीं किया है।

भारत में लॉटरी नियमितिकरण अधिनियम–1998 के अंतर्गत निम्नलिखित राज्यों ने लॉटरी के नियम लागू किए हैं।

क्र.	राज्य	नियम/अधिनियम का नाम
1.	केरल	केरल राज्य लॉटरी और ऑनलाइन लॉटरी नियम, सन् 2003
2.	कर्नाटक	1. लॉटरी कर पर कर्नाटक का विधान, सन् 2003 2. कर्नाटक कंप्यूटरीकृत नेटवर्क लॉटरी नियम, सन् 2001
3.	पंजाब	1. पंजाब राज्य लॉटरी (पृथम संशोधन) नियम, 2001
4.	जम्मू और कश्मीर	जम्मू और कश्मीर राज्य लॉटरी नियम, 2004
5.	राजस्थान	राजस्थान राज्य कम्प्यूटरीकृत नेटवर्क लॉटरी नियम, 2003

6.	हरियाणा	हरियाणा राज्य ऑनलाइन लॉटरी (विनियम) नियम, 2002
7.	मिज़ोरम	मिज़ोरम राज्य लॉटरी नियम, 2000
8.	महाराष्ट्र	1. महाराष्ट्र राज्य ऑनलाइन लॉटरी (विनियम) नियम 2001
		2. महाराष्ट्र राज्य लॉटरी नियम
9.	तमिलनाडु	1. तमिलनाडु राज्य ऑनलाइन लॉटरी (विनियम) नियम, 2002
		2. तमिलनाडु राज्य लॉटरी (विनियम) नियम, 2002
10.	मेघालय	मेघालय राज्य लॉटरी नियम, 2002
11.	हिमाचल	हिमाचल प्रदेश राज्य लॉटरी नियम, 1999
12.	अरुणाचल प्रदेश	अरुणाचल प्रदेश राज्य लॉटरी नियम, 2001

19. भारत की राज्य लॉटरियां

अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश में लॉटरी का संचालन सन् 1980 में हुआ। प्रारंभ में राज्य सरकार ने कुछ समितियां निर्मित की और उन्हीं के जिम्मे लॉटरी संचालन का कार्य सौंप दिया। जब लॉटरी की स्थिति के बारे में कानूनी दिक्कतें होने लगी, तब शासन ने स्वयं ही उसका संचालन आरंभ कर दिया। यह वित्त मंत्रालय के अधीन है। वर्तमान में अरुणाचल प्रदेश शासन ने ऑनलाइन और साथ ही कागज़ लॉटरी के लिए कुछ सहमति पत्रों में प्रविष्टि की है।

कर्नाटक

कर्नाटक राज्य लॉटरी का संचालन सन् 1969 में हुआ। इसके विक्रय के एकमात्र एजेंट एम.एस.आई.एल (मैसूर सेल्स इंटरनेशनल लिमिटेड) है, जो एक सरकारी उपक्रम है और प्रारंभ से यही लॉटरी संचालित कर रहे हैं।

प्रारंभ से ही कर्नाटक में लॉटरी लोकप्रिय रही है। सन् 1985 में शासन ने उन पर विक्रय कर लगा दिया जिसे बाद में वापिस ले लिया गया। वर्तमान में लॉटरी कर से प्राप्त होने वाली आय लगभग सौ करोड़ रुपये है।

कर्नाटक में लॉटरी का व्यवसाय तेजी से चलता रहा। शासन को कागज़ और ऑनलाइन लॉटरी से जुलाई सन् 2004 तक 300 करोड़

gpl lottery ka khel.indd 115 11/15/2007 4:07:00 PM

रुपये प्रतिवर्ष की आय होती रही जिसके बाद ऑनलाइन लॉटरी बंद कर दी गई। यहां लॉटरी अच्छा व्यवसाय कर रही थी, संचालन के प्रथम वर्ष में ही संचालकों द्वारा 100 करोड़ रुपये की आय अर्जित की गई जो सभी राज्य शासनों की ऑनलाइन लॉटरी से होने वाली आय सर्वाधिक थी। इस राशि का उपयोग अपरान्ह भोजन योजना 'अक्षरदसोहा' के लिए किया जाता था। 300 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष की इस परियोजना से शासन प्राथमिक शाला के बच्चों को अपरान्ह भोजन उपलब्ध कराता था। परंतु वर्तमान प्रतिबंध के कारण शासन ने घोषणा की है कि इस परियोजना को चलाने के लिए वह निधि उपार्जन के अन्य साधनों की तलाश करेगा।

कर्नाटक शासन ने फरवरी सन् 2004 से भूटान और अन्य छः राज्यों की कागज़ टिकिटों को अपने राज्य में विक्रय के लिए प्रतिबंधित कर दिया। इसका कारण यह था कि उन राज्यों ने राज्य लॉटरी नियम सन् 1999 के अधीन संबंधित दस्तावेज और विवरण प्रस्तुत नहीं किए। कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद मार्च 2004 में प्रतिबंध उठा लिया गया।

एम.एस.आई.एल. अनेक साप्ताहिक परिणाम प्रस्तुत करता है जो बहुत लोकप्रिय हैं। कर्नाटक में लॉटरी की योजनाएं, पुरस्कार संरचना, पुरस्कारों की संख्या और मुद्रणीय टिकिटों की संख्या शासन द्वारा तय की जाती है और एम.एस.आई.एल. उनको क्रियान्वित करता है। बंपर परिणाम और नियमित लॉटरी का प्रथम और द्वितीय पुरस्कार विक्रय किए हुए टिकिटों से घोषित किया जाता है। 31 मार्च 2007 से कर्नाटक सरकार ने लॉटरी की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया है।

केरल

डी.सी. किज़ाकेमुरी केरल के प्रकाशन उद्योग के स्थापक थे। उन्होंने सन् 1966 में कोट्टायम में बाल ग्रंथालय प्रारंभ करने के लिए लॉटरी चलाई। टिकिट का मूल्य 1 रुपया था और पुरस्कार के रूप में एक एम्बेसडर कार रखी गई। पुरस्कृत टिकिटों के निकाल के लिए परिणाम निकालने वाली मशीन का उपयोग किया गया। उस समय

के मुख्य न्यायाधीश श्री शंकर और एफ.ऐ.सी.टी. के प्रबंध संचालक श्री एम.के.के. नायर ने लॉट निकाले। लॉटरी के द्वारा 4.25 लाख की आय हुई। तदन्तर डी.सी. किज़ाकेमुरी और रूस में भारत के राजदूत श्री के.पी.एस. मेनन ने कोट्टायम लोक ग्रंथालय की स्थापना के लिए राज्यपाल से अनुमति प्राप्त कर ली। उन्हें इससे 4.85 लाख की आय हुई। उन्होंने एक साहित्य पुरस्कार की वित्तीय व्यवस्था के लिए दूसरी लॉटरी चलाई। अन्य बहुत से संगठन जैसे कोट्टायम नगरपालिका और बेसालियस कॉलेज ने भी उसी तरह लॉटरियां संचालित की। श्री किज़ाकेमुरी ने बताया कि उनके द्वारा संचालित लॉटरी पहली नहीं थी। क्विलॉन की एक महिला संगठन ने सर्वप्रथम ऐसा किया था। शासकीय संरक्षण में स्वास्थ्य विभाग द्वारा परिवार कल्याण सेवाओं के लिए लॉटरी संचालित की गई।

तत्पश्चात् शासन ने राज्य द्वारा प्रायोजित लॉटरी चलाने का निर्णय लिया क्योंकि बहुत सी निजी लॉटरियां श्रमिक वर्ग का शोषण कर रही थी। इस निर्णय के पीछे श्री पी.के. कुंजू साहब की सोच थी। इसलिए सन् 1967 में राज्य लॉटरी संचालनालय स्थापित हुआ और जनाब सैयद मोहम्मद उसके प्रथम संचालक नियुक्त हुए। इस मौके पर लॉटरी चलाने के लिए श्री किज़ाकेमुरी के परामर्श और सुझावों पर अमल किया गया। उन्होंने ना केवल परिणाम निकालने के लिए शासन की मदद की, परंतु अपनी परिणाम निकालने की मशीन भी शासन को भेंट कर दी।

लॉटरियां कर विभाग के क्षेत्र में आती हैं। एजेंसियों का पंजीकरण, उनका पुर्ननवीनीकरण और 5000 रुपये तक के पारितोषकों का वितरण जिला लॉटरी कार्यालय द्वारा किया जाता है। संपूर्ण नियंत्रण, पुरस्कार और दूसरे राज्यों की लॉटरी के एजेंट संचालनालय के अधीन कार्य करते हैं। प्रारंभ में केवल एक साप्ताहिक परिणाम होता था। वर्तमान में 'चैतन्य', 'पैरियार', 'केराली' और 'सौभाग्य' नामक चार साप्ताहिक लॉटरियां चलती हैं। समय–समय पर बंपर पुरस्कार राशि वाले लॉटरियां

भी प्रचलित की जाती हैं जिनमें पचास लाख से लेकर एक करोड़ रुपये तक के पुरस्कार का निकाल किया जाता है जिनकी टिकिटों का मूल्य बीस, तीस और पचास रुपये होता है। टिकिटों का मुद्रण शासकीय या प्रतिभूति प्रेस में होता है। शासन उन न्यायाधीशों का नामांकन करता है जिनके पर्यवेक्षण में परिणाम निकाले जाते हैं। सन् 2003 में लॉटरी से प्राप्त होने वाली कुल आय 139 करोड़ रुपये थी, जिससे 13.45 करोड़ रुपयों का लाभ शासन को मिला।

महाराष्ट्र

बढ़ती हुई विकास आवश्यकताओं के लिए वित्त व्यवस्था हेतु महाराष्ट्र ने सन् 1969 में लॉटरी बोर्ड की स्थापना वित्त मंत्रालय के अधीन की। वहां लॉटरियां अल्प बचत आयुक्त और राज्य लॉटरी के द्वारा संचालित होती हैं।

जब महाराष्ट्र लॉटरी अस्तित्व में आई, तब प्रतिमाह एक परिणाम निकाला जाता था। वर्तमान में इन्हें दैनिक, साप्ताहिक और मासिक लॉटरी में श्रेणीबद्ध किया गया है, इसके अतिरिक्त सोमवार से शनिवार तक बंपर पुरस्कार लॉटरी और साप्ताहिक लॉटरी चला करती हैं। "आकर्षक पुश्कराज" मासिक परिणाम वाली योजना है। बंपर लॉटरी की अलग–अलग नाम वाली लॉटरियां चलती है, जैसे – गणतंत्र दिवस, 'गुडी पाड़वा', महाराष्ट्र दिवस, दीवाली, महाराष्ट्र नतल बंपर, प्रजासत्तक और श्री भव्यतम (गणेश उत्सव)।

यद्यपि ये लॉटरियां लोकप्रिय थीं, महाराष्ट्र का वार्षिक व्यवसाय तुलनात्मक रूप से दूसरे राज्यों से कम था। इसलिए लॉटरी नियमितिकरण नियम 2000 के अन्तर्गत शासन ने दो अंकों की लॉटरी जुलाई सन् 2001 में जारी की। एक अलग उपनिदेशक कार्यालय की स्थापना 2–डी लॉटरी खेलों के लिए की गई। ये अलग–अलग पुरस्कार की योजनाओं वाले खेल लोकप्रिय हैं और इसलिए उनकी संख्या भी अधिक है। दो संचालकों द्वारा संगठित लॉटरियों से शासन को अनुमानित रूप से 50 करोड़ रुपयें की आय होती है। शासन ने कागज़ लॉटरी के कुछ हिस्से को

ऑनलाइन लॉटरी के रूप में विक्रय करने की अनुमति भी दी है। भूतकाल में महाराष्ट्र शासन ने ऑनलाइन लॉटरी के लिए दो बार निविदाएं आमंत्रित की, परंतु दोनों अवसरों पर लॉटरियां असफल रही और संचालकों ने कुछ समय पश्चात् अपने लाइसेंस वापस कर दिए।

मेघालय

मेघालय लॉटरी आबकारी, पंजीयन, कर और मुद्रांक विभाग (ई.आर.टी.एस.) के अंतर्गत कार्य करती है। सन् 1982 में प्रारंभ हुई लॉटरी ने कुछ प्रतिबंधों का सामना भी किया हैं। पारंपरिक लॉटरियां वर्तमान में कागज़ लॉटरी और ऑनलाइन लॉटरी के रूप में विक्रय की जाती हैं।

मिज़ोरम

मिज़ोरम राज्य लॉटरी मार्च सन् 1986 में अतिरिक्त वित्तीय स्त्रोतों के लिए शुरू हुई। लॉटरी आय से खेलकूद और अन्य सामुदायिक विकास की परियोजनाओं के विकास हेतु सहायता मिलती है। वर्ष 2003 के वित्तीय वर्ष के अन्त तक शासन को लॉटरी द्वारा 5.5 करोड़ रुपये की आय हुई हैं। यहां लॉटरियां वित्त विभाग की संस्थागत वित्त और अल्प बचत शाखा द्वारा संचालित की जाती हैं।

नागालैंड

नागालैंड राज्य लॉटरी के संचालनालय की स्थापना के बाद नागालैंड में सन् 1972 में लॉटरी आरंभ हुई। इस संचालनालय ने नागालैंड लॉटरी टिकिट की संपूर्ण भारत में विपणन के लिए केवल एक वितरक की नियुक्ति की है। विभाग ने दिसम्बर सन् 2002 में ऑनलाइन लॉटरी शुरू की। क्योंकि राज्य के पास आय के लिए अन्य कोई ठोस स्त्रोत नहीं है, इसलिए उसके आय के स्त्रोत में लॉटरी का विशेष स्थान है। वर्तमान में यहां कागज़ और ऑनलाइन लॉटरी दोनों ही प्रचलित हैं।

पंजाब

पंजाब राज्य लॉटरी सन् 1969 में आरंभ हुई। अवैध सट्टा और

मटका पर प्रतिबंध लगाने और राज्य कोष में अधिकतम आय प्राप्त करने के लिए लॉटरी संचालनालय की स्थापना वित्त विभाग के अंतर्गत की गई। वर्तमान में इनसे राज्य को 190 करोड़ रुपये से अधिक का योगदान मिलता है। विभिन्न कागज़ लॉटरी से पुरस्कारों की योजना के तहत 80 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक की राशि का भुगतान होता है। परिदृश्य के बदलने पर संचालनालय ने एकाधिकार प्राप्त विक्रय एजेंट को कंप्यूटर टर्मिनल के माध्यम से इंटरनेट तकनीक का उपयोग करते हुए लॉटरी टिकिट विक्रय करने की अनुमति प्रदान की है।

पंजाब राज्य लॉटरी बंपर लॉटरी योजना भी चलाती है जो अत्यधिक लोकप्रिय है। इसमें सौ रुपया (न्यूनतम पुरस्कार) से लेकर 1.50 करोड़ रुपये (प्रथम पुरस्कार) के पुरस्कार रखे गए हैं। प्रथम पुरस्कार केवल बिकी हुई टिकिटों पर ही दिया जाता है।

पंजाब में कागज़ लॉटरी का ऑनलाइन विक्रय सन् 2002 के आखिर में किया गया। यद्यपि ऑनलाइन लॉटरी के विक्रय में पन्द्रह प्रतिशत से बीस प्रतिशत की वृद्धि हुई, इसके बाद भी कुछ लोग कागज़ लॉटरी को पसंद करते हैं। लुधियाना, जलंधर और पटियाला जैसे शहरों में ऑनलाइन लॉटरी टर्मिनल की अधिकतम संख्या पाई जाती है।

सिक्किम

सिक्किम में लॉटरी संचालन सन् 1979 में आरंभ हुआ। वर्तमान में वित्त, राजस्व एवं व्यय विभाग के लॉटरी संभाग द्वारा ऑनलाइन लॉटरी, द्वि–अंकीय और पारम्परिक कागज़ लॉटरी चलाई जाती है। विभाग ने कागज़ लॉटरी के एक हिस्से को ऑनलाइन बेचने की अनुमति भी दी है।

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल में लॉटरी स्वंतत्रता के पूर्व समय से चली आ रही है। सन् 1803 में लॉर्ड वैल्लस्ली ने शहर के लिए एक विकास समिति निर्मित की थी जिसने मार्ग निर्माण और सार्वजनिक भवनों के निर्माण

हेतु लॉटरी के द्वारा धन उपार्जन की व्यवस्था की। 1817 में विकास समिति का नाम लॉटरी समिति कर दिया गया। सन् 1813 में टाउन हॉल का निर्माण आज भी बंगाल लॉटरी निधि से निर्मित इमारत का जीवंत उदाहरण है।

सन् 1788 में थॉमस पैरी, जिनके नाम पर पैरीज़ कार्नर आज भी कायम है, मद्रास आए और वहां अन्य व्यवसाय के साथ–साथ बंगाल लॉटरी टिकिट का विक्रय कार्य भी किया।

यहां निजी लॉटरियां भी प्रचलित थी जिसमें उल्लेखनीय है डॉन बॉस्को धर्मार्थ संस्थाएं, जिन्होंने लोकहित के लिए निधि एकत्रित की। शासन ने सन् 1970 में अपनी लॉटरी शुरू की और सन् 1984 में विक्रय कर लागू किया।

इंग्लिश हेरिटेज के लंडन क्षेत्र के संचालक, फिलिप डेवीज़ कलकत्ता के स्थापत्य विरासत के पुर्नउद्धार के लिए शासन की सहायता कर रहे हैं। इस कार्य के वित्तीय स्त्रोत के लिए उन्होंने एक हेरिटेज लॉटरी का परामर्श दिया है।

संचालित लॉटरी से राज्य को छः करोड़ की वार्षिक आय प्राप्त होती है, हालांकि राज्य में 300 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष अर्जित करने की क्षमता है। यद्यपि शासन ने सन् 1984 में विक्रय कर लगा दिया था, परंतु वर्तमान में अन्य कोई क्र लॉटरी पर नहीं लगाया गया है।

वे राज्य जहां वर्तमान में लॉटरी प्रचलित नहीं हैं :

गोवा

गोवा में पुर्तगाली सरकार ने प्रोवेडोरिया दे असिस्टेंस पब्लिका (Provedoria de Assistance Publica) के लिए वित्तीय आय प्राप्त करने के लिए लॉटरी शुरू की। निजी रूप से संचालित प्रोवेडोरिया अब भी जारी है। इस राजस्व का उपयोग अनाथालयों, वृद्धाश्रमों और आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों की सहायतार्थ सामाजिक कल्याण परियोजनाओं के लिए किया जाता था। गोवा की लॉटरियां कोंकण तट पर विशेषतः

लोकप्रिय थी। स्वतंत्रता के उपरांत भी इसी संस्था द्वारा लॉटरी का संचालन होता रहा। जब गोवा का राज्य केन्द्रशासित ना होकर केवल राज्य हो गया, तब गोवा शासन ने राज्य लॉटरी संचालित की।

हरियाणा

हरियाणा की राज्य लॉटरी सन् 1968 में शुरू हुई, जिस पर वर्ष 2005 में प्रतिबंध लगा दिया गया और तब से यहां लॉटरी बंद है।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश ने सन् 1979 के नववर्ष पर अतिरिक्त वित्तीय व्यवस्था के लिए राज्य लॉटरी प्रारंभ की। सन् 1979 के पहले शासन से अनुमोदित कुछ निजी लॉटरियां चला करती थीं, परंतु उन्हें सन् 1999 में बंद कर दिया गया। शासन ने सभी लॉटरियां फरवरी सन् 2004 से प्रतिबंधित कर दी है।

मणिपुर

राज्य द्वारा कागज़ और ऑनलाइन दोनों तरह की लॉटरियां संचालित की गई थी। परंतु वर्तमान में शासन कोई भी लॉटरी योजना नहीं चला रहा है।

तमिलनाडु

चेन्नई शहर में, जिसे मद्रास कहा जाता था, सन् 1700 के अंत में ब्रिटिश शासन द्वारा लॉटरी शुरू की गई थी। जिस इमारत में आज सेंट जार्ज म्यूजियम स्थित है, उसका निर्माण सन् 1795 में किया गया था। ऊपर के बड़े हॉल का नाम पब्लिक एक्सचेंज हॉल या लॉन्ग रूम था। अन्य गतिविधियों के अलावा, लॉटरी के परिणाम इसी हॉल में निकाले जाते थे।

आधुनिक तमिलनाडु रैफल्स योजना जो वर्तमान लॉटरी है, तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री सी..एन. अन्नादुराई द्वारा पन्द्रह अगस्त सन् 1968 में प्रारंभ की गई। इसका उद्देश्य विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के लिए वित्तीय स्त्रोत पैदा करना था। प्रथम वर्ष में ही शासन को 461

लाख रुपये की आय हुई। सितम्बर 1975 और अगस्त 1976 के बीच इसे निलम्बित कर दिया गया। परंतु बाद में पुनः शुरुआत की गई। फिर जनवरी 2003 में संपूर्ण राज्य में लॉटरी प्रतिबंधित हो गई। परंतु सन् 2006 में मुख्यमंत्री श्री के. करूणानिधि ने लॉटरी के पुर्नसंचालन हेतु घोषणा की।

त्रिपुरा

त्रिपुरा के वामपंथी शासन ने एक निजी संचालक के सहयोग से सन् 2004 में अपनी लॉटरी फिर से प्रारंभ की। परंतु अनियमितताओं के कारण उनकी आपस की संविदा सन् 2006 में समाप्त हो गई।

gpl lottery ka khel.indd 124 11/15/2007 4:07:01 PM

20. विश्व की लॉटरियां

ऑस्ट्रेलिया

पश्चिम ऑस्ट्रेलिया :

पश्चिम ऑस्ट्रेलिया की राज्य लॉटरी 'लॉटरीवेस्ट' है, जिसका पूर्ववर्ती नाम 'द लॉटरीज कमीशन ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया' था। लॉटरीवेस्ट शासकीय उद्यम मंत्रालय के तत्वावधान में कार्य करता है।

लॉटरी कमीशन अधिनियम सन् 1990 के अनुसार लॉटरी से होने वाली आय का वितरण किया जाता है। सन् 2005 में लॉटरीवेस्ट ने लॉटरी के विक्रय से 520 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर की आय प्राप्त की। उसने पश्चिमी आस्ट्रेलियाई समुदाय के मध्य 163 मिलियन, स्वास्थ्य क्षेत्र में 78 मिलियन, खेलकूद के लिए 10 मिलियन, कला के लिए 10 मिलियन और विभिन्न धर्मार्थ संगठनों – जैसे 'सर्फ लाइफ सेविंग वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया', 'सी सर्च एंड रेस्क्यू', 'एबोरिजिनल कॉर्पोरेशन', 'लैंडकेयर ग्रुप' और 'हेरिटेज कन्सर्वेशन प्रोजेक्टस्' के लिए 1372 अनुदानों द्वारा 65 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर प्रदत्त किए।

विक्टोरिया, तस्मानिया और उत्तरीय क्षेत्र को छोड़कर जहां लॉटरी टैटरसॉल्स द्वारा चलाई जाती है, हर राज्य की अपनी लॉटरी हुआ करती है। त्वरित खुरच खेलों में 'आउट बेक एडवेंचर', सॉकर पूल और कैश–3 सम्मिलित हैं।

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया लॉटरी (एस.ए.एल.) :

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया में सन् 1967 में लॉटरी प्रारंभ की गई जिसका उद्देश्य था – 'इच्छाओं को साकार करें'। जब राज्य पार्लियामेंट ने

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया में लॉटरी कमीशन की स्थापना के लिए एक विधेयक पारित किया, तब यहां लॉटरियां शुरू हुई।

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया और न्यू साउथ वेल्स ऑस्ट्रेलिया के पहले राज्य थे जिन्होंनें सन् 1970 में तात्कालिक खेलों की शुरुआत की। दूसरे राज्यों ने उन्हें सन् 1980 में शुरू किया। त्वरित मुद्रा खेल या इन्सटेंट स्क्रेचीज़ की स्थापना एस. ए. एल. द्वारा की गई। सन् 1984 में ऑनलाइन लॉटरी शुरू हुई। जनवरी सन् 1989 में कुल आय एक अरब डॉलर तक पहुंच गई। सन् 1994 में एस.ए.एल. ने 'इज़ी–प्ले' क्लब शुरू किया। यह क्लब अन्य फायदों के अलावा, खिलाड़ियों के पुरस्कारों को सुरक्षा प्रदान करता है। सन् 2005 में एस.ए.एल. ने 89 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर राज्य अस्पताल निधियों में योगदान के रू प में दिए। प्रारंभ से वह राज्य को 1.6 अरब ऑस्ट्रेलियाई डॉलर का योगदान दे चुका है।

गोल्डन कास्केट लॉटरी कॉरपोरेशन :

क्वींसलैंड के गोल्डन कास्केट लॉटरी कॉरपोरेशन पर शासन का आधिपत्य है। वह विगत 85 वर्षो से कार्यरत है। सन् 2004 में गोल्डन कास्केट का वार्षिक सकल व्यवसाय 813 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर से भी अधिक हो गया और उसमें से 204 मिलियन शासकीय कोष में सामुदायिक परियोजनाओं के लिए जमा किया गया। सन् 1916 में प्रारंभ प्रथम गोल्डन कास्केट ड्रॉ की परिकल्पना 'क्वींसलैंड पैट्रियॉटिक' निधि की मनोरंजन समिति द्वारा प्रथम विश्व युद्ध के सेवानिवृत्त अनुभवी सैनिकों की सहायतार्थ वित्त उपार्जन के लिए की गई। पहला निकाल सन् 1917 में आयोजित किया गया जिसमें 5000 स्टर्लिंग पौंड के मूल्य का स्वर्ण कास्केट उन्हें प्रदान किया गया, जो सैनिकों के तीस वर्षों के वेतन के बराबर था। उस समय नकद पुरस्कार नहीं दिया जाता था, इसलिए उसके एवज में कास्केट को पुरस्कार स्वरूप दिया गया। उसी कास्केट को उसके मूल्य का नकदी भुगतान कर वापिस खरीद लिया गया था।

वर्तमान में निगम द्वारा 'गोल्ड लॉटो', 'ऑज़ लॉटो', 'पॉवर बॉल',

तात्कालिक खेल, 'द पूल्स' और 'कास्केट' संचालित किए जाते हैं।

राज्य द्वारा पुरस्कारों पर और अंतर्राज्जीय ब्लॉक खेलों पर भी कोई कर नहीं लगाया जाता।

गोल्डन कास्केट द्वारा मातृत्व (द मदरहुड), शिशु स्वास्थ्य (चाइल्ड वेल्फेयर) और अस्पताल निधि जैसी विभिन्न सामुदायिक परियोजनाओं को योगदान दिया जाता है। ऐसा ही योगदान 'बुश नर्सिंग एसोसिएशन', 95 प्रसव चिकित्सालय, 150 शिशु अस्पताल, शिशुसदन, बालविहार, टी. बी. सैनिकों की गृह निर्माण योजना, मेटर शिशु अस्पताल न्यास, कैंसर अभियान समिति, ऑस्ट्रेलियाई सैनिकों की प्रत्यावर्तन निधि और युद्ध में मृत सैनिकों की विधवाओं और उनके परिवारों के लिए एन्ज़ा मकानों (Anza cottages) के निर्माण हेतु दिया जाता है। **गोल्डन कास्केट के आर्थिक योगदान के कारण सार्वजनिक अस्पतालों में निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं देना संभव हो सका है।**

क्वींसलैंड लॉटरी की निधि से लाभान्वित होने वाली अन्य संस्थाएं हैं – क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी, रेडक्रॉस, 'सर्फ लाइफ सेविंग एसोसिएशन', 'क्वींसलैंड कंट्री विमेन्स एसोसिएशन', सिस्टर एलिज़ाबेथ केनी के पोलियो निदानगृह और 'क्वीन्सलैंड परफार्मिंग आर्ट्स कॉम्पलेक्स'।

विक्टोरिया :

विक्टोरिया का लॉटरी संचालक है स्वीप कन्सल्टेशन। सन् 1881 में स्थापित टैटरसाल्स ऑस्ट्रेलिया की सबसे बड़ी निजी कंपनी है। इसके स्थापक जॉर्ज ऐडम्स ने सिड्नी कप पर सन् 1881 में स्वीप लॉटरी स्थापित की। 'वेन डिमेन्स लेण्ड' के बैंक और तस्मानिया की गिरती हुई अर्थव्यवस्था के कारण उनका व्यवसाय मज़बूत बनता गया।

टैटरसाल्स द्वारा वर्तमान में शनिवार टेट्स्लॉटो, बुधवार टेट्स्लॉटो, बुधवार टॉल्सलॉटो, 'पॉवर बॉल', 'ऑज़ लॉटो', 'सुपर–66', 'पूल्स', 'टैट्स केनो' और तात्कालिक खुरच खेल जैसे खेल चलाए जाते हैं। शनिवार टेट्स्लॉटो के साथ सुपर–66 का खेल जोड़ा गया है।

परिणामसूचक मशीन के 6 खंड होते हैं, प्रत्येक में 0 से 9 तक की संख्या से अंकित दस गेंदें रहती हैं। हर खंड से एक–एक गेंद निकाली जाती है और छः गेंदें छः अंकों वाली सुपर 66 की संख्या उसी क्रम में देती हैं जिसमें उन्हें निकाला जाता है।

टैटरसाल्स कंपनी अपनी लॉटरी निधि से 600 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर का योगदान देती हैं। जॉर्ज ऐडम्स की वसीयत के अनुसार टैटरसाल्स भिन्न–भिन्न गैर सरकारी संस्थानों को अनुदान देती है जो अत्यधिक बीमार बच्चों वाले परिवारों की सहायता करती है, आश्रय देती है, ज़रूरतमन्द बच्चों को शिक्षित करती है और अन्य कार्यों के अलावा विकलांगों की देखरेख करती है। यही संस्था सम्पूर्ण विश्व में मानवीय सहायता भी देती है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में लाभान्वित होने वाली अन्य संस्थाएं हैं – 'रॉयल चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल', 'वेरी स्पेशल किड्स', 'रॉयल डिस्ट्रिक्ट नर्सिंग सर्विस', 'एल्फ्रेड हॉस्पिटल', 'वेस्ट–विम्मेरा हेल्थ सर्विस', 'मेन्टल हेल्थ फाउंडेशन', 'गैन्डरा पैलीएटिव केर यूनिट', 'नॉर्दन हॉस्पिटल', 'सेंट विन्सेंट हॉस्पिटल' और 'पीटर मेकेल्कम कैंसर इंन्स्टीट्यूशन'।

ऑस्ट्रेलिया की रेड क्रॉस, सी.ए.आर.इ. ऑस्ट्रेलिया, विक्टोरिया की एम.एस. सोसाइटी, 'राइडिंग फॉर द डिसेबल्ड एसोसिएशन', 'सेव द चिल्ड्रन', 'हार्टली लाइफकेयर', 'मल्ली फेमिली केर' और बच्चों के लिए टी.एल.सी. अन्य धर्मार्थ संस्थाएं हैं जिन्हें टैटरसाल्स से सहायता मिली है।

न्यू साउथ वेल्स :

सन् 1931 की महामन्दी के दौरान शासकीय स्वामित्व के निगम का राज्य लॉटरी कार्यालय स्थापित हुआ। जैक लैंग के नेतृत्व में यह निर्णय न्यू साउथ वेल्स की राज्य सरकार द्वारा लिया गया। इसका उद्देश्य राज्य के अस्पतालों को वित्तीय सहायता देना था। जब लॉटरी शुरू हुई, तब लोगों की लाइन लग जाती थी। पिट्ट के 'हर मैजिस्टीज़' थियेटर

gpl lottery ka khel.indd 128 11/15/2007 4:07:01 PM

में परिणाम निकाला जाता था। महान्यायवादी लामारो 100,000 काष्ठ गोलियों में से किसी एक गोली को बड़े चम्मच से निकालते थे।

सन् 1957 में सिड्नी ओपरा हॉउस के निर्माण के लिए 10 डॉलर के मूल्य की 200,000 डॉलर पुरस्कार राशि की लॉटरी टिकिटें बेची गई। सन् 1979 में प्रारंभ लॉटो लोकप्रिय खेल से अब तक 500 नागरिक लखपति बन गए हैं। तात्कालिक खुरच खेल शुरू किए गए। विक्रय का एक–तिहाई हिस्सा शासन का होता है और 60 प्रतिशत से अधिक राशि के पुरस्कार दिए जाते हैं। सन् 1982 में देशी तकनीक से निर्मित 'रैन्डम नंबर जेनरेटर' मशीन का परिणाम निकालने के लिए उपयोग किया गया। ऑनलाइन लॉटरी सन् 1988 में प्रारंभ हुई।

इस राज्य में 1600 से भी अधिक विक्रय केन्द्रों द्वारा टिकिटों का विक्रय होता है। यह प्रतिवर्ष 600 मिलियन डॉलर से भी अधिक राशि के पुरस्कार देता है। खुरच खेल में 'फन फ्लावर', 'पिंक पैंथर', 'फेरो', बिंगो, मोनॉपोली, 'विन फॉर लाइफ' और 'ब्रिटिश ट्रेज़र' जैसे खेल सम्मिलित होते हैं।

अज़रबैजान :

अज़रबैजान गणतंत्र में लॉटरी को लोकप्रिय बनाने के लिए नवम्बर 2001 में राष्ट्रपति ने डिक्री (आज्ञप्ति) पारित की जिससे अज़रलॉटरेया नामक निगम स्थापित हुआ। आर्थिक विकास मंत्रालय के अधीनस्थ प्रतिभूति राज्य समिति लॉटरियों को संचालित करती है।

टिकिट विक्रय का न्यूनतम पचास प्रतिशत सभी खेलों के पुरस्कार हेतु निश्चित किया गया हैं। 50000 मैनेट से कम की राशि के पुरस्कार वितरकों द्वारा दिए जाते हैं। इससे अधिक के पुरस्कार के लिए लॉटो यमिन कंपनी की संख्यात्मक पेटियों (कास्क) का उपयोग किया जाता है। परिणामों का टीवी पर सीधा प्रसारण किया जाता है।

अज़रलॉटरेया एक तात्कालिक लॉटरी और अंकों पर आधारित 'ऐल सेविनेइ', 'याय सेविनेइ', 'गिसमेट अचर्र' और 'उगुरलू रेजिम' नामक

खेल भी चलाता है जिसमें विभिन्न मूल्यों और पुरस्कारों वाली टिकिटें चलाई जाती हैं। इन सभी खेलों में नकद धनराशि, भूसम्पति, कारें व मोटर गाडियाँ आदि पुरस्कार दिए जाते हैं। जनता की दिलचस्पी और अधिक भागीदारी के लिए विभिन्न पुरस्कार योजनाओं के खेल आयोजित किए जाते हैं। ये सब विकसित होते जाते हैं और जनता को माध्यम के द्वारा नए, अतिरिक्त और अभिनव खेलों की जानकारी भी दी जाती है।

बेल्जियम :

बेल्जियम की कॉन्गो कोलोनी में जब आर्थिक समस्याएं उठी, तब लॉटरी की मूल आवश्यकता महसूस हुई। चार्ल्स दे ब्रॉकसिल ने बजट के घाटे की पूर्ति लॉटरी द्वारा करने का निर्णय लिया और मई 1934 में कानून बनाया गया। "औपनिवेशिक लॉटरी" के तत्कालीन नाम से अक्तूबर 1934 में सिर्क रॉयल में लॉटरी का पहला निकाल आयोजित किया गया। प्रबन्धन समिति के अनुसार इसमें बहुत सफलता नहीं मिली, यद्यपि प्रेस की रिपोर्ट कुछ अलग थी। बहुत अधिक संख्या में टिकिटें मुद्रित कर दी गई जिन्हें विक्रय करना कठिन हो गया।

सन् 1934 में रेडियो, प्रेस व सिनेमा के माध्यम से लॉटरी का प्रचार–प्रसार किया गया। सुविख्यात ग्राफिक डिज़ाइनरों के पोस्टर, पर्चों व टिकिटों के सचित्र प्रदर्शन हेतु सेवाएं ली गई ताकि वे जनता को आकर्षित कर सकें। कम संख्या में टिकिटें निकालकर उनका मौलिक मूल्य भी आधा कर दिया गया। इसके परिणाम अपेक्षित थे। इस औपनिवेशिक लॉटरी से सन् 1940 में 500 मिलियन फ्रैंक की आय हुई। इसका 60 प्रतिशत पुरस्कार राशि के लिए दिया गया और शेष राशि विकलांग हुए भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण हेतु राष्ट्रीय धर्मार्थ संस्थाओं में और अन्य बीस ऐसी ही संस्थाओं में वितरित की गई।

राष्ट्रीय लॉटरी टिकिटें वर्तमान में पुस्तकालयों, पोस्ट आफिस, सर्विस स्टेशन, सुपर मार्केट, काफी हॉउस, समाचार पत्र विक्रेताओं और ऐसे ही प्रतिष्ठानों के माध्यम से बेची जाती हैं। राष्ट्रीय लॉटरी तात्कालिक खेलों को भी आयोजित करती है। इनमें 'एस्ट्रा', 'केब्रिओ',

'क्लिओपैट्रा', 'कोरसाओ', 'लोक्सो', 'हेड्स एंड टेल्स', 'प्रेस्टो', 'शूट गोल', 'सुबिटो' और 'विन फॉर लाइफ' शामिल हैं जिनमें अलग–अलग पुरस्कार संरचना होती है। केसिनो में चार प्रकार के तात्कालिक खेल चलते हैं – ब्लैक जैक, जैकपॉट, क्रैप्स और रूलेट। तीन प्रकार की अंक–लॉटरियां के निकाल संचालित होते हैं। **राष्ट्रीय लॉटरी द्वारा 187,50,000 यूरो साप्ताहिक व्यवसाय पंजीकृत होता है।**

राष्ट्रीय लॉटरी के लाभ का वितरण करने के उद्देश्य से एक अनुदान विभाग की स्थापना की गई। वितरण रॉयल डिक्री के द्वारा किया जाता है जिसमें राजा लाभ के वितरण की प्रायोजना अपने मंत्रियों के सुझाव से बनाते हैं। लाभ का एक अंश विभिन्न कार्यक्रमों में विकासशील देशों में आव्रजनकों के कल्याणार्थ, राजनैतिक शरणार्थी, गरीबी उन्मूलन और वैज्ञानिक शोध के लिए आबंटित किया जाता है। इसी प्रकार फ्रैंच, जर्मन और फ्लेमिश भाषा बोलने वाले समुदायों के मध्य आवश्यकतानुसार वितरण किया जाता है। लाभान्वित होने वाली अन्य संस्थाओं में राष्ट्रीय आपदा निधि, द किंग बाउडोइन फाउण्डेशन, तृतीय विश्व की उत्तर जीविता निधि, विशेष ओलंपिक, क्वीन ऐलिजाबेथ संगीत प्रतियोगिता, रेड क्रॉस, मानवीय शोषण के व्यापार को रोकने वाले केन्द्र और 'चाइल्ड फोकस' शामिल हैं।

बेहतर प्रचार–प्रसार के लिए राष्ट्रीय लॉटरी एक अलग योजना वाले बहुत से कार्यक्रम प्रायोजित करती है। 'द ग्रांड प्रिक्स एंड साइकलिंग रेस ऑफ वाल्लून', 'पिनो सेरामी ग्रांड पिक्स', 'म्यूज मेरेथॉन', 'वेन डेम मेमोरियल एथलेटिक्स', 'क्रॉस कप फॉर क्रॉस कन्ट्री रेस', 'मोटोक्रॉस चैम्पियनशिप', 'बेल्जियन माउंटेन बाइकिंग कप' और 'इंटरनेशनल ट्राइएथलोन' ऐसी कुछ खेलकूद चैंपियनशिप ट्राफियां हैं जिन्हें राष्ट्रीय लॉटरियां प्रायोजित करती हैं। उसके द्वारा संगीत, साहित्य, सिनेमा, थियेटर, 'प्लास्टिक आर्ट' जैसे अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रायोजित किए जाते हैं। साहित्यिक पक्ष में लेखकों के लिए 'एस्पेस ज्यूनेस औटयर्स' जैसी प्रतियोगिताएं और चीनी लोक कथा उत्सव प्रायोजित

किए जाते हैं। जैज़, रॉक, शास्त्रीय और लोक संगीत उत्सव और प्रतियोगिताएं एवं विभिन्न ललित कला प्रदर्शनियां और विभिन्न श्रेणियों वाले वैज्ञानिक चलचित्र, रोमांचक और (एनीमेटेड) अनुप्राणित चलचित्र भी प्रायोजित किए जाते हैं।

कम्बोडिया :

सी.एल.सी. (कम्बोडिया लॉटरी निगम लिमिटेड) सन् 1992 में समाविष्ट किया गया। विदेशी निवेश और वित्त मंत्रालय के लिए संस्थापित राष्ट्रीय समिति के क्षेत्राधिकार में, सी.एल.सी. को लॉटरी संचालन का लाइसेंस मिला। सी.एल.सी. सात–अंकीय खेल संचालित करता है – 'मैग्नम', 'सी.एल.सी', 'फनोम पेन्ह नंबर्स', 'वारिसन', 'वियतनाम' और 'फॉर्चून'। 6/29 लॉटो और '36 फ्लावर्स्' नामक चीनी खेल का आधुनिक रूपांतरण भी प्रस्तुत किए जाते हैं। जुलाई सन् 2003 में लास वेगस का विन–विन गेमिंग इनकॉर्पोरेशन का प्रथम तात्कालिक खुरच खेल 'पे–डे' (Pay day) भी प्रारंभ किया गया।

केनेडा :

अटलांटिक लॉटरी निगम (ए.एल.सी.):

चार अटलांटिक प्रदेशों की सरकारों द्वारा सन् 1976 में अटलांटिक लॉटरी निगम की स्थापना की गई। इसके साझेदार हैं – न्यू ब्रुन्सविक का लॉटरी कमीशन, नोवा स्कोटिया का खेल निगम, प्रिंस एड्वर्ड आइलैंड का लॉटरी कमीशन, न्यूफॉउंडलैंड और लैब्राडोर का प्रांत।

ए.एल.सी. ने शुरुआती दौर में ए–1 नामक एक ही खेल चलाया। ए.एल.सी. ने काफी खेलों की शुरुआत करके ख्याति प्राप्त की। जैसे सर्वप्रथम ए.एल.सी. ने ही 'स्पाइल' खेल जिसे स्थानीय बोलचाल में टेग (टी.ए.जी.) कहा जाता है, शुरू किया। उसी ने सर्वप्रथम विडियो लॉटरी की केनेडा में शुरुआत की और साथ ही कॉम्बो तात्कालिक 'पुल–टैब' टिकिट चलाई। 'ट्वाइस लकी गेम' में एक तरफ खुरच खेल है तो दूसरी ओर 'पुल–टैब' भी है। सन् 1983 में पहला तात्कालिक खेल टिक–टैक–टो शुरू हुआ। अन्य खेलों में लॉटो–50, लॉटो 6/49,

बैंको खुरच खेल, बिंगो, केनो, सेट–फॉर–लाइफ खुरच खेल और 'पे–डे' सम्मिलित हैं।

ए.एल.सी. ने 'बैंक वैलीडेशन लाइन' भी शुरू की जिससे पुरस्कृत लॉटरी खिलाड़ी नोवा स्कॉटिया के बैंक से अपनी पुरस्कार राशि प्राप्त कर सकते हैं। 250 डॉलर तक के पुरस्कार फुटकर विक्रय केन्द्रों से और 10000 डॉलर तक बैंक ऑफ नोवा स्कॉटिया से और 10000 डॉलर से ऊपर के पुरस्कार ए.एल.सी कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं।

ए.एल.सी 'जूनियर अचीवमेंट्स' और 'चिल्ड्रिन्स विश' जैसे धर्मार्थ संगठन और 'कॉरनर बुक ट्राएथलन', 'विमेन्स बास्केटबॉल चैम्पियनशिप', 'जूनियर मेन्स हॉकी चैम्पियनशिप' जैसे कार्यक्रम और खेल भी आयोजित करता है।

ब्रिटिश कोलंबिया लॉटरी निगम (बी.सी.एल.सी.) :

बी.सी.एल.सी. ब्रिटिश कोलंबिया में लॅाटरी संचालित करता हैं। सन् 1974 में स्थापना वर्ष से अब तक 6 अरब डॉलर सामुदायिक और धर्मार्थ कार्यों के लिए दिए हैं और वह अन्य कार्यक्रम भी चलाता है। 'गेमिंग पॉलिसी एंड एनफोर्समेंट' शाखा लॉटरी से शासन को होने वाली आय का वितरण करती है। कैसिनो भी निगम के अधीन कार्य करते हैं, लॉटरी और कैसिनो से प्राप्त राजस्व से निगम ने 6000 से अधिक धर्मार्थ और सामुदायिक संगठनों के वित्तीय स्त्रोतों के लिए धन वितरित किया है। प्रत्येक वर्ष 4 मिलियन डॉलर की आय का विनियोजन समस्यामूलक जुए के निवारण हेतु किया जाता है। सन् 2005 में बी.सी. एल.सी. ने 914 मिलियन डॉलर का विभिन्न कल्याणकारी गतिविधियों के लिए और 8.3 मिलियन डॉलर का योगदान केनेडियन शासन को दिया था। बी.सी.एल.सी.ए. बहुत संस्थाओं की आर्थिक सहायता भी करती है जिनमें हैं पालक विहीन वन्य पशुओं के पुर्नवास हेतु समिति (ऑर्फन्ड वाइल्ड लाइफ रिहैबीलिटेशन सोसाइटी) 'बी.सी. व्हीलचेयर एसोसिएशन', सामुद्रिक बचाव समिति (ननायमो मरीन रेस्क्यू सोसाइटी) और 'पैसिफिक असिस्टेंस डॉग्स सोसाइटी'।

सन् 1991 में निगम ने पुरस्कार संख्यांक के निकाल हेतु स्वचालित ड्रॉ मशीन का उपयोग प्रारंभ किया।

बी.सी.सी. एक अनूठी 'लिविंग लार्ज लॉटरी' भी संचालित करती है। इसकी 20 डॉलर मूल्य की टिकिटों में तीन हिस्से होते हैं जो स्वतंत्र रूप से विमोच्य हैं और एक अतिरिक्त खुरच स्थान भी होता है। 'बोनस इंटरनेट कांटेस्ट', 'अर्ली बर्ड ऑप्शन' और 'मेन ड्रॉ' अन्य ऐच्छिक विकल्प हैं। । 6/49 लॉटो, बी.सी 49, डेली 3, सूपर 7, केनो, 'का–चिन्गो' और 'चेसर' नामक अन्य लॉटरी खेल प्रचलित हैं।

चीन :

सन् 1949 में जब चीन में गणतंत्र की स्थापना हुई, शासन ने सभी प्रकार के जुए पर बंदिश लगा दी। तदनन्तर सन् 1987 में 'ब्रेक ओपन' तात्कालिक टिकिटें जारी की गई। चीनी लॉटरी के विकास के साथ आधुनिक परिष्कृत मशीनें और सॉफ्टवेयर की शुरुआत भी हो चली। **अब चीनी लॉटरी के खेल रूस और कॉमनवेल्थ के अन्य (सी. आई.एस.) स्वतंत्र राष्ट्रों में प्रचलित हैं।**

चीन दो लॉटरी संचालित करता है, चीनी समाज कल्याण लॉटरी (सी.एस.डब्ल्यू.एल.) और चीनी खेल लॉटरी (सी.एस.एल.)। सन् 2000 में एक अध्ययन से यह तथ्य उद्घाटित हुआ कि दो वर्षों से भी कम की समयावधि में 11 अरब युआन मूल्य की कल्याण लॉटरी का विक्रय हुआ जो सन् 1987 के लॉटरी विक्रय से 650 गुना अधिक था। यह वर्ष लॉटरी का शुरुआती वर्ष था।

सन् 1987 से कल्याण लॉटरी ने 10 अरब युआन से भी अधिक अनुदान कल्याण निधि को दिया है। इससे 81,000 कल्याणकारी योजनाओं को लाभ पहुंचा है जिनमें 103 बाल कल्याण संस्थाएं सम्मिलित हैं और 2000 विकलांग बच्चों के इलाज को भी सुसाध्य बनाया है। सन् 2001 में सी.एस.डब्ल्यू.एल. ने वृद्धों के लाभार्थ धन उपार्जन हेतु राष्ट्रव्यापी लॉटरी प्रारंभ की। इसी लॉटरी से 15,000 काम से निकाले गए कर्मचारियों को

लॉटरी विक्रेता बनने का व्यवसाय मिला। सन् 2001 में वसन्तोत्सव और लैन्टर्न उत्सव मनाने के लिए विशेष लॉटरी भी चलाई गई।

प्रारंभ में कारों व अन्य उपकरणों के रूप में पुरस्कार दिए जाते थे, परंतु उस लॉटरी से पर्याप्त आय प्राप्त नहीं होती थी। इसलिए सन् 1999 में नागरिक मामलों के मंत्रालय ने, जो कल्याण लॉटरी चलाता था, आदेश दिया कि पुरस्कार में नकद राशि दी जानी चाहिए।

राष्ट्रीय खेल लॉटरी ने चीन के खिलाड़ियों को ओलंपिक के लिए प्रशिक्षण सुविधा हेतु आर्थिक सहायता दी जिससे वे 28 स्वर्ण पदकों के विजेता बने। सन् 2002 में जब चीन की टीम विश्वकप फुटबॉल फाइनल में प्रविष्ट हुई, तब चीन ने प्रथम बार विश्वकप लॉटरी की शुरुआत की।

सन् 1999 में शंघाई फेंगकाई लॉटरी की ऑनलाइन लॉटरी चलाने के लिए उद्घाटन हुआ। सन् 2002 में शासन ने इलेक्ट्रोनिक लॉटरी की अवधारणा को मूर्त रूप दिया जिसके माध्यम से लॉटरी के खिलाड़ी फोन पर ही लॉटरी खरीद सकते थे। **बीजिंग के स्थानीय कर–ब्यूरो ने 'रिसिप्ट लॉटरी' प्रचलित की जहां ग्राहकों को माल खरीदने पर जो रसीद मिलती थी, उन पर पुरस्कार मिलते थे। इससे ग्राहकों को रसीद प्राप्त करने का प्रलोभन मिलता था ताकि दुकान मालिकों द्वारा कर–वंचना ना हो सके और रसीदों के आधार पर उनसे कर लिया जा सके। ऐसा केवल दी हुई रसीद के द्वारा ही संभव था।**

मई सन् 2004 में एक घोटाले के कारण लॉटरी निलम्बित कर दी गई। दो माह के पश्चात खुरच टिकिटों द्वारा उन्हें फिर से आरंभ कर दिया गया।

साइप्रस :

साइप्रस शासकीय लॉटरी सन् 1958 में वित्त मंत्रालय के अधीन स्थापित हुई। देश के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सन् 1960–61 में

लॉटरी का संचालन बंद हो गया, परंतु बाद में फिर से शुरू हुआ। वर्तमान में आंकडों और तात्कालिक पुरस्कार के खेल चलते हैं। टिकिट विक्रय से प्राप्त आय का 41 प्रतिशत शासन को आर्थिक और सांस्कृतिक विकास हेतु जाता है। लॉटरी निधि से कला, संस्कृति, शिक्षा व खेलकूद के क्षेत्र लाभान्वित होते हैं।

ज़ेक गणतंत्र (Czech Republic) :

शारीरिक शिक्षा और खेलकूद की राज्य समिति द्वारा अगस्त सन् 1956 में साज़्का (SAZKA) की स्थापना की गई जो खेल के मैचों के अनुमानित परिणाम पर सट्टाबाजी का खेल संचालित करता था। प्राप्त लाभ से खेलकूद और पर्यटन क्षेत्रों को विकास हेतु सहायता दी जाती थी। इसके पहले यह स्टास्का (STASKA) नामक राज्य सट्टाबाज़ी कार्यालय द्वारा चलाया जाता था जिसे बाद में सन् 1956 में बंद कर दिया गया। सन् 1992 में साम्यवाद के पतन के बाद दो राज्यों – ज़ेक गणतंत्र और स्लोवक गणतंत्र का जन्म हुआ। ज़ेक गणतंत्र में साज़्का के द्वारा और स्लोवाकिया में स्पोर्टका के द्वारा लॉटरी संचालित होती है।

सन् 1956 में साज़्का ने अपना पहला बेटिंग खेल संचालित किया। सन् 1956 में उसने अपनी पहली आंकड़ों की लॉटरी स्पोर्टका शुरू की। दोनों खेल अभी तक चल रहे हैं। सन् 2002 में साज़्का ने केनो खेल प्रारंभ किया जिसमें हर पांच मिनट में परिणाम निकाला जाता था। अगस्त और दिसम्बर के बीच केनो से प्राप्त आय बाढ़ प्रभावित पीड़ितों को सहायता स्वरूप दी गई। अन्य अंकों वाली लॉटरियों में 6/49 'लॉटो टाइप स्पोर्टका', 5/40 'साज़्का', 'सैन्स' जोकर, 'स्टासटिंक' 10 और 'सैन्स मिलियन' जैसे खेल सम्मिलित हैं। लॉटरियां से प्राप्त सकल आय का 88 प्रतिशत अंकीय लॉटरियों से उपलब्ध होता है।

खेलकूद पर बाजी लगाने वाले खेलों में 'साज़्का', 'साज़्का सिलेक्ट', 'स्कोर प्लस' और 'साज़्का ना विटेज़' शामिल हैं। साज़्का के द्वारा सात तात्कालिक खेल संचालित हैं – 'ट्रेजॉर', 'स्टास्टना सिसला', 'स्रडिको', 'हॉरोस्कोपी', 'स्बेरेटेलेस्का लॉटेरी', 'पैन्ना–ओरेल' और 'केसिनो'।

साज़्का का मुख्य उद्‌देश्य है ज़ेक गणतंत्र में खेलकूद और शारीरिक शिक्षा की आर्थिक सहायता करना। दूसरी अन्य धर्मार्थ परियोजनाओं को भी वह सहायता करता हैं जो शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य–रक्षा के क्षेत्रों में चलाई जाती हैं। दस वर्षों में उसने 10 अरब ज़ेक (ज़ेक की करेंसी) की सहायता इन संस्थाओं को दी हैं जिनमें 'सेफ्टी लाइन साज़्का फाउंडेशन' और 'बोन मैरो ट्रांसप्लांट फाउंडेशन' प्रमुख हैं। ज़ेक गणतंत्र की सौ श्रेष्ठ व सफल कंपनियों में विभिन्न श्रेणियों में साज़्का को मतदान द्वारा श्रेष्ठ घोषित किया गया है।

डेनमार्क :

'डेनिश लॉटरी डेन्स्क टिप्सटजेनेस्ट' की स्थापना जुलाई सन् 1948 में डेनिश संसद द्वारा विशेष डेनिश पूल अधिनियम पारित होने के एक माह पश्चात की गई। इसमें डेनिश राज्य, डेनिश खेलकूद संघ (डी.आई.एफ.), डेनिश कसरत और खेलकूद एसोसिएशन (डी.जी.आई.) की क्रमशः 80 प्रतिशत, 10 प्रतिशत, और डेन्स्क टिप्सटजेनेस्ट की 10 प्रतिशत साझेदारी है। 40 वर्षों से पहले से एक ही सॉकर पूल खेल चला करता था जिसे टिप्स 1 ग 2 कहते थे। अन्य कुछ विधेयकों के पारित होने के बाद आंकड़ों की, खेलकूदों की, खुरच कार्ड खेलों की, घुड़दौड़ और कुत्तादौड़ पर आधारित लॉटरी खेलों और ऑनलाइन खेलों की प्रविष्टियां हुई।

डेनिश लॉटरी में प्रतिवर्ष 8 मिलियन डेनिश क्रोन (डेनमार्क की करेंस़ी) का व्यवसाय होता हैं। डेनिश संसद के द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार लॉटरी निधि का वितरण डेनिश संगठनों के बीच किया जाता है, जैसे विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय संघ, खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियां, धर्मार्थ संगठन, बीमारियों का उन्मूलन करने वाले संगठन, युवा गतिविधियां, अलाभ संगठन, टीम डेनमार्क, डेनमार्क ओलंपिक कमिटी और राष्ट्रीय शैक्षणिक संघ।

वर्तमान में डेनिश लॉटरी का विक्रय करने वाले 4000 फुटकर विक्रेता हैं। डेनमार्क की लॉटरी में सर्वाधिक व्यवसाय आंकड़ों के खेल

वाली लॉटरी से होता है। कुल आय का लगभग 70 प्रतिशत उनसे प्राप्त होता है। खेलकूद की बाजी से 18 प्रतिशत और खुरच कार्ड खेल से 14 प्रतिशत की आय प्राप्त होती हैं। टिप्स नामक सॉकर खेल, ऑडसेट नामक दौड़ों पर दांव लगाने वाला खेल, फुटबॉल/बर्फ पर खेले जाने वाला 'मलिजेग्ट' नामक हॉकी का खेल कुछ मुख्य खेल हैं। डेनिश स्पाइल, लॉटो गेम और केनो की प्रविष्टि सन् 1989 में हुई। सन् 1992 में 'क्विक डेंस्क टिप्सटजेनेस्ट' पहला खुरच कार्ड खेल था। डेनमार्क की ऑनलाइन लॉटरी सन् 1990 में शुरू हुई। सन् 2001 में मशीनों वाली खेल की अवधारणा की प्रविष्टि हुई। इस अवधारणा को 'पिटस्टॉप' कहते हैं और देश में इस समय तीस पिटस्टॉप संचालित हो रहे हैं।

सन् 2004 में 1.6 अरब डेनिश क्रोन (डेनमार्क की करेंसी) का व्यय अच्छे हितकारी कार्यों पर हुआ।

फ्रांस :

फ्रांस में प्रथम लॉटरी के ऐतिहासिक अभिलेख में बतलाया गया हैं कि लॉटरी का प्रारंभ सन् 1505 के लगभग राजा फ्रान्कॉइस प्रथम द्वारा किया गया। तब दो शतबदियों के लिए लॉटरी को प्रतिबंधित किया गया।

सत्रहवीं शताब्दी के अंत में लॉटरियां फिर से प्रकट हुई – ''लोटेरीदे ल' होटल दे विले'' नाम से पेरिस की नगरपालिका के लिए सार्वजनिक लॉटरी और धार्मिक संस्थानों के लिए निजी लॉटरी। **अठाहरवीं शताब्दी में लॉटरी से प्राप्त निधि का उपयोग धार्मिक मण्डलों के लिए, लगभग 15 गिरजाघरों (सेंट सलपाइस सहित) के निर्माण और पुनरुद्धार के लिए किया गया।** तत्पश्चात् राजा के द्वारा धार्मिक संस्थानों को लॉटरी संचालित करने की अनुमति दे दी गई ताकि उनकी गतिविधियों के लिए अलग से आर्थिक सहायता की आवश्यकता ना पड़े। परंतु जब लॉटरी से अच्छी आय होने लगी, राजतंत्र और गिरजाघर में लॉटरी पर आधिपत्य के लिए द्वंद शुरू हो गया। सन् 1774 में राजतंत्र के द्वारा 'लोटेरी दे एल इकोल मिलीटैर'

की स्थापना की गई और कुछ छोटी निजी लॉटरियों को छोड़कर बाकि सभी पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इस लॉटरी की शुरुआत मैडम दे पॉम्पाडौर द्वारा पेरिस में जिसे अब 'चेम्प दे मार्स' जाना जाता है, उसे खरीदकर सैनिक अकादमी की स्थापना के लिए की गई। नेपोलियन इस अकादमी का छात्र था। कुछ समय बाद यह 'लॉटेरी रॉयल दे फ्रांस' के नाम से लोकप्रिय हुई। राज्य के राजस्व का 5 से 7 प्रतिशत लॉटरी से ही प्राप्त होता था।

सन् 1789 की फ्रांस की क्रांति के बाद सन् 1791 में सभी लॉटरियों पर प्रतिबंध लग गया। सन् 1936 में जब देश का शासन समाजवादियों के नियंत्रण में आया, तब राजस्व बढ़ाने के लिए उन्होंने लॉटो लॉटरी प्रारंभ की और इस लॉटरी का फिर से 'ला फ्रैन्कॉइज़ डेस ज्यूक्स' नामकरण किया गया और अब इसका एकाधिकार है। यह एक अर्द्ध–सार्वजनिक कंपनी है जिसमें राज्य की हिस्सेदारी 72 प्रतिशत, 20 प्रतिशत की साझेदारी लॉटरी निकालने वालों की, 3 प्रतिशत एजेंट की और 5 प्रतिशत की साझेदारी कंपनी के कर्मचारियों की होती है। शासन खेलों को अधिकृत करता है, कर निर्धारण करता है और कंपनी के बजट को अनुमोदित करता है।

घानाः

घाना में राष्ट्रीय लॉटरी विभाग की स्थापना सन् 1958 में हुई। इसके द्वारा यहां लॉटो जैसे खेल और पेनाल्टी नामक एक खुरच टिकिट का खेल चलाया जाता है। निजी संचालक भी लॉटरी चलाते हैं। शासन ने इन निजी लॉटरियों को प्रतिबंधित करने का प्रस्ताव दिया था, परंतु उनके संचालकों के विरोध के चलते शासन ने सन् 2003 में 'गेमिंग बिल' वापिस ले लिया जिसके द्वारा बंदिश लगाई जानी थी। **सन् 2003 में राष्ट्रीय लॉटरी ने 'सोशियल रैफल' नामक नया खेल जारी किया। इसके साथ नई अभिनव योजनाओं को क्रियांवित किया गया। इसके अनुसार खेल के प्रत्येक परिणाम की आय विशेष सामाजिक परियोजनाओं के लिए आबंटित होगी। विजेता को**

उस परियोजना का चुनाव करना पड़ता है जिसके लिए आय का उपयोग होगा। उस विजेता का नाम लॉटरी की आय से लाभान्वित स्कूल या अस्पताल या अन्य परियोजना में अंकित किया जाएगा।

हॉन्गकॉन्गः

हॉन्गकॉन्ग की लॉटरी रॉयल हॉन्गकॉन्ग जॉकी क्लब (एच.के.जे. सी.) द्वारा संचालित होती है। इस क्लब को हॉन्गकॉन्ग लॉटरी बोर्ड ने लाइसेंस दिया है जिसके अनुसार वह 1915 से कार्यरत है। तब से इस क्लब ने लोकहित और अनेक धर्मार्थ कार्यों के लिए काफी बड़ी राशि का योगदान दिया है। एच.के.जे.सी. का आदर्श है 'रेसिंग फॉर चैरिटी'। इस क्लब का न्यास खेलकूद, मनोरंजन, संस्कृति, शिक्षा और प्रशिक्षण, सामाजिक सेवाओं, चिकित्सा व स्वास्थ्य क्षेत्रों के मध्य वित्त निधि का वितरण करता हैं। **सन् 2003 में एस.ए.आर.एस. महामारी के दौरान न्यास द्वारा 125 मिलियन हॉन्गकॉन्ग के डॉलर का योगदान बाल विहारों, स्कूलों व सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा केन्द्रों को प्रतिरोधक उपाय करने के लिए और 16 मिलियन हॉन्गकॉन्ग के डॉलर 'रूट्टोन्जी एंड टैंग शियुकिन' अस्पताल को दिया गया।** इसी के द्वारा विकलांगों के लिए 'जॉकी क्लब आर्ट्स' की शुरुआत की गई जिससे उनकी कलात्मक और सृजनात्मक प्रतिभा का विकास हो। सन् 2006 में न्यास ने पर्यावरण बेहतर बनाने के लिए, छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन अंतरंग आवासी कार्यक्रम, हॉन्गकॉन्ग विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए आवास सुविधा के निर्माण और विभिन्न कार्यक्रमों के लिए लाखों हॉन्गकॉन्ग के डॉलर का दान दिया है।

हंगरीः

हंगरी में लॉटरी का इतिहास 200 वर्ष पुराना है। पहली लॉटरी सन् 1770 में बुडा में चालू हुई। कुछ अंतराल के बाद आधुनिक खेल सन् 1947 में प्रारंभ हुए जिनमें 'पूल्स' यहां बहुत लोकप्रिय हैं। इसके बाद सन् 1957 में पंच–अंकीय निकाल वाली लॉटरी शुरू हुई। पहले–पहल

यह लॉटरी राष्ट्रीय बचत बैंक – 'ऑरजेगॉस टेकारेकपेन्जटर' द्वारा संचालित की गई। बाद में सन् 1991 में पूर्णरूपेण राज्य के आधिपत्य वाली कंपनी (Szerencsejatek Rt.) की स्थापना की गई।

सुरक्षा के बतौर इस कंपनी ने लॉटरी प्रणाली का हस्तचलित मूल्यांकन बंद करवा दिया। सन् 2001 में केनो जैसी लॉटरी शुरू की गई। यहां लॉटरी का विक्रय पोस्ट ऑफिस, व्यापारिक केन्द्रों, समाचार विक्रय की गुमठियों और सहकारी संस्थाओं के द्वारा किया जाता है। डाकघरों में उनका विक्रय कहीं अधिक होता है। सन् 2000 में नववर्ष पर कंपनी ने मिलिनियम क्लोज़–आउट लॉटो संचालित की। इसके अतिरिक्त टोटो पूल्स, 5/90 लॉटो, 6/45 लॉटो और तात्कालिक परिणाम वाले खेल भी चलते हैं।

प्राप्त आय का आबंटन खेलकूद और विश्राम की गतिविधियों, ओलंपिक में भाग लेने वाले खिलाड़ियों, कल्याणकारी और सांस्कृतिक उद्देश्यों, बाढ़ से प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों के पुर्ननिर्माण और बच्चों के अस्पताल के लिए किया जाता है।

आयरलैंडः

सन् 1900 के प्रारंभ में जब आयरिश शासन के पास अस्पताल निर्माण के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन नहीं थे, तब उसने आइरिश स्वीपस्टेक्स की स्थापना की। उस समय बहुत से देशों में बाजी लगाने के खेल अवैध थे। इसमें अमरीका और केनेडा भी शामिल थे। घुड़दौड़ पर दांव लगाने का खेल सभी जगह प्रचलित था और आयरिश लोगों में इसके प्रति बहुत चाव था। इसलिए आयरिश शासन ने घुड़दौड़ के परिणामों को स्थापित लॉटरी से जोड़ दिया। ऐसी घुड़दौड़ वर्ष में चार बार आयोजित की जाती थी। जिन्होंनें घुड़दौड़ों में जीतने वाले घोड़ों पर टिकिट खरीदी थी, वे पुरस्कार प्राप्त करते थे। इन टिकिटों पर देश के बाहर भी कालाबाज़ारी होती थी। यह प्रारंभिक दौर में अत्यन्त लोकप्रिय थी। जब अन्य देशों में बाजी के खेलों को वैद्य किया गया, तब 'आइरिश स्वीपस्टेक्स' की लोकप्रियता में कमी होने लगी। अंततः

1987 में उन्हें बन्द कर दिया गया। उस समय तक आयरिश शासन ने अस्पतालों के लिए 135 मिलियन पौंड और 265 मिलियन पौंड के पुरस्कार वितरित कर दिए थे। तब 1988 में शासन द्वारा 6/42 लॉटो खेल शुरू किया गया। आयरिश जैकपॉट में 'रोल ओवर' होने की विशेषता है और पुरस्कार कर–मुक्त होते हैं।

इज़राइलः

इज़राइल की राष्ट्रीय लॉटरी 'मिफल हेपायिस' सन् 1951 में प्रारंभ हुई जो निजी लाभ अर्जित करने वाली कंपनी नहीं थी। सन् 1940 के दशक में लाखों लोग इज़राइल आकर बस गए। फलस्वरूप देश की आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो गई। इन वित्तीय कठिनाइयों का निराकरण करने के लिए टेल अवीव के मेयर, श्री यिज़राइल रोकाह ने एक नगरपालिका लॉटरी प्रवर्तित करने का निर्णय लिया। प्राप्त राजस्व का उपयोग स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए किया गया क्योंकि अधिकांश अप्रवासी वृद्ध और बीमार थे। रोकाह के निर्णय को शासन ने अनुमोदित किया और उसे क्रियान्वित कर दिया।

सन् 1951 में अपनी स्थापना से 'मिफल हेपायिस' ने 213 अरब एन.आई.एस. (इज़राइल की करेंसी – 5 अरब डॉलर से अधिक) का योगदान शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक कल्याण हेतु दिया। वित्त मंत्रालय से अनुमति प्राप्त इस लॉटरी पर ग्यारह नगरपालिकाओं का स्वामित्व हैं। उसे 2.8 अरब एन.आई.एस. (इज़राइल की करेंसी) का वार्षिक राजस्व मिलता है।

सुरक्षा के बतौर मिफल हेपायिस धोखाधड़ी पर अंकुश रखने के उद्देश्य से लॉटरी का मुद्रण विदेशों में कराता हैं। इज़राइल राष्ट्रीय लॉटरी के 10 प्रमुख वितरक और 2500 विक्रय केन्द्र हैं जिनमें से 800 विशेष रूप से निर्मित लॉटरी बूथ हैं जो केवल लॉटरी उत्पादों का ही विक्रय करते हैं। इन बूथों को आकर्षक बनाने के लिए उनकी बनावट का विशेष महत्व होता है। वितरकों को आकर्षित करने के लिए 'सर्वाधिक आकर्षक बूथ' को पुरस्कृत किया जाता है। लॉटरी के

कुशल और बाधा–रहित संचालन के लिए इज़राइल राष्ट्रीय लॉटरी प्रबंधन विक्रेताओं, वितरकों और विपणन कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशाला भी आयोजित करता है। 'मेज़ल टॉव' यानि 'गुड लक' नामक न्यूजलैटर भी प्रकाशित किया जाता हैं।

लॉटरी से प्राप्त आय का उपयोग स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक कल्याण, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्रों, संस्कृति व कलाओं के क्षेत्रों में किया जाता हैं। मिफल हेपायिस द्वारा सैकड़ों बालविहार, स्कूल, सामुदायिक केन्द्र, अस्पताल, दंत चिकित्सा क्लिनिक, वृद्धों के उपचार केन्द्र, लोक ग्रंथालय, श्रमिक कल्याण संस्थाएं, नशीली दवाइयों के सेवन से पीड़ित लोगों के पुनर्वास केन्द, कला व संस्कृति के महानगरीय केन्द्रों की स्थापना की गई है। सन् 1988 से 'प्रत्येक बच्चे के लिए एक कंप्यूटर' योजना के अन्तर्गत कंप्यूटर खरीदी के लिए भी योगदान दिया गया है। दृष्टिबाधित लोगों के अध्ययन के लिए एक केन्द्रीय ग्रंथालय में विशेष खंड निर्मित किए गए। लेखकों के लिए बीट हेसोफर नामक गृह निर्माण और बहुद्देशीय 'स्पोर्ट एरीना' भी लॉटरी की आय से स्थापित किया जा रहा है।

जमैकाः

जमैका शासन के बैटिंग, गेमिंग और लॉटरी आयोग ने खेलकूद विभाग एजेन्सी को लॉटरी संचालित करने हेतु सन् 1991 में अधिकृत किया। इस कंपनी ने 'खुरच कर जीतो' (scratch and win) टिकिटों के विक्रय के साथ लॉटरी संचालन शुरू किया। सन् 1994 में सार्वजनिक स्वामित्व वाली जमैका लॉटरी कंपनी को खेल संचालन हेतु अधिकृत किया गया। लॉटो विक्रय के 7.5 प्रतिशत अंश को खेल विकास न्यास को दिया गया जो विभिन्न खेलकूद गतिविधियों की आर्थिक सहायता करती हैं।

कालान्तर में अलग–अलग खेलों का प्रचलन हुआ और वर्तमान में लॉटो, 'पिक 3', 'स्क्रेचर्स', 'टिक टैक टो', '3–वे ड्रॉप पैन' और 'विश्व फुटबॉल लॉटरी' खेल खिलाए जाते हैं।

सन् 2003 में जमैका ने लॉटरी पुरस्कार पर कर लगाना आरंभ किया। लॉटरी निधि ने विभिन्न संगठनों की आर्थिक सहायता की हैं। मधुमेह एसोसिएशन, 'माय फेटचेर्टस् हॉउस' जो शारीरिक रूप से विकलांग और मानसिक रूप से रूग्ण लोगों का केन्द्र है, आपात प्रबन्धन विभाग, रेडक्रॉस और अनेक शैक्षणिक संस्थाएं इसमें सम्मिलित हैं। जमैका प्रतिवर्ष लगभग 20 मिलियन डॉलर कल्याणकारी कार्यों पर व्यय करता है।

जापानः

सन् 1630 में जापानी लॉटरी प्रारंभ हुई। समय–समय पर वह शुरू हुई और सन् 1842 में पूरी तरह बन्द हुई। फिर सन् 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति पर लॉटरी का पुर्नप्रारंभ हुआ। युद्ध से और युद्ध के उत्तरकाल में हुई क्षति के बाद, देश के पुर्ननिर्माण के लिए पुनः लॉटरी प्रारंभ की गई। लॉटरी का प्रथम विक्रय अक्तूबर 1945 में युद्ध के तुरन्त बाद किया गया। इस लॉटरी का नाम 'तकारा–कुजी' है जिसका अर्थ है भाग्य या सम्पदा। दूसरे वर्ष स्थानीय प्रशासनिक निकायों को लॉटरी संचालन की अनुमति दी गई। **आज भी स्थानीय प्रशासन बजट में लॉटरी से प्राप्त आय का महत्वपूर्ण स्थान है।**

जापान के कानून में अनुबद्ध किया गया है कि लॉटरी के संचालन की सम्पूर्ण प्रक्रिया – टिकिटों के मुद्रण से लेकर पुरस्कार वितरण तक – का क्रियान्वयन बैंक द्वारा किया जाएगा। यद्यपि लॉटरी प्रचालन में अनेक बैंक लगे रहते हैं, उनमें से दाई–इची–कान्यो बैंक की प्रमुख भूमिका है।

जापानी लॉटरी पारंपरिक और आधुनिक लॉटरी में श्रेणीबद्ध की जाती है। पारंपरिक लॉटरी में पूर्व मुद्रित संख्यांक होते हैं। आधुनिक लॉटरी में खिलाड़ी संख्याओं का चुनाव करता है। हाल ही में जारी खेलों में तात्कालिक लॉटरी और दुबारा–संयोग वाली लॉटरी प्रचलित हुई है, जिसमें पारंपरिक लॉटरी और तात्कालिक प्रकार की लॉटरी के तत्व शामिल हैं।

मुख्य लॉटरियां छः हैं। अखिल जापानी लॉटरी की टिकिटें पूरे देश मे बिकती हैं और परिणाम हर माह निकाले जाते हैं। ब्लॉक (Bloc) लॉटरियां साप्ताहिक होती हैं और जापान के इन 4 ब्लॉक क्षेत्रों में बेची जाती हैं – कैन्टो–चुबु–तोहुकु क्षेत्र, टोक्यो महानगरीय जिला, किंकी क्षेत्र, और पश्चिमी जापान क्षेत्र। छटी है 'लोकल मेडिकल केयर प्रमोशन लॉटरी' जो रेनबो लॉटरी के नाम से लोकप्रिय है। वह नामजद क्षेत्रों में चलाई जाती है। रेनबो लॉटरी से प्राप्त आय जिची मेडिकल स्कूल की सुविधाओं को आधुनिक बनाने के लिए उपयोग की जाती है। यह मेडिकल स्कूल ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करता है। वृद्धजन कल्याण सोसाइटी के लिए भी इसकी आय का उपयोग होता है। रेनबो लॉटरी वर्ष में नौ बार संचालित होती हैं। इन नियमित लॉटरियों के अतिरिक्त, सन् 1989 में एक 'इवेंट लॉटरी' सृजित की गई। इस तात्कालिक विविधता वाली लॉटरी का विक्रय केवल प्रदर्शनी स्थलों और स्थानीय प्रशासनिक निकायों द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों में किया जाता है। जापान का जम्बो ड्रॉ जो वर्ष में चार बार निकाला जाता हैं, एशिया का सबसे बड़ा निकाल है और स्पैनिश एल गॉर्डो के बाद इसका द्वितिय स्थान हैं। सितम्बर 2006 में ओगाकी क्योरित्सु बैंक लिमिटेड का ए.टी.एम. के केन्द्रों पर रूलेट चलाने का प्रस्ताव विचाराधीन है।

शोध द्वारा उजागर किया गया हैं कि अवैध बाजियों और उसी प्रकार के अन्य खेलों से जो आय होती है, वह जापान के ऑटो उद्योग की आय के समान विशाल होती है। इसलिए शासन ने घोड़ों, नावों और साइकिल दौड़ पर दांव लगाने वाले खेलों को वैध कर दिया है और सन् 2001 में टोटो नामक खेल प्रारंभ किया जिसमें व्यवसायिक सॉकर खेल पर शर्त लगाई जाती है। टोटो खेल इंटरनेट पर भी उपलब्ध है। अपने प्रथम वर्ष में ही टोटो ने 64.2 अरब येन (जापानी करेंसी) का शानदार विक्रय दर्ज किया।

कजाखस्तानः

कजाखस्तान की राष्ट्रीय लॉटरी सन् 1998 में स्थापित हुई। देश में बहुत से निजी लॉटरी संचालक हैं। परंतु शासकीय लॉटरी से प्राप्त आय से सामाजिक परियोजनाएं चलती हैं। 5/36 लॉटो, 6/40 लॉटो और पिक–5 कजाखस्तान के लोकप्रिय खेल हैं।

लेबेनन :

लेबेनन का मूल लॉटरी खेल है 'या नस्सीब' जिसका प्रारंभ सन् 1950 के दशक में हुआ। राष्ट्रीय लॉटरी संचालनालय इस लोकप्रिय 4–डी खेल को चलाता है और 200,000 टिकिटें प्रति सप्ताह मुद्रित करता है।

संचालनालय द्वारा संचालित अन्य खेल जैसे 'लेबेनीज़ लॉटो' व 'खुरच खेल मालायीन', 'टोरा ना चे' और 'ज्नाउन मालायीन' की शुरुआत फरवरी सन 2003 में हुई। उसकी भारी सफलताओं से प्रेरित होकर संचालनालय ने तीन अन्य खुरच खेल अक्तूबर सन् 2003 में जारी किए। मालायीन की टिकिट, जिसका मूल्य 2500 एल.एल (लेबेनन की करेंसी) है, उसके छः वर्ग होते हैं। यदि उन्हें खुरच करने पर एक जैसी तीन संख्याएं निकले, तो विजेता को निर्धारित पुरस्कार मिलता है। यदि तीन वर्गो में टीवी का चिन्ह मिले, तो खिलाड़ी टीवी शो में भाग ले सकता है। इस शो में उसे एक चक्र घुमाने का मौका मिलता है जिसमें उसे 5 मिलियन एल.एल से 150 मिलियन एल.एल का पुरस्कार मिल सकता है।

'टोरा–ना–चे' में एक 'टोरा' या 'ना–चे' कार्ड पर बाजी लगाता है। यदि उसके खुरच कार्ड पर उसका दांव लगाया कार्ड निकलता है, तब उस पर अंकित राशि का वह विजेता होता है।

'ज्नाउन' में खुरच कार्ड पर छः वर्ग बाईं तरफ और छः दाहिनी तरफ होते हैं। दाहिनी ओर के किसी एक वर्ग को खुरचना पड़ता है। यदि वह संख्यांक बाई ओर दिए किसी एक संख्यांक से मिलता है, तो

खिलाड़ी निर्दिष्ट पुरस्कार राशि का विजेता होता है।

'या–नासिब' कागज़ लॉटरी होती है जिसमें पांच संख्यांक और वर्णमाला के किसी अक्षर की श्रृंखला होती है। इस साप्ताहिक खेल की टिकिट का मूल्य 6000 एल.एल होता हैं। खिलाड़ी को 3000 एल.एल की आधी टिकिट खरीदने का भी विकल्प होता है। यदि वह पुरस्कार राशि का विजेता है, तो स्वाभाविक तौर पर वह राशि के केवल आधे भाग का हकदार होता है।

400,000 एल.एल तक के पुरस्कार फुटकर केन्द्रों से प्राप्त किए जा सकते हैं। इससे अधिक के पुरस्कार लेबनीज राष्ट्रीय लॉटरी द्वारा सीधे दिए जाते हैं।

लेबनीज वित्त मंत्रालय के अनुमोदन के बाद ही नए खेल प्रारंभ किए जा सकते हैं।

मलेशियाः

मलेशिया शासन ने स्पोर्ट्स टोटो मलेशिया एस.डी.एम.बी.एच.डी को सन् 1969 में समाविष्ट कर निगम के रूप में संस्थापित किया। सन् 1985 में उसकी स्थिति राज्य शासित उद्यम से निजी कंपनी की हो गई। यह 4–डी, 5–डी और 6–डी जैसे अंकीय खेल चलाता है और लॉटो के समान टोटो 4/49, टोटो 6/42, जैकपॉट और सुपर टोटो 6/49 संचालित करता है।

अपनी स्थापना से ही उसने खेलकूद की उन्नति व विकास के लिए, युवा कल्याण व सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए, वृद्ध, बीमार और ज़रूरतमंदों के लिए अनुदान दिया है।

10,000 आर.एम (मलेशिया की करेंसी) तक के पुरस्कार फुटकर केन्द्र द्वारा नकद दिए जाते हैं। मलेशिया में लॉटरी पुरस्कार करमुक्त होते हैं।

नीदरलैंडः

नीदरलैंड की राज्य लॉटरी 'स्टाट्स लॉटरिज्' को विश्व की सर्वाधिक पुरानी लॉटरी होने का गौरव प्राप्त है। इसकी स्थापना सन् 1726 में हुई और आज भी वह प्रचलित है। बहुत सी निजी लॉटरिया भी चला करती थी। सन् 1848 में शासन द्वारा निजी लॉटरी को प्रतिबन्धित कर दिया। सन् 1905 में लॉटरी अधिनियम के पारित होने के बाद लोकहित के उद्देश्य से लॉटरी चलाने की अनुमति प्रदान की गई। परंतु सन् 1961 तक धर्मार्थ लॉटरियों पर नकदी के स्थान पर केवल सामान व सेवाएं देने की अनुमति दी गई।

'द टोटलाइज़ेटर एक्ट' के द्वारा सन् 1948 में घोड़ों पर दांव लगाना वैध कर दिया गया। 1961 मे लॉटरी अधिनियम में संशोधन कर खेलकूद पर शर्त लगाने को भी कानून सम्मत बना दिया। धर्मार्थ लॉटरियों को नकदी के रूप में पुरस्कार देने के लिए अनुमति दे दी गई। सन् 1994 में तात्कालिक लॉटरी प्रस्तावित कर दी गई।

न्याय विभाग के तत्वावधान में नीदरलैंड का राज्य लॉटरी खेल बोर्ड 'दे लॉटो' और राष्ट्रीय हितकारी नियित लॉटरी जिसमें 'बैंकगीरो लॉटरी', 'नेशनल पोस्टकोड लॉटरी' और 'स्पॉन्सर' जैसे एकाधिकार प्राप्त खेल शामिल हैं, उन पर नियंत्रण रखता है।

डच शासन विभिन्न संचालकों को प्रत्येक खेल के लिए अनुज्ञप्ति देता है। उदाहरण के लिए, तात्कालिक लॉटरी को 'स्टिचिंग नेशनल इन्सटेंट लोटरजी' (National Instance Lottery Foundation) और लॉटाको (नेशनल स्पोर्ट टोटलाइज़ेटर फाउंडेशन) संचालित करते हैं। तात्कालिक लॉटरी में कुल टिकिट विक्रय का कम से कम 47.5 प्रतिशत पुरस्कार राशि के लिए दिया जाता है। लॉटो की पुरस्कार राशि 47.5 प्रतिशत और 50 प्रतिशत के बीच की होती है। लॉटो से प्राप्त आय से 'एसोसिएशन ऑफ द डच ओलंपिक कमिटी' और 'डच स्पोर्टस फेडरेशन' को लाभ मिलता है।

'स्टाटस्लॉटरिज्' डच और गैर–डच बाजियों की सकल राशि पर 25 प्रतिशत कर आरोपित करती है।

मार्च सन् 2003 में नया खेल अधिनियम पारित हुआ जिसके द्वारा धर्मार्थ लॉटरी के लिए लाइसेन्सों की संख्या में वृद्धि हो सके। प्रमाणीकरण की विधि भी निर्देशित की गई जिससे केवल प्रमाणित संगठन ही लॉटरी आय की प्राप्ति और उसका वितरण कर सकें।

सन् 2005 में राज्य लॉटरी ने राज्य के सामान्य कोष में 1379 मिलियन यूरो, बैंगकीरो लॉटरी ने 532 मिलियन यूरो, स्पॉन्सर लॉटरी ने 361 मिलियन यूरो, और पोस्टकोड ने 2177 मिलियन यूरो का योगदान दिया। इन निधियों का उपयोग सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, लोक स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण, शारीरिक शिक्षा और मानवीय परियोजनाओं के क्षेत्र में होता है।

न्यूज़ीलैंडः

सन् 1987 में स्थापित न्यूज़ीलैंड लॉटरी कमीशन (एन.ज़ेड.एल.सी.) पर 'क्राउन' का आधिपत्य हैं। यह देश का एकमात्र खेल उपलब्ध कराने वाला आयोग है, जिस पर खेल और लॉटरी अधिनियम का नियंत्रण है। आयोग का उद्देश्य सामाजिक कार्यो के लिए धन अर्जित करना है। प्राप्त आय का वितरण न्यूज़ीलैंड लॉटरी की अनुदान बोर्ड के द्वारा किया जाता है। गृह विभाग के द्वारा खेलों के नियामक विधियों को क्रियान्वित किया जाता है।

सन् 1985 मे 'स्पोर्टस् डेवलपमेंट इनक्वाइरी' के प्रतिवेदन 'स्पोर्टस ऑन द मूव' परियोजना ने लॉटो द्वारा आय संसाधन की क्षमताओं का आकलन किया। इसलिए एन.ज़ेड.एल.सी. की स्थापना के बाद लॉटो खेल की प्रविष्टि हुई। गोल्डन किवी, इन्सटेंट किवी, लॉटो स्ट्राइक, केनो और पॉवरबॉल जैसे अन्य खेल भी प्रचलित हैं।

वृहद पैमाने पर सामुदायिक निधि निर्माण के उद्देश्य से प्रेरित न्यूजीलैंड के निवासी लॉटरी को एक मनोरंजन के रूप में देखते हैं बजाए बाजी लगाने वाले खेल के। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के सर्वेक्षण के बाद एन.ज़ेड.एल.सी. की गणना अग्निशमन सेवा,

पुलिस और सेना के बाद की जाती हैं जिससे इसकी लोकप्रियता का ज्ञान होता है। 1987 से आयोग ने 1.7 अरब डॉलर का दान लॉटरी अनुदान बोर्ड को दिया है।

नॉर्वे:

नॉर्वे में शासन के स्वामित्व की नॉर्श टिपिंग के द्वारा लॉटरी संचालित होती हैं। इसके द्वारा अंकों वाले तीन खेल चलाए जाते हैं– 7/34 लॉटो, 6/48 वाइकिंग लॉटो और जोकर । जोकर में खिलाड़ी का जो पंजीकरण संख्यांक होता है, उसी को चुनिंदा अंक माना जाता है। टिपिंग जो सॉकर पूल गेम है, उसमें उन खेलों के परिणाम का पूर्वानुमान लगाया जाता है। पूर्वानुमान के विकल्प हैं – खेल के आधे अंतराल में और सामान्य मैच के आखिर में परिणाम। एक और कौशल खेल का नाम है 'ऑडसेन' जिसमें 'लैंगाड्सन', 'ऑड्सबॉम्बेन' और 'विनर ओड्सेन' जैसे खेल शामिल हैं। फ्लेक्स के नाम से खुरच टिकिट के खेलों का विक्रय किया जाता है।

लॉटरी से प्राप्त आय का खेलकूद और संस्कृति के विकास कार्यों के लिए और शोध कार्य के लिए किया जाता है।

सिंगापुर :

सन् 1960 में स्वतंत्रता के बाद सिंगापुर को अवैध सट्टा खेलों के व्यवसाय संघों की समस्या से निपटना पड़ा। इसलिए सन् 1968 में देश के कानून सम्मत लॉटरी संचालन के लिए 'सिंगापुर पूल्स' की स्थापना की गई। टोटो के हस्तचालित स्वरूप का खेल शुरू हुआ। कालान्तर में सिंगापुर स्वीप, 4–डी गेम्स, 4–डी स्वीप, फुटबॉल पर शर्त लगाने के 'स्कोर' और 'स्ट्राइक' जैसे खेल आरम्भ किए गए। स्थानीय क्लबों के बीच खेले जाने वाला, फुटबाल के परिणाम पर बाजी लगाने वाला, खेल 'स्कोर' कहलाता है जबकि अंर्तराष्ट्रीय फुटबाल के 'लीग' मैचों पर दांव लगाने वाला खेल 'स्ट्राइक' कहलाता है।

सन् 1988 में सिंगापुर टोटलाइज़ेटर बोर्ड स्थापित हुआ। इसके

पास 4—डी, टोटो और सिंगापुर स्वीप जैसे खेलों को अपने एजेंट और पूर्णरूपेण अधिसत्ता वाले सहायक 'सिंगापुर पूल्स प्राइवेट लिमिटेड' के माध्यम से लॉटरी संचालन का वैध अधिकार प्राप्त है।

सिंगापुर पूल्स ने सन् 1968 से विभिन्न परियोजनाओं के लिए 1.5 अरब डॉलर का अनुदान दिया है। इस लॉटरी की निधियों का उपयोग लोकहित, धर्मार्थ, खेलकूद और सामुदायिक सेवाओं के लिए किया जाता है। इसके धर्मार्थ योगदान से लाभान्वित होने वाली एन.सी. एस.एस. (नेशनल काउंसिल ऑफ सोशियल सर्विसेस) प्रमुख संस्था है। एन.सी.एस.एस. के संरक्षण में 200 से अधिक स्वंयसेवी संगठन हैं जो बौद्धिक और शारीरिक रूप से कमजोर लोग, बेघर हुए बुजुर्ग और अन्य ज़रूरतमंद लोगों की सहायता करते हैं। किड़नी पर शोध करने वाली संस्थाएं, अस्थीमज्जा का दान करने वाले कार्यक्रम, निवास पर परिचर्या और नशीली दवाइयों से ग्रसित लोगों के पुनर्वास जैसे अलाभ संगठनों को भी आर्थिक सहायता मिलती है। पशुओं के प्रति निर्दयता का विरोध करने वाली समिति और रेड क्रॉस को भी सहायता मिलती हैं। एन.सी. एस.एस. ने सन् 2006 में सिंगापुर पूल्स से इन परियोजनाओं के लिए 12 मिलियन डॉलर प्राप्त किए।

सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों के अंतर्गत लॉटरी निधि से 'जोरांग बर्ड पार्क', 'सिंगापुर ज़ू', 'नाइट सफारी' और अन्य पार्कों को सहायता मिली। सिंगापुर पूल्स ने 'एस्प्लेनडे थियेटर ऑन द बे' के निर्माण के लिए 409 मिलियन डॉलर का योगदान दिया। सार्वजनिक और अनेक सामुदायिक परियोजनाओं और शैक्षणिक सेवाओं के अतिरिक्त राष्ट्रीय दिवस, परेड़, ड्रग के विरुद्ध अभियान, मौके पर सड़क सुरक्षा के कार्यक्रम और अपराध निरोधक कार्यक्रमों को भी आर्थिक मदद मिली हैं। फुटबॉल, बास्केटबॉल, हॉकी, रग्बी, टेबल टेनिस, तैराकी, स्कवैश, शतरंज, पर्वतारोहण के संगठन जैसे विभिन्न खेलकूद कार्यक्रमों को लॉटरी निधि से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है। सन् 1968 और सन् 1976 के बीच नेशनल स्टेडियम के निर्माणार्थ 14.5 मिलियन और

सिंगापुर इंडोर स्टेडियम के निर्माण के लिए 45 मिलियन सिंगापुर के डॉलर की सहायता मिली है। **इसमें ओलंपिक, कामनवेल्थ और अन्य अंतर्राष्ट्रीय खेलों में खिलाड़ियों को भेजने के लिए अपने 'मल्टीमिलियन डॉलर अवॉर्ड प्रोग्राम' के अंतर्गत भी आर्थिक सहायता दी है।** सन् 2006 में पूल्स ने इन खेलकूद गतिविधियों के लिए 375 मिलियन डॉलर का योगदान दिया है। सन् 2008 में बीजिंग में होने वाले विश्व ओलंपिक में सात खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देना भी प्रारंभ किया है।

दक्षिण अफ्रीका :

दक्षिण अफ्रीका की राष्ट्रीय लॉटरी नेशनल लॉटरी बोर्ड उथिंगो के द्वारा नियंत्रित होती है। इसमें तीन ब्रिटेन के प्रमुख संचालक के साथ अनेक साझेदार मिलकर सार्वजनिक कंपनी बनी हुई हैं। अमरीका और ऑस्ट्रेलिया लाइसेंस प्राप्त संचालक हैं।

सन् 1997 में दक्षिण अफ्रीका की पार्लियामेंट के द्वारा नेशनल लॉटरी अधिनियम पारित किया गया। तत्कालीन राष्ट्रपति श्री नेल्सन मंडेला ने इसे स्वीकृत किया।

चुने हुए फुटकर विक्रेताओं को सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद एक प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूर्ण करना पड़ता हैं। उसके बाद ही उन्हें लॉटरी को बेचने या टिकिटों को प्रमाणिक बनाने और पुरस्कार देने की अनुमति प्राप्त होती है। 2001 आर. (अफ्रीकी करेंसी) से 50,000 आर. (अफ्रीकी करेंसी) तक के पुरस्कार, अधिकृत पुरस्कार भुगतान केन्द्रों से एक दावा प्रपत्र प्रस्तुत करने पर लिए जा सकते हैं। जब 500,000 आर. (अफ्रीकी करेंसी) के ऊपर के पुरस्कारों पर कोई दावा नहीं आता, तब संचालक सार्वजनिक रूप से जनता को माध्यम से सजग करता है।

लॉटरी निधि का वितरण नेशनल लॉटरी वितरण न्यास निधि के माध्यम से होता है। निर्माण और विकास कार्यक्रमों के लिए 15 प्रतिशत, धर्मार्थ कार्यों के लिए 36 प्रतिशत, कला, संस्कृति व राष्ट्रीय विरासत के

लिए 22 प्रतिशत, खेलकूद और मनोरंजन के लिए 22 प्रतिशत, और शेष अन्य कार्यक्रमों के लिए वितरण किया जाता है। सन् 2002 में वृद्धाश्रम, डे–केयर केन्द्र, बाल कल्याण समिति, और शिशु संगोपन केन्द्र आदि 853 लोकहित के धर्मार्थ संगठनों को सहायता मिली है। कलाओं के लोकव्यापीकरण के 139 और खेलकूदों के 250 खेलकूद के संगठनों को भी लाभ मिला है।

पूछताछ और आवेदन के लिए प्लेयर थ्रूसाँग नामक एक 'टॉलफ्री हेल्पलाइन' हैं। बोर्ड के द्वारा लॉटो, लॉटो प्लस और विना मेन्ज (Win-now) जैसे खुरच खेल चलाए जाते हैं। 'टिक–टैक–टो', 'ज़ेन्सी गोल्ड', 'स्कोर अ गोल', 'बोनान्ज़ा बक' और 'कैश एक्सप्लोज़न' अन्य लोकप्रिय खेल हैं। बोर्ड द्वारा 'विन अ लॉट' प्रतियोगिता भी चलाई जाती है जिसमें जिन टिकिटों पर पुरस्कार नहीं मिला है, उन पर लॉट के जरिए कपड़े या किराना या कार के वाउचर पुरस्कार के रूप में दिए जाते हैं।

स्पेन :

30 सितम्बर सन् 1763 के दिन जब कारलोस तृतिय ने मारक्विस ऑफ इस्क्यूलचे द्वारा बनाए गए अधिनियम पर हस्ताक्षर किए, उस दिन राष्ट्रीय लॉटरी का जन्म हुआ। इस अधिनियम में यह अनुबंध किया गया कि मंत्रियों की परिषद ने उचित पाया कि मेड्रिड में रोमाज़ कोर्ट और अन्य देशों के समान लॉटरी स्थापित की जाए। **मारक्विस ने अपनी राजकीय संपत्ति को अमानत के तौर पर देने का प्रस्ताव दिया, जिसे कि राजकोष में अपर्याप्त निधि होने पर गिरवी रखा जा सकें।** अधिनियम में आदेशित किया गया कि प्राप्त लाभों का उपयोग अस्पताल, अनाथालय और अन्य ऐसे ही सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए किया जाए। अन्य नियम भी बनाए गए जैसे कि ईमानदारी और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए विजित संख्याओं का चुनाव वित्त विभाग के शासकीय भवन में और मारक्विस कार्यालय की समय समाप्ति के बाद किया जाए। चार प्रकार की बाजियां लगाई जाती थी – 'सिम्पल एक्ट्रेक्ट्स', 'फिक्स्ड', 'एम्बो' और 'टर्मो'।

सन् 1771 में 9 मार्च को सेन लेडिफेन्सो स्कूल के एक सात वर्ष के छात्र, डीगो लोपेज़ ने विजेता पुरस्कार के संख्यांक निकाले। स्कूल के भूतपूर्व छात्रों के द्वारा संख्यांक निकालने की परंपरा जारी है।

वर्तमान लॉटरी जिसकी संतति है, उसकी स्थापना सन् 1811 में केडिज़ कोर्ट के द्वारा की गई और मार्च 1812 में 20 हज़ार टिकिटों के विक्रय के बाद पहला परिणाम निकाला गया। वर्तमान में 'नेशनल लॉटरी लॉ प्रिमिटिवा', '6/49 ई.जी. प्रिमिटिवा', '6/49 यूरोमिलोनेस', 'ऐल गॉरडो डेल वेरनो' या 'समर फैट वन', 'सॉकर पूल गेम ला क्वीनीला', 'एल गोर्डो दे नेवीडेड या 'फेट वन ऑफ क्रिसमस', 'बॉनोटोटो' और 'क्विनिगोल' जैसे खेल संचालित करती है। 'फेट वन ऑफ क्रिसमस' पारम्परिक खेल हैं और हर वर्ष 22 दिसम्बर को हरेक स्पेनिश व्यक्ति ने इसे खेलने की आदत बना रखी है। यह मूल रूप से दिसम्बर 1812 में शुरू हुई और उसे यह नाम सन् 1892 में मिला। पुरस्कार राशि पर निर्णय और श्रृंखला का चुनाव फरवरी और मार्च में कर दिया जाता है जिसके बाद टिकिटों का मुद्रण 'स्पैनिश नेशनल फैक्टरी ऑफ कॉइन एंड स्टेंप' में किया जाता है। परिणाम घोषणा के अवसर पर सेन लेडिफेन्सो स्कूल के छात्र–छात्राओं द्वारा संख्याकों और पुरस्कारों पर गीत गाए जाते हैं।

शासन द्वारा स्पेन के बाहर निवास करने वाले नागरिकों को भी परिणाम के अवसर पर भाग लेने की अनुमति मिलती है। लॉटरी के पुरस्कारों पर कोई कर नहीं है।

श्रीलंका :

सन् 1900 के प्रारंभिक काल में श्रीलंका में निजी लॉटरियां प्रचलित थी। सन् 1933 में श्री के. एम. चेल्लापा ने अपने मकान में निःशुल्क ग्रंथालय शुरू किया। अगले ही वर्ष वह सार्वजनिक ग्रंथालय बन गया और उसकी लोकप्रियता बढ़ गई। उसे एक स्थाई भवन में स्थानांतरित करने के लिए जाफना के पहले मेयर, श्री सैम सबापथि ने भवन निर्माण के लिए धन एकत्रित करने के उद्देश्य से लॉटरी टिकिट बेचने का निर्णय लिया। एक

बड़ी धन राशि से जाफना ग्रंथालय भवन का निर्माण संभव हो गया।

विगत चार दशकों से श्रीलंका की वर्तमान लॉटरी सेक्टर राज्य के नियंत्रण में है। दो राज्य आधिपत्य के उद्यम – एन.एल.बी. (नेशनल लॉटरी बोर्ड) और डी.एल.बी. (विकास लॉटरी बोर्ड) – लॉटरी संचालन को नियंत्रित करते हैं। एन.एल.बी. सप्ताह के सातों दिन छह परिणाम वाली लॉटरी चलाता है। इसी में तीन खुरच खेल हैं जिसमें से एक सेवाना खुरच लॉटरी है, जो हांलाकि एन.एल.बी. के अधीन है, परंतु अलग से संचालित होती है। सन् 1987 से सर्वाधिक पुरानी 'सैटर्डे फॉरच्यून लॉटरी' का टीवी पर सीधा प्रसारण चल रहा है।

सन् 2002 में शासन ने लॉटरी बोर्ड के नियंत्रण में व नियमन में निजी लॉटरी संचालकों को अनुमति दे दी। चुनिंदा निजी संचालकों को प्रारंभ में 3 अरब रुपये देने पड़े और आय में न्यूनतम 15 मिलियन अमरीकी डॉलर प्रतिवर्ष सात वर्षों की संविदा पर हिस्सेदारी के लिए सहमत होना पड़ा।

जनवरी 2004 में डी.एल.बी. ने 'शेनीडा वसाना' और 'सैनवारदेना वसाना' लॉटरी योजनाओं की जैकपॉट में वृद्धि कर दी और जयोडा नामक नई लॉटरी भी प्रारंभ की। राष्ट्रपति निधि में डी.एल.बी. का अनुदान सन् 2003 में 750 मिलियन रुपये था। जयोडा पुरस्कार योजना में ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए एक मिलियन रुपये का जैकपॉट और अनेक घरेलू उपकरण सम्मिलित किए जाते थे। जयोडा के परिणाम जिलावार और अलग से भी निकाले जाते थे।

सन् 1980 में कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रतिभावान बच्चों को उच्चशिक्षा के अध्ययन में सहायता देने के लिए शासन ने महापोला लॉटरी शुरू की। एक छोटे अन्तराल के बाद सन् 2004 में उसे पुर्नसंचालित किया। लॉटरी से छात्रवृत्ति अनुदान देने की अवधारणा तत्कालीन वाणिज्य व जहाजरानी मंत्री श्री ललित अथुलथमुदली के दिमाग की उपज थी। वर्तमान में

महापोला लॉटरी से प्रतिवर्ष 7000 से 8000 छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं।

दिसम्बर सन् 2004 में ऑनलाइन लॉटरी शुरू की गई जिसकी आय का उपयोग संसद छात्रवृत्ति के माध्यम से निर्धन बच्चों के लिए किया जाता है।

स्विटज़रलैंडः

स्विटज़रलैंड का वह हिस्सा जहां फ्रेंच भाषा बोली जाती है, स्विटज़रलैंड सोसाइटी के नाम से जानी जाती है। इस सोसाइटी की लॉटरी सन् 1973 में केन्टोनल या वाउड, वेलैस, फ्रिबोर्ग, न्यूचेटल और जेनीवा के जिला प्रशासनों द्वारा शुरू हुई। केन्टोन ऑफ जूरा इसमें सन् 1979 में शामिल हुई। इस लॉटरी को 'या लॉरो' कहते हैं।

सन् 1978 में लॉटेरी रोमांडो ने अपनी पहली खुरच टिकिट प्रारंभ की। सन् 1978 और सन् 2004 के बीच विभिन्न पुरस्कारों के विभिन्न खुरच खेल शुरू किए गए। वर्तमान में चौदह खुरच खेल प्रचलित हैं जिनमें प्रमुख हैं केडो, ड्रेपो, ली मैगॉट, पिरामिड, रेन्टो और ट्रिबोलो। कार्टोन में 5 फ्रेंक से 500,000 फ्रेंक तक और रेन्टो में 650,000 फ्रेंक तक के पुरस्कार दिए जाते हैं। जहां ये खुरच किस्म के हैं, वहीं 'ले' तात्कालिक टिकिट है जिसे फाड़कर पुरस्कार संख्यांक का पता लगाया जाता है। सन् 2002 में लागू मोज़ैक खेल में सीडी रॉम का उपयोग होता है। खुरच टिकिट में जो संख्यांक होता है, वह केवल एक कोड है। इस कोड को कंप्यूटर में प्रविष्ट किया जाता है और उसके बाद सीडी रॉम पर दिए हुए खेल के नियमों के अनुसार उस खेल को खेला जाता है।

देश में सन् 1989 में ऑनलाइन खेलों की शुरुआत हुई। सन् 1991 में पी.एम.यू. रोमांड शुरू हुआ जो स्विस और फ्रेंच घुड़दौड़ पर आधारित था। सन् 1998 से ब्रिटिश और अमरीकी दौड़ों पर भी दांव लगाए जाते हैं। खिलाड़ी को 36 में से 1 और 9 के बीच के कार्ड का

चुनाव करना है। 'बैंको' और 'लॉटो एक्सप्रेस' केनो के ही रूपांतरण हैं। 'लॉटो एक्सप्रेस' का निकाल हर पांच मिनट में किया जाता है। सन् 1997 से स्विस लॉटो इस क्षेत्र में प्रचलित है। टैक्टिलो खुरच टिकिट का आधुनिक रूप है। खिलाड़ी ट्रिबोलो और मेगालो जैसी तात्कालिक खुरच टिकिटों को एक 'टच स्क्रीन' पर ही खुरच सकते हैं।

पुरस्कार के भुगतान के बाद जो लाभ बचता है, वह सामाजिक कार्यों, संस्कृति, पर्यावरण, पर्यटन, विरासत और शोध के कार्यों की सहायता में लगाया जाता है। लॉटेरी रोमांडे के प्रारंभ से अब तक लगभग 1.3 अरब फ्रेंक का उपयोग उपयुक्त कार्यों के लिए किया जा चुका है। लॉरो के खेलों को स्विटज़रलैंड की 55 प्रतिशत जनसंख्या का संरक्षण प्राप्त है। कानून द्वारा अनुबद्ध किया गया है कि आय का न्यूनतम 50 प्रतिशत पुरस्कारों के लिए आरक्षित रखा जाए। वर्तमान में पुर्नवितरण की विस्तार सीमा 50 प्रतिशत से 70 प्रतिशत तक होती है।

थाईलैंडः

थाईलैंड की पहली लॉटरी राजारामा वी. के जन्मोत्सव पर सन् 1917 में शुरू हुई। थाईलैंड की फौजों की प्रथम विश्व युद्ध के मित्र राष्ट्रों के साथ फौजी कार्यवाही के लिए लॉटरी चलाई गई। **सन् 1932 की लॉटरियों ने थाई रेडक्रॉस के धर्मार्थ कार्यों के लिए वित्तीय सहायता दी।** थाई शासन वहां के उन पुरूषों पर 'ड्राफ्टी' कर लगाया करता था जो अनिवार्य सैन्य सेवाओं में नहीं जाना चाहते थे। जब इस कर को सन् 1934 मे उठा लिया गया, तब घाटे की स्थिति निर्मित हो गई और शासन ने आय बढ़ाने के लिए लॉटरी चालू की। सन् 1934 में प्रांतीय नगरपालिकाओं की परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देने के लिए लॉटरियां संचालित की गई। सन् 1939 में लॉटरी का संचालन राजस्व विभाग से वित्त मंत्रालय को हस्तांतरित कर दिया गया।

लॉटरी कार्यालय अपने द्विमासिक परिणामों के लिए चौदह मिलियन टिकिटें मुद्रित करता है। उसी निकाल के अंतर्गत वह खेलकूद की

प्रोन्नति के लिए दो मिलियन टिकिटें और लोकहित में लगे धर्मार्थ संगठनों के लिए सात मिलियन टिकिटें निकालता है।

लॉटरी कार्यालय ने 4,000 लाख बाहट (थाईलैंड की करेंसी) का अनुदान प्रतिवर्ष राज्य कोषालय को दिया है। उसने स्नातक कक्षाओं के छात्रों के लिए कुल 440 छात्रवृत्तियों की सहायता भी दी है। प्रत्येक छात्रवृत्ति 20000 बाहट मूल्य की होती है। धर्मार्थ कार्यों के लिए प्रतिवर्ष 8 मिलियन बाहट आबंटित किए जाते हैं और नागरिक सेवाओं, सैन्य कर्मचारियों, थाईलैंड की कल्याण परिषद और वरिष्ठ युद्ध एसोसिएशन के लिए प्रतिवर्ष 20 मिलियन बाहट का अनुदान दिया जाता है।

संचालन को कंप्यूटरीकृत करने के लिए शासन ने प्रस्ताव दिए हैं जिससे खिलाड़ी वाणिज्यिक बैंकों के ए.टी.एम. के जरिए लॉटरी खरीद सकें और पुरस्कार राशि भी प्राप्त कर सकें।

ट्रिनीदाद व टोबेगो :

(एन.एल.सी.बी.) नेशनल लॉटरी कंट्रोल बोर्ड उद्योग और वाणिज्य मंत्रालय के अंतर्गत सन् 1968 में स्थापित हुआ। बाद में वह वित्त मंत्रालय के अधीन आ गया।

एन.एल.सी.बी. के द्वारा संचालित खेलों में 'प्ले वेह', 'लॉटो प्लस', 'कैश पॉट', 'लॉटो क्लासिक', 'डोनसाई' और 'पिक–2' खेल शामिल हैं। 'प्ले वेह' जो मूल रूप से 'वेह वेह' या 'चिनापू' के नाम से जाना जाता था, ट्रिनीदाद में चीनी आवृजदनों के द्वारा लाया गया। यह 1/36 खेल है। 'लॉटो प्लस' भी पॉवर बॉल अतिरिक्त नंबर का 1/36 खेल है। 'कैश पॉट' खेल बिंगो का ही स्थानीय रू प है। 'लॉटो क्लासिक' सबसे पुराना कागज़ लॉटरी खेल है। उसके परिणामों का टीवी पर सीधा प्रसारण सन् 1969 में किया गया था। लॉटो क्लासिक से प्राप्त लाभ को एकीकृत निधि में जमा कर दिया जाता है। लॉटो क्लासिक के टिकिटों की आपूर्ति मूल रूप से वेनिज़्युला की 'इम्प्रेस्सोरा टेक्निका' के द्वारा की जाती थी। विदेशी विनिमय की

दिक्कतों के कारण सन् 1983 में एन.एल.सी.बी. ने स्थानीय रूप से टिकिटों का मुद्रण कार्य शुरू कर दिया।

तात्कालिक लॉटरी का संचालन सन् 1988 में शुरू हुआ। इसके लाभों को खेलकूद व संस्कृति निधि में जमा किया जाता है। तात्कालिक टिकिटों की आपूर्ति एक अंग्रेज़ी कंपनी करती थी। विदेशी विनिमय की समस्या के कारण खेलों को जारी नहीं रखा जा सका। सन् 1995 में उसे फिर से शुरू किया गया। विक्रय में वृद्धि के लिए 'लूज़र्स ड्रॉ', 'सेकंड चांस ड्रॉ', 'अर्ली बर्ड ड्रॉ' इत्यादि विभिन्न योजनाएं चलाई गई। सन् 1994 में ऑनलाइन खेल प्रारंभ किए गए।

एन.एल.सी.बी. के उद्देश्य हैं शासन के लिए अतिरिक्त आय उत्पन्न करना, एजेंट, फुटकर विक्रेता और कर्मचारियों की नियुक्ति के द्वारा रोजगार के अवसर प्रदान करना और पुरस्कार योजना के द्वारा सार्वजनिक लाभ पहुंचाना। त्रिनिदाद और टोबेगो का बंपर रूपांतर 'एक्स्ट्रा–ऑर्डिनरी ड्रॉ' सन् 1970 में 100,000 डॉलर के पुरस्कार के साथ संचालित किया गया। एक ही सप्ताह में सभी टिकिटें बिक गई। इससे प्रेरित होकर एन.एल.सी.बी. ने 1,000,000 डॉलर के पुरस्कार वाला 'एक्स्ट्रा–ऑर्डिनरी ड्रॉ', 250,000 डॉलर के पुरस्कार का 'जैएंट स्पेशल ड्रॉ', 500,000 डॉलर का 'सुपर जैएंट ड्रॉ' और 1,000,000 डॉलर के पुरस्कार वाले खेल कार्निवल, ईस्टर, स्वतंत्र दिवस और क्रिसमस के अवसर पर संचालित किए।

इन सभी लॉटरियों की सफलता से उत्साहित होकर बोर्ड ने एजेंटों का कमीशन 15 प्रतिशत से 17 प्रतिशत तक बढ़ा दिया।

ब्रिटेन (यूनाइटेड किंगडम) :

ब्रिटेन की नेशनल लॉटरी यद्यपि देरी से शुरू हुई, परंतु लॉटरी संचालित करने वाले सभी देशों के मध्य सर्वाधिक सफल रही है। राष्ट्रीय लॉटरी आयोग सन् 1999 तक राष्ट्रीय लॉटरी को विनियमित करता रहा। राष्ट्रीय लॉटरी का कार्यालय (ओ.एफ.एल.ओ.टी.) इसका

प्रभारी था। राष्ट्रीय लॉटरी आयोग का दायित्व है कि वह संचालक 'कैमलोट' के कार्यों की देखरेख करे, लॉटरी के निर्बाध संचालन को सुनिश्चित करे, खिलाड़ी के संरक्षण का ध्यान रखे और अधिकतम पूंजी अर्जित कर सके।

संचालक के पास सन् 2009 तक लॉटरी संचालन के लिए लाइसेंस है। यह 5 हिस्सेदारों की निजी कंपनी है। यह कुल विक्रय की 0.5 प्रतिशत से भी कम राशि अपने लिए रखती है। यह उन संगठनों की मदद करती है जो खेल की समस्याओं पर शोध कर रही है, और उन संगठनों की भी जो निरोधक कार्यक्रमों के द्वारा खेल समस्याओं का निराकरण करते हैं, मार्गदर्शन और परामर्श देते हैं। इसने 250,000 पौंड का दान 'गेम केयर' को दिया है। इस केन्द्र के द्वारा खेल से संबंधित समस्याओं पर परामर्श दिया जाता है। सन् 1999 से सामाजिक रपट (Social report) भी निकाले जा रहे हैं। यह संचालक के कार्यकलापों का सामाजिक और नैतिक अंकेक्षण है। इसने ब्रेल (Braille) लिपि में जानकारी देकर खेल केन्द्रों पर नीचे धरातल के छोटे टेबल लगाकर फुटकर विक्रेताओं को प्रशिक्षण देकर विकलांग खिलाड़ियों की सहायता की है।

लॉटरी उत्पाद 33 हज़ार फुटकर केन्द्रों से बेचे जाते हैं। 200 पौंड तक के पुरस्कार इन्हीं केन्द्रों से दिए जाते हैं। कुछ डाकघरों को 50 हज़ार पौंड तक के पुरस्कार देने के लिए अधिकृत किया गया है। भारी पुरस्कार प्राप्त करने वाले विजेताओं को व्यवसायिक सहायता भी दी जाती है।

राष्ट्रीय लॉटरी वितरण निधि के द्वारा लॉटरी से प्राप्त आय का वितरण किया जाता है। **अपने अस्तित्व के 10 वर्षो में 18.6 अरब पौंड की निधि लोकहित कार्यों के लिए अर्जित की गई जिससे 165,000 परियोजनाएं ब्रिटेन मे चलती हैं। लॉटरी से 1600 लोग लखपति बने हैं।**

6/49 लॉटो पहला लॉटरी खेल था और यह अब भी अग्रणी खेल है। लॉटो एक्स्ट्रा में जैकपॉट 50 मिलियन पौंड तक 'रोल ओवर' होने दिया जाता है। इसके बाद वह 'रोल डाउन' होता हैं और उन खिलाड़ियों के मध्य बंट जाता है जो आवश्यक 6 संख्याओं की जगह 5 संख्याओं का मिलान कर पाते हैं। 'क्रिसमस मिलियनेयर मेकर' नवम्बर 1999 में शताब्दी के विशेष परिणाम वाले खेल जैसे शुरू हुआ। इसकी सफलता से प्रेरित होकर सन् 2001 में फिर से चलाया गया। खेल का परिणाम हर क्रिसमस की संध्या पर निकाला जाता है। इसके द्वारा 40 मिलियन पौंड का अनुदान लोकहित कार्यों के लिए किया गया और इसी के द्वारा 33 लोग लखपति बन चुके हैं।

राष्ट्रीय लॉटरी के द्वारा 28 खुरच कार्ड खेल प्रतिवर्ष संचालित होते हैं। एक समय पर सामान्यतः 12 खेलों की टिकिटें विक्रय की जाती हैं। खेल का अस्तित्व उसकी लोकप्रियता और मुद्रित टिकिटों की संख्या पर निर्भर करता है। 'कार्स एंड कैश' और 'मिलियनेयर' (जिसने लॉटरी के नए खिलाड़ियों को आकर्षित किया) के अलावा 'मोनॉपोली', 'कैश फॉर लाइफ' और 'ग्रेंड नेशनल' मौजूदा तात्कालिक खेलों में अधिक लोकप्रिय हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका :

संयुक्त राज्य अमरीका में वर्तमान में 38 राज्यों में लॉटरी प्रचलित हैं। इन राज्यों के नागरिकों द्वारा जनादेश दिए जाने पर लॉटरी यहां प्रारंभ की गई।

एरीज़ोना लॉटरी :

सन् 1990 में एरीज़ोना के नागरिकों ने लॉटरी संचालन के पक्ष में मतदान दिया। सन् 2002 में 73 प्रतिशत नागरिकों ने लॉटरी जारी रखने के पक्ष में मतदान दिया। जून 2003 में लॉटरी में भाग लेने की आयु 18 वर्षों से बढ़ाकर 21 वर्ष कर दी गई। टिकिटों का विक्रय 2500 फुटकर विक्रय केन्द्रों से किया जाता है। प्रत्येक खेल को विभिन्न हितकारी योजना के लिए चिन्हित किया जाता है। आय का आबंटन विरासत

निधि, शुद्ध वायु निधि, आर्थिक विकास निधि के लिए किया जाता है। सन् 1981 से अब तक एरीज़ोना लॉटरी ने राज्य कोषालय के लिए 2 अरब डॉलर अर्जित किए हैं।

कैलिफोर्निया लॉटरी :

सन् 1984 में कैलिफोर्निया राज्य के 54 प्रतिशत नागरिकों ने कैलिफोर्निया राज्य लॉटरी अधिनियम का अनुमोदन किया। अधिनियम में उल्लेखित है कि आय का 34 प्रतिशत सार्वजनिक शिक्षा के लिए आबंटित किया जाए। सन् 2005 में लॉटरी निधि से 8.3 मिलियन छात्रों को सहायता मिली।

कॉलोरेडो लॉटरी :

सन् 1983 में राज्य लॉटरी शुरू हुई। लॉटरी आय का पचास प्रतिशत जी.ओ.सी.ओ. (ग्रेट आउटडोरस् कॉलोरेडो न्यास निधि) को, 40 प्रतिशत 'संरक्षण न्यास निधि' को और 10 प्रतिशत राज्य पार्क को आंबटित किया जाता है। जी.ओ.सी.ओ. निधि पर 35 मिलियन डॉलर की सीमा होती है, इस सीमा के बाहर की अतिरिक्त राशि पब्लिक स्कूलों में वितरीत कर दी जाती है जिसका व्यय सुरक्षा व स्वास्थ्य पर किया जाता है। 35 मिलियन डॉलर की निधि खुले स्थानों, स्थानीय पार्कों, वन्य पशुओं और पर्यावरण पार्कों पर खर्च की जाती हैं। संरक्षण निधि शहर और नगरों के लिए होती हैं जहां स्थानीय सुविधाओं के नवीनीकरण और तात्कालिक प्रबन्धन के लिए दान की आवश्यकता होती है। सन् 2005 में कॉलोरेडो लॉटरी द्वारा इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए 114 मिलियन डॉलर शासन को दिए गए।

कनेक्टिक्ट राज्य लॉटरी :

सन् 1971 में राज्य की आय बढ़ाने के लिए कनेक्टिक्ट राज्य लॉटरी शुरू हुई। प्राथमिक चरण में 'लॉटरी' नामक केवल एक खेल संचालित होता था। इसके लाभ राज्य के सामान्य कोष में जमा कर दिए जाते थे। तात्कालिक खुरच खेल सन् 1975 में आरम्भ हुए। सन् 1996 में कनेक्टिक्ट पहला राज्य बना जहां अर्द्ध–सार्वजनिक लॉटरी

निगम बनाया गया। सन् 2006 में प्रथम अर्धवर्ष के दौरान इस निगम ने 587 मिलियन डॉलर के पुरस्कार वितरित किए और 285 मिलियन डॉलर सामान्य कोष में दिए। इस कोष का धन लोक स्वास्थ्य, सुरक्षा, ग्रंथालय, शिक्षा आदि पर खर्च किया जाता है। अब तक निगम सामान्य कोष में 5.8 अरब डॉलर का योगदान दे चुका है।

डी. सी. लॉटरी और धर्मार्थ खेलों का कन्ट्रोल बोर्ड :

कोलंबिया के जिले ने अपना लॉटरी संचालन सन् 1982 में प्रारंभ किया। अब तक इसने सामान्य कोष में 1.1 अरब डॉलर का योगदान दिया है जिसका उपयोग शिक्षा, पार्क, सार्वजनिक सुरक्षा, आवास, वरिष्ठ नागरिकों और बाल सेवाओं के लिए किया जाता है।

डेलावेर लॉटरी :

सन् 1975 मे प्रारंभ इस लॉटरी द्वारा राज्यकोष में 1.8 अरब डॉलर का योगदान दिया गया है। 2004 के वित्तीय वर्ष में उसने 222 मिलियन डॉलर दिए। इस सामान्य राज्य कोष से सार्वजनिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवा, लोक सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण नियंत्रण, बाल्य, युवा व परिवार सेवाओं के क्षेत्र में कार्य सम्पादित किए जाते हैं। लॉटरी संचालक को विशेष खेलकूद, सामाजिक और धर्मार्थ खेलों के टिकिट विक्रय हेतु विशेष एजेंटों को लाइसेंस देने के लिए प्राधिकृत किया गया है। राज्य विडियो लॉटरी भी चलाता है।

फ्लोरिडा :

फ्लोरिडा लॉटरी अपनी आय को शिक्षा पर खर्च करती है। फ्लोरिडा विधायिका ने सन् 1997 में 'ब्राइट फ्यूचर स्कॉलरशिप' प्रोग्राम लागू किया। हाईस्कूल में छात्रों की उपलब्धियों पर उन्हें पुरस्कृत किया जाता है। सन् 1997 में 262,000 फ्लोरिडा के छात्रों को 1.3 अरब डॉलर मूल्य के पुरस्कार दिए गए। जिन पुरस्कारों का दावा न किया गया हो, उनका तात्कालिक खुरच लॉटरी के पुरस्कारों का भुगतान करने के लिए और ऑनलाइन खेलों के प्रवर्तन के लिए उपयोग किया जाता है। अब तक 15 अरब डॉलर का योगदान

'एजूकेशन एंहान्समेंट ट्रस्ट फंड' और 'फ्लोरिडा मेंटर फंड' के माध्यम से शिक्षा के लिए दिया जा चुका है।

जॉर्जिया लॉटरी निगम (जी.एल.सी.) :

यद्यपि जॉर्जिया में लॉटरी की शुरुआत सन् 1784 में हुई, आधुनिक जॉर्जिया लॉटरी निगम सन् 1992 में स्थापित हुआ। इसकी आय शिक्षा पर खर्च की जाती है। लॉटरी निधि के द्वारा उपलब्ध कराई गई एच. ओ.पी.ई. छात्रवृत्तियों की सहायता से **775,000 से अधिक छात्रों को उच्च शिक्षा का लाभ मिला। इसके द्वारा 560,000 चार वर्ष के बच्चों को पूर्व– बाल विहार में प्रवेश लेने की सहायता मिली है।** जिन पुरस्कारों का दावा नहीं होता है, वे पुरस्कार के पूल में चली जाती हैं जबकि उसके 200,000 डॉलर का अनुदान जॉर्जिया मानव संसाधन विभाग को शिक्षा और जुआ सट्टा से संबंधित समस्याओं के उपचार के लिए व्यय किया जाता है। जी.एल.सी. 6 प्रतिशत राज्य आयकर और 25 प्रतिशत संघीय आयकर की कटौती करता है।

इस निगम को विपणन उत्कृष्टता के लिए जॉर्जिया ट्रेंड मैगज़ीन का वार्षिक डोनाल्ड आर.क्यूग पुरस्कार मिला हैं। सन् 1996 के दौरान अंटलांटा ओलंपिक के लिए जी.एल.सी. ने अपने खिलाड़ियों और बाहर के देशों के खिलाड़ियों के लिए ओलंपिक रिंग के भीतर तीन कक्ष भी स्थापित किए थे।

हुस्सेर इंडियाना लॉटरी (एच.आई.एल.) :

एच.आई.एल. की स्थापना सन् 1989 में हुई। तब से उसके द्वारा 383 लखपति बन गए। एच.आई.एल. की आय का वितरण पुलिस अधिकारियों और अग्निशमन के कर्मचारियों की पेंशन निधि के लिए, शिक्षकों की सेवानिवृत्ति निधि, सड़क निर्माण कार्य, स्कूल, संपत्ति कर प्रतिस्थापन निधि और सामान्य निधि के लिए किया जाता है। राज्य 5000 डॉलर के ऊपर के पुरस्कारों पर 3.4 प्रतिशत स्थानीय कर और 25 प्रतिशत संघीय कर लेती है।

इदाहो लॉटरी :

सन् 1989 में स्थापित इस लॉटरी से सार्वजनिक स्कूलों, कॉलेज और विश्वविद्यालयों को 300 मिलियन डॉलर का योगदान दिया गया है। इसके द्वारा शैक्षणिक संस्थाओं के स्थायी भवनों के लिए भी योगदान दिया जाता है।

इल्लीनोइस लॉटरी :

इल्लीनोइस राज्य ने सन् 1975 में लॉटरी संचालित करना शुरू किया। सन् 1985 में सी.एस.एफ. (कामन स्कूल फंड) में लाभ राशि जमा करने के लिए अधिनियम बनाया गया जिससे सार्वजनिक स्कूलों को सहायता मिले। इल्लीनोइस की विधायिका के द्वारा तय किया जाता है कि सी.एस.एफ. का वितरण किस प्रकार होगा। 1,000 डॉलर की राशि के ऊपर राज्य द्वारा 3 प्रतिशत कर और 5,000 डॉलर के ऊपर के पुरस्कारों पर 25 प्रतिशत संघीय कर लगाया जाता हैं। सन् 2004 में राज्य लॉटरी ने 1.7 अरब डॉलर का विक्रय किया और 570 मिलियन डॉलर का वितरण सी.एस.एफ. को किया।

आइओवा लॉटरी (Iowa Lottery) :

आइओवा राज्य लॉटरी की शुरुआत 1985 में 'स्क्रेच, मैच एंड विन' से शुरू हुई। सन् 1992 तक केवल एक डॉलर मूल्य की टिकिटें विक्रय की गई। बिंगो दो डॉलर वाला पहला खेल आया। सन् 2005 में लॉटरी के द्वारा राज्य के सामान्य कोष में 51 मिलियन डॉलर का योगदान दिया गया।

कन्सास लॉटरी :

कन्सास लॉटरी अधिनियम सन् 1984 में पारित किया गया। सन् 2005 में लॉटरी विभाग ने 65 मिलियन डॉलर राज्य के सामान्य कोष में स्थानांतरित कर दिए। इस कोष का 85 प्रतिशत आर्थिक विकास निधि (ई.डी.आई.एफ.) के लिए आबंटित किया जाता हैं, 10 प्रतिशत उपचारक संस्थाओं के भवन निधि के लिए और 5 प्रतिशत किशोर बंदी गृह की सुविधाओं के लिए स्थापित निधि में दिया जाता है।

केन्टुकी लॉटरी निगम :

सन् 1989 में स्थापित इस निगम के द्वारा अब तक राज्य कोषालय को 2 अरब डॉलर का योगदान दिया गया है। इसकी आय से कॉलेज अनुदान और छात्रवृत्तियां और सामान्य कोष में योगदान दिया जाता हैं। सन् **1999 से निगम ने 637 मिलियन डॉलर का अनुदान छात्रवृत्तियों के लिए दिया जिससे 592,000 छात्र लाभान्वित हुए।** इसके अनुदान के द्वारा 18 मिलियन डॉलर केन्टुकी के शिशुओं को पढ़ाई के लिए प्रेरित करने वाली निधि और साक्षरता विकास के लिए दिए गए। 32 मिलियन डॉलर वियतनाम युद्ध के वरिष्ठ सैनिकों, 1.4 अरब डॉलर सामान्य कोष को और 21 मिलियन डॉलर केन्टुकी आवास निगम के अफोर्डेबल हॉउसिंग ट्रस्ट फंड (कम लागत वाले मकानों के निर्माण हेतु) प्रदान किए गए। **आवास निधि के द्वारा राज्य ने अब तक ज़रूरतमंदों को 2770 मकान प्रदान किए हैं।**

लूयिसियाना लॉटरी निगम :

1990 मई में लूयिसियाना में लॉटरी शुरू हुई। तात्कालिक टिकिटों से पहला खेल आरंभ किया गया। अपनी स्थापना से निगम ने 1.6 अरब डॉलर का योगदान राजकोष को दिया है।

मेइन राज्य लॉटरी :

इस राज्य की लॉटरी योजनाओं से राजकोषालय की सामान्य निधि को 650 मिलियन डॉलर से भी अधिक का अनुदान मिला है। इस निधि से राज्य के 250 एजेंसियों को और कार्यक्रमों को सहायता मिलती है। राज्य 5000 डॉलर के ऊपर के पुरस्कारों पर 5 प्रतिशत कर आरोपित करता है।

मैरीलैंड राज्य लॉटरी :

मैरीलैंड राज्य में पिक–3, लॉटो, केनो, मेगा मिलियन के खेलों में सर्वाधिक आय खुरच टिकिट खेलों में होती है। केनो, पिक–3, पिक–4 अन्य खेल हैं जिनका अधिक विक्रय दर्ज किया गया है। सन् 2006 में एम.एस.एल. के द्वारा 501 मिलियन डॉलर शिक्षा, लोक स्वास्थ्य

आदि पर खर्च किए गए और 20.5 मिलियन डॉलर मैरीलैंड स्टेडियम प्राधिकरण को दिए गए।

मासाचूसेट्स राज्य लॉटरी कमिशन :

अतिरिक्त आय जुटाने के लिए इस कमीशन की शुरुआत सन् 1971 में हुई। आरम्भ में तात्कालिक खेल शुरू हुए। लॉटरी से प्राप्त आय का कामनवेल्थ के 351 शहरों और नगरों में विधायिका द्वारा स्थापित स्थानीय सहायता फार्मूला के अंतर्गत वितरण किया जाता है। इन शहरों और नगरों को आबंटित निधि से अपनी आवश्यकतानुसार व्यय करने की स्वतंत्रता होती है। उदाहरण के लिए, चेस्टर ने इस आय का उपयोग नई प्राथमिक शाला के निर्माण के लिए किया, हैलीफैक्स ने अपने अग्निशमन केन्द्र का नवीनीकरण किया, ऑरेंज ने क्षेत्रीय स्कूल प्रणाली की सहायता की। लोवेल ने 'टीसोनगा अरीना' और 'एडवर्ड ए ले लॉचर बॉल पार्क' में सुधार कार्य किए। उक्सब्रिज में नया पुलिस थाना और विलियम्सबर्ग में नई लाईब्रेरी बनाई गई।

सन् 2003 में आयोग के द्वारा 705 मिलियन डॉलर कामनवेल्थ को वितरित किए गए।

नवम्बर सन् 1999 में नवशताब्दी के आगमन पर मिलिनियम अनूठे खेल (Millenium spectacular games) **प्रारंभ किए गए जिसमें 80 प्रतिशत पुरस्कार भुगतान के लिए रखा गया। सन् 2001 में अपशिष्ट निवारण अभियान के लिए नया लॉटरी खेल 'क्लीन फन स्वीपस्टेक्स' शुरू किया गया। इसके द्वारा खिलाड़ियों को 10 डॉलर की नहीं जीतने वाली टिकिटों पर 100,000 डॉलर के पुरस्कार पर बाजी लगाने की अनुमति दी गई। फलस्वरूप 40 से 50 लाख तात्कालिक टिकिटों या 85 टन कागज़ की पुनर्चक्रण किया गया ताकि उससे फिर टिकिट का कागज बन सके। इसी को मार्च सन् 2002 में दोहराया गया जिसमें 76 टन कागज़ का पुनर्चक्रण किया गया।**

मिशीगन राज्य लॉटरी विभाग :

सन् 1972 में प्रारंभ इसके पहले खेल की टिकिट 50 सेंट में बेची गई। विभाग ने अपना पहला तात्कालिक खेल सन् 1975 में आरंभ किया। इसके बाद अन्य लॉटरी खेल जैसे डेली 3, डेली 4, 6/40 लॉटो, 6/47 लॉटो और केनो सफलतापूर्वक शुरू किए गए। सन् 1987 में पहली बार खेल का विक्रय 1 अरब डॉलर तक पहुंच गया।

सन् 1995 में विभाग ने तात्कालिक टिकिटों से प्राप्त आय के वितरण को क्रेडिट आधार से बदलकर परेषण पर आधारित प्रणाली में बदल दिया। इससे फुटकर विक्रेताओ को अनेक तात्कालिक खेलों का स्टॉक बढ़ाने का मौका मिल गया जिससे वे खिलाड़ियों को विविध प्रकार के खेलों में से चुनाव करने का अवसर दे पाए।

सन् 1997 में विभाग ने अपने संचालन की 25 वर्ष बाद रजत जयंती मनाई जिसमें 5 डॉलर वाले तात्कालिक खेल 'पच्चीसवीं एनिवसरी कैश' (25th anniversary cash) को प्रवर्तित किया जिस पर 250,000 डॉलर का पुरस्कार रखा गया।

लॉटरी से प्राप्त आय को शाला सहायता निधि और सार्वजनिक शैक्षणिक कार्यक्रमों की सहायतार्थ दी जाती है। **सन् 1972 से लॉटरी ने मिशीगन के पब्लिक स्कूलों को 12.9 अरब डॉलर का योगदान दिया है।**

मिन्नेसोटा राज्य लॉटरी (एम.एस.एल.) :

सन् 1988 में मिन्नेसोटा राज्य में लॉटरी की शुरुआत 57 प्रतिशत मतदाताओं के अनुमोदन के बाद शुरू हुई। विधायिका ने लॉटरी से आय का वितरण पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन न्यास निधि (ई.एन. आर.टी.एफ.) और बृहत्तर मिन्नेसोटा निगम (जी.एम.सी.) के बीच समान रूप से कर दिया।

सन् 1990 में एम.एस.एल. ने लॉटो और डेली–3 जैसी तात्कालिक लॉटरियां शुरू की। आय के वितरण को दो बार परिवर्तित किया गया।

सन् 1991 में विधायिका ने लॉटरी आय का 40 प्रतिशत न्यास निधि में और 60 प्रतिशत सामान्य निधि में बंटवारा कर दिया। सन् 1993 में 1 अरब डॉलर का विक्रय दर्ज किया गया। सन् 1997 में उसके द्वारा 'स्क्रेच एन स्निफ' का तात्कालिक खेल 'सिन्नेमन टोस्ट' आरंभ हुआ।

सन् 2000 में बहुराज्जीय खेल 'रोल डाउन' की शुरुआत की गई जिसमें यदि पुरस्कार न मिले तो कम दर पर मान लिया जाता है (लोअर टायर प्राइज़ेस)। पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन न्यास निधि (ई.एन. आर.टी.एफ.) उन परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करता हैं जो राज्य के प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने के कार्य में लगी रहती हैं। अपनी स्थापना के वर्ष से एम.एस.एल ने ई.एन.आर.टी.एफ. में 367 मिलियन डॉलर और सामान्य कोष में 801 मिलियन डॉलर का अनुदान दिया है। सामान्य कोष से सार्वजनिक शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और जन सुरक्षा को वित्तीय सहायता दी जाती है। लॉटरी पर आरोपित विक्रय कर का 87 प्रतिशत पर्यावरण के कार्यक्रमों के लिए और 13 प्रतिशत सामान्य निधि में वितरित किया जाता है। पर्यावरण की परियोजनाओं में लाभान्वित संस्थाए इस प्रकार हैं – 'फिश एंड वाइल्ड लाइफ', 'कॉरीडोर्स', 'मेट्रो ग्रीनवेज', 'गिट्ची', 'गेमी स्टेट ट्रेल', 'बायोलॉजिकल सर्वे', 'सॉइल सर्वे' आदि। एम.एस.एल पर्यावरण पत्रिका 30 मिनट के एक साप्ताहिक टी.वी. शो के माध्यम से चलाई जाती है जिसमें मिन्नेसोटा के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और उनसे आनंद प्राप्त करने वाले कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है।

मिसौरी लॉटरी :

सन् 1984 में 70 प्रतिशत मतदाताओं के अनुमोदन के पश्चात् सन् 1985 में मिसौरी लॉटरी की शुरुआत हुई। सन् 1986 में जैकपॉट के नाम से पहली तात्कालिक लॉटरी शुरू हुई। राज्य ने पुल टैब खेल सन् 1990 में शुरू किया। सन् 1992 में नागरिकों ने लॉटरी बिल के संशोधन को अनुमोदित किया, तब लॉटरी से आय का उपयोग सार्वजनिक शिक्षा के लिए होने लगा। सन् 1996 में लॉटरी के 10 वर्षों के पूर्ण होने के

उपलक्ष्य में 'फन एंड फॉर्चून' टीवी खेल शुरू किया गया।

मॉन्टेना लॉटरी :

जब मॉन्टेना के नागरिकों ने सन् 1986 में लॉटरी के पक्ष में मत दिया, तब मॉन्टेना अमरीका का तेईसवां राज्य बना, जहां लॉटरी शुरू हुई। 'पॉट ऑफ गोल्ड' पहला तात्कालिक खेल था।

लॉटरी आय को शिक्षक सेवानिवृत्ति निधि के लिए चिन्हित किया गया। सन् 1990 में विधायिका ने जब परिवर्तन किया तब लॉटरी के लाभ को 'पब्लिक इन्सट्रक्शन स्कूल इक्वेलाइज़ेशन अकाउंट' के लिए आबंटित कर दिया गया। सन् 1991 में फिर एक संकल्प पारित हुआ और लाभ का 1.6 प्रतिशत अपराध नियंत्रण मंडल (बी.सी.सी.) को किशोर बंदी केन्द्र चलाने के लिए दे दिया गया। बी.सी.सी. के इस आंबटन को विधायिका ने 9.1 प्रतिशत बढ़ा दिया और बाद मे सन् 1995 में समस्त आय को मॉन्टेना के सामान्य राजकोष में जमा किया जाने लगा।

5000 डॉलर से अधिक के पुरस्कारों पर राज्य कर 10 प्रतिशत की दर से और संघीय कर 2.5 प्रतिशत की दर से लगाया जाता है। मॉन्टेना के बाहरी खिलाड़ी निवासियों पर 39 प्रतिशत की दर से कर लगाया जाता है।

नेब्रास्का लॉटरी :

जब सन् 1992 में नेब्रास्का अमरीका का सैंतीसवां लॉटरी शुरू करने वाला राज्य बना, तब उसके पॉवर बॉल और नेब्रास्का पिक–5 खेल काफी लोकप्रिय हुए।

नेब्रास्का ने एम.वी.पी. नामक सर्वाधिक महत्व के खिलाड़ियों का क्लब (मोस्ट वैल्यूएबल प्लेयर क्लब) शुरू किया। इसके सदस्यों को नए लॉटरी खेल, प्रतिस्पर्धाओं और प्रवर्तन के सम्बन्ध में जानकारी दी जाती है और नूतन सर्वेक्षण और शोध परिणामों से भी उन्हें अवगत रखा जाता है। उन्हें निशुल्क लॉटरी टिकिट, नकद राशि, व्यापार का माल या यात्राओं के रूप में पुरस्कार जीतने का अवसर भी मिलता है।

विधायिका के निर्देशों के अनुसार शिक्षा में नवाचार निधि और नेब्रास्का छात्रवृत्ति निधि में प्रत्येक को लॉटरी आय से 24.75 प्रतिशत मिलना चाहिए। इसी तरह नेब्रास्का पर्यावरणीय न्यास निधि को 49.5 प्रतिशत और विवश खिलाड़ियों की सहायता निधि को 11 प्रतिशत का अनुदान मिलना चाहिए। अब तक राज्य कोषालय को लॉटरी से 198 मिलियन डॉलर प्राप्त हो चुके हैं।

पर्यावरण न्यास निधि ने 'नेब्रास्का गेम और पार्कस कमीशन्स एक्वेटिक रिहैबीलिटेशन प्रोग्राम', 'लूइस एंड क्लार्क रिज़रवोयर' और 'रॉक क्रीक लेक प्रोजेक्ट' जैसी विभिन्न परियोजनाओं को अनुदान दिया है।

न्यू हैम्पशायर लॉटरी (एन.एच.एल.) :

संयुक्त राज्य अमरीका की प्रथम आधुनिक लॉटरी न्यू हैम्पशायर की है। जब सन् 1800 में लॉटरी पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, न्यू हैम्पशायर ने उसे सन् 1963 में पुनः संचालित करने में पहल की।

राज्य के प्रतिनिधि, लैरी पिक्केट ने स्वीपस्टेक लॉटरी को सम्भावित व स्वैच्छिक विधि मानते हुए शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए सन् 1953 और सन् 1963 के बीच पांच बार विधेयक प्रस्तावित किया। सन् 1963 में इसे राज्यपाल जॉन किंग ने पारित कर दिया। अब तक लॉटरी से 931 मिलियन डॉलर का योगदान मिला है।

एन.एच.एल. का खिलाड़ियों का एक संगठन है जहां उसके सदस्यों को पुरस्कृत संख्यांको की, नए तात्कालिक खेलों की और लॉटरी के विशेष उन्नयन से मिली जानकारी ई–मेल के द्वारा दी जाती है। राज्य द्वारा प्रतिवर्ष 40 से 55 तात्कालिक खेल संचालित होते हैं। सन् 2006 में एन.एच.एल. ने 'रीप्ले' खेल शुरू किया जिसमें खिलाड़ी अपुरस्कृत टिकिट पर भी दांव लगा सकता है।

न्यू मेक्सिको लॉटरी :

सन् 1995 में सेनेट के बिल 853 के द्वारा न्यू मेक्सिको लॉटरी

प्राधिकरण ने लॉटरी के शुरुआत खुरच खेलों से की ।

सन् 1997 में राज्य द्वारा 200 आई. टी. वी. एम. या तात्कालिक टिकिट विक्रेता मशीनें स्थापित की गई।

सन् 1996 में विधायिका द्वारा लॉटरी आय का 60 प्रतिशत 'केपिटल आउटले' में और 40 प्रतिशत 'लॉटरी ट्यूशन फंड' में आबंटित किया गया। 2001 में समूची आय को लॉटरी ट्यूशन फंड में डालकर उसका नामकरण 'लॉटरी सक्सेस स्कॉलरशिप' किया गया जिससे 22000 से भी अधिक छात्रों को आर्थिक सहायता दी गई। ये छात्रवृत्तियां न्यू मेक्सिको के उन छात्रों को दी जाती हैं जो कॉलेज या विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं।

न्यूयॉर्क लॉटरी :

न्यूयॉर्क के संविधान द्वारा न्यायालयीन आज्ञा दी गई कि लॉटरी से होने वाली आय का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में किया जाए। राज्यकोष में जाने वाले राजस्व का वितरण राज्य शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों को न्यूयॉर्क राज्य विधायिका के निर्देशित नियमों के अनुसार किया जाता हैं।

न्यूयॉर्क की भावी नेता छात्रवृति (न्यूयार्क लीडर ऑफ टुमॉरो) योजना से स्नातक उपाधि प्राप्त छात्रों को न्यूयार्क के कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियां दी जाती है।

न्यूयॉर्क लॉटरी से एम्पाइर राज्य खेलों को भी सहायता दी जाती है जो सम्पूर्ण देश में सबसे बड़ी प्रादेशिक शौकिया खेलकूद प्रतियोगिता होती है।

राज्य द्वारा चंदे के अनुदान पर लॉटो खेल प्रचलित है जिस पर 7.7 प्रतिशत राज्य कर व 25 प्रतिशत संघीय कर लगाया जाता हैं। अन्य राज्यों के निवासियों से 30 प्रतिशत कर लिया जाता है। 'क्विक ड्रॉ' को छोड़कर सभी खेलों के लिए न्यूनतम आयु 18 वर्ष निश्चित की गई है। क्विक ड्रॉ के लिए 21 वर्ष की आयु खिलाड़ी की होनी चाहिए।

उत्तर डाकोटा लॉटरी (एन.डी.एल.):

सन् 2002 में राज्य ने अपने संविधान में बहुराज्जीय लॉटरी में भाग लेने के लिए संशोधन किया। लॉटरी शुरू करने के निर्णय के बाद राज्य ने कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के छात्रों के मध्य एन.डी.एल. के 'लोगो' की डिज़ाइन करने के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की। कई छात्रों की डिज़ाइनों में सुधार होते–होते अन्त में वर्तमान डिज़ाइन का स्वरूप चुना गया।

एन.डी.एल. का पहला खेल पॉवर बॉल मार्च 2004 में प्रारंभ किया गया। प्रारंभ के तीस मिनट के भीतर विक्रय की दर दो टिकिट प्रति सेकंड हो गई। दो माह बाद 'हॉट लॉटो' की शुरुआत की गई। डाकोटा राज्य हर खिलाड़ी को बहु परिणामों की टिकिट खरीदने की अनुमति देता है जिससे वह आगे के लगातार नौ परिणामों की टिकिट एक मुश्त में खरीद सकता है।

मार्च सन् 2004 में जब पहला खेल शुरू हुआ, तब से एन.डी.एल. ने 5.3 मिलियन डॉलर की आय अर्जित की।

ऑरेगन लॉटरी :

ऑरेगन लॉटरी 66 प्रतिशत मतदाताओं के अनुमोदन से सन् 1984 में अस्तित्व में आई। परीक्षण के बतौर राज्य ने 'ब्रेक ओपन्' खेलों से शुरुआत की। उसकी लोकप्रियता से प्रभावित होकर शासन ने 30 से भी अधिक 'ब्रेक ओपन्' खेल शुरू किए। एक के बाद एक केनो, मेगाबक्स, स्क्रेचर्स, पॉवर बॉल और 'विन फॉर लाइफ' खेल कालावधि में आरम्भ हुए। सन् 1989 में देश में पहले खेल के लिए 'फुटबॉल स्पोर्टस् एक्शन टिकिट' चलाए गए। दो प्रकार की छात्रवृत्तियां चलाई जाती हैं, शिक्षा के लिए अकादमिक स्कॉलरशिप्स् और खेलकूद के लिए एथलेटिक स्कॉलरशिप। इन पर क्रमशः आय का 12 प्रतिशत और 88 प्रतिशत व्यय किया जाता है। सन् 1992 में राज्य में विडियो लॉटरी शुरू की गई।

प्राथमिक अवधि में ऑरेगन के स्कूलों पर लॉटरी से प्राप्त लाभ

को खर्च किया जाता था, बाद में आर्थिक विकास और जनशिक्षा के लिए निधि का आबंटन किया गया। यह सन् 1985 तक से अब तक 3.4 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। तदनन्तर लाभान्वितों की तालिका में बाग–बगीचे और सेलमन मछली के पुनरुद्धार भी जोड़ दिए गए। ओरेगॉन के मतदाता लॉटरी आय से लाभान्वित होने वाले क्षेत्रों पर निर्णय देते हैं। उन लाभान्वितों में आय का वितरण किस प्रकार होगा, इसका निर्णय विधायिका के द्वारा किया जाता है, उदाहरण के तौर पर, जनशिक्षा निधि का उसके विभिन्न घटकों में, जैसे 'स्टेट स्कूल फंड', 'एजूकेशन एन्डॉमेंट/स्टेबिलिटी फंड', 'डिपार्टमेंट ऑफ एजूकेशन' और 'इंटरकोलिजिएट एथलेटिक्स अकादमिक स्कॉलरशिप्स्' में किस तरह आबंटन होगा, उसका निर्णय विधायकों पर छोड़ दिया जाता है। सन् 1999 से अब तक 123 मिलियन डॉलर का लाभ विकास कार्यक्रमों पर खर्च किया जा चुका हैं।

सन् 1990 में ऑरेगन लॉटरी को 'स्पोर्टस एंड पब्लिक गेमिंग्स लॉटरी एक्सपो इंटरनेशनल' में लॉटरी के नेतृत्व का स्थापक पुरस्कार 'पायनियर अवार्ड फॉर लॉटरी लीडरशिप' प्रदान किया गया।

पेंसिलवेनिया लॉटरी :

सन् 1971 में पेंसिलवेनिया लॉटरी का जन्म विधायिका अधिनियम 91 से हुआ। सन् 1972 के पहले खेल में टिकिट का मूल्य 50 सेंट था। पहला तात्कालिक खेल 'रब ऑफ' सन् 1975 में प्रारंभ हुआ। उसकी लोकप्रियता के कारण वर्तमान में 30 खुरच खेल प्रचलित हैं। 'डेली नंबर', 'द फर्स्ट 3–डी नंबर खेल' सन् 1977 में प्रारंभ किए गए और उनकी लोकप्रियता बरकरार है। कालान्तर में अन्य खेल जैसे बिग–4, कीस्टोन जैकपॉट आदि आरंभ किए गए। अपने पन्द्रहवें वार्षिक समारोह पर राज्य के द्वारा 'सैटर्डे' नामक तात्कालिक खेल का टीवी संस्करण शुरू किया गया।

सन् 1985 में फुटकर विक्रताओं के साप्ताहिक लेखों को समायोजित करने के लिए 'इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर सिस्टम' लाया गया। सन् 1993

में आई.टी.वी.एम. की स्थापना से विक्रय की दर में बढ़ोतरी हुई।

अपने स्थापना वर्ष से पेंसिलवेनिया लॉटरी ने विभिन्न कार्यक्रमों के लिए 14 अरब डॉलर का योगदान दिया है। मार्च 2004 के वित्त वर्ष के अन्त तक उसने संपत्ति कर/राजस्व विभाग के भाड़े में 'रिबेट' पर 127 मिलियन डॉलर का योगदान दिया जिससे 331,095 घरों को लाभ पहुंचा है। यातायात विभाग के 'मास ट्रांसिट' प्रोग्राम में वरिष्ठ नागरिकों को 120.82 मिलियन डॉलर प्राप्त हुए जिससे उन्हें 39 मिलियन निःशुल्क यात्रा का लाभ भी हुआ।

कम मूल्य की दवाईयों के कार्यक्रम पी.ए.सी.ई. और पी.ए.सी.ई.एन.ई.टी. के अंतर्गत 370 मिलियन डॉलर का अनुदान मिला है जिससे विभाग को 39,250 प्रतिदिन चिकित्सक के निर्धारित नुस्खे देने का अवसर मिला। 650 वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'डिपार्टमेंट ऑफ एजिंग' द्वारा संचालित सामुदायिक केन्द्रों को 212 मिलियन डॉलर का अनुदान मिला जिससे 7.7 मिलियन वृद्ध व्यक्तियों को भोजन मिल सका।

दक्षिण कैरोलीना शिक्षा लॉटरी :

लॉटरी से प्राप्त समुची आय को साउथ कैरोलीना शिक्षा पर खर्च करती है, इसलिए लॉटरी का नाम 'दक्षिण कैरोलीना एजूकेशन लॉटरी' (एस.सी.इ.एल.) पड़ा। जहां एस.सी.इ.एल. लॉटरी संचालित करता है, उच्च शिक्षा के लिए स्थापित दक्षिण कैरोलीना आयोग पाल्मेट्टो फैलोज़ छात्रवृत्तियां उपलब्ध कराता है। बहुत सी छात्रवृत्तियों में 'लाइफ स्कॉलरशिप' और 'साउथ कैरोलीना होप स्कॉलरशिप' प्रमुख हैं। सन् 2006 तक लॉटरी विभाग ने 1.45 अरब डॉलर का अनुदान राज्य की विधायिका को दिया है। विधायिका ने भी निर्देश दिया है कि इस निधि का उपयोग केवल नूतन कार्यक्रम और अवसरों के लिए किया जाए ना कि शिक्षकों के वेतन या नए शिक्षकों के लिए।

राज्य के कुल 30 खेलों में 'श्रिम्प एंड ग्रिट्स', 'कैरोलीन मिलियनेर' और 'कैश बोनान्ज़ा' जैसे तात्कालिक परिणाम वाले खेल सम्मिलित हैं। 'कैश बोनान्ज़ा' में दूसरा परिणाम निकालने का अवसर भी रहता हैं। हाल ही में राज्य ने स्थानीय कलाकारों की साझेदारी में तात्कालिक टिकिटों की 'आर्टिस्ट सीरीज़' के नाम पर लॉटरी की श्रृंखला आरंभ की है।

दक्षिण डकोटा लॉटरी :

सन् 1986 में नागरिकों के द्वारा 60 प्रतिशत मत प्राप्त होने के बाद राज्य में लॉटरी आरम्भ हुई। अगले वर्ष दक्षिण डकोटा लॉटरी की स्थापना हुई। सन् 1989 में राज्य ने विडियों लॉटरी शुरू करके इस दिशा में स्थापक होने का श्रेय पाया। प्रारंभ से ही खुरच खेलों के द्वारा 59 मिलियन डॉलर की आय हुई। प्राप्त राशि सामान्य राजकोष में स्कूलों की सहायतार्थ और स्वास्थ्य, मानव और समाज सेवा की परियोजनाओं के लिए दी जाती है। सन् 1989 से लॉटरी के द्वारा 1 अरब डॉलर से भी अधिक आय विडियो लॉटरी से प्राप्त हुई है। प्रारम्भिक काल में यह आय सामान्य राजकोष में जाती थी। सन् 1995 में इसे संपत्ति कर कम करने की निधि (प्रॉपर्टी टैक्स रिडक्शन फंड) के लिए चिन्हित कर दिया।

सन् 1990 में प्रारंभ लॉटो खेल के द्वारा 48 मिलियन डॉलर की आय हुई जिसका उपयोग 'कैपिटल कन्सट्रक्शन निधि' के माध्यम से जल विकास परियोजना, राजमार्ग परियोजना और इथोनल उत्पादनों की वित्तीय सहायता के लिए किया जाता है।

राज्य में 4 लॉटो खेल और 3 बहुराज्यीय खेल संचालित होते हैं जैसे पॉवर बॉल, वाइल्ड कार्ड 2, हॉट लॉटो और डकोटा कैश (जो 5/35 लॉटो हैं)। तात्कालिक परिणाम वाले खेलों का मूल्य 1 डॉलर से 10 डॉलर तक होता है और उस पर 1 डॉलर से 150,000 डॉलर का पुरस्कार दिया जाता है।

टेनिसी लॉटरी :

राज्य में 58 प्रतिशत मतों से प्राप्त जनादेश के अनुसार सन् 2002 में लॉटरी चलाने की अनुमति प्राप्त हुई। टेनिसी शिक्षा लॉटरी निगम जो एक अर्द्ध शासकीय संगठन है, उसे लॉटरी संचालन के लिए प्राधिकृत किया गया। लॉटरी निधि का उपयोग शिक्षा और उच्चतर शिक्षा की छात्रवृत्तियों के लिए किया जाता है। लॉटरी टिकिटों का विक्रय जनवरी सन् 2004 मे किया गया। जुलाई सन् 2004 तक 123 मिलियन डॉलर की आय छात्रवृत्तियों के लिए अर्जित की गई।

टेक्सस लॉटरी :

इसकी स्थापना सन् 1991 में की गई। यहां राज्य विभिन्न खेलों को चलाता है जिनमें बिंगो खेल पूर्णतः लोकहित के धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए संचालित होता है जिसके लिए अलग से 'चैरिटेबल बिंगो डिवीज़न' को प्रभारी बनाया गया है। प्रारंभ से लॉटरी ने राजकोष में 13 अरब डॉलर का योगदान दिया है और सन् 1997 से 8 अरब डॉलर फाउंडेशन स्कूल निधि को दिया गया है।

इन वर्णित देशों के अलावा विश्व में अनेक देश हैं जहां लॉटरी संचालित की जाती है। ऐसे सभी देशों का संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया गया है।

अफ्रीकी देश :

मॉरिशस में शासकीय लॉटरी समिति पारम्परिक निष्क्रिय (Passive) लॉटरी चलाती है जिसकी आय राष्ट्रीय कोष में जमा होती है। सन् 2004 में शासन ने ऑनलाइन लॉटरी शुरू की।

मोज़ाम्बिक में स्पोर्टस टोटो संचालित करने का कार्य टोटो–लॉटो (empresa de Lotarias e Apostas Mutuas de Mocambique) द्वारा किया जाता है।

युगांडा की लॉटरी सन् 2003 में बीजिंग की 'डेफरी टेक्नालॉजी

एंड डेवलपमेन्ट' के सहयोग से शुरू हुई। एक वर्ष बाद कंपनी को घाटा होने पर संचालन निलम्बित कर दिया गया।

जाम्बिया की लॉटरी प्रबन्धन समिति ने सन् 2001 में जाम्बिया लॉटो का ही संशोधित खेल 'क्वाचामेनिया बिग बैंग' शुरू किया जो जाम्बिया बाजार के लिए उपयुक्त है।

अल्जीरिया में 'परी स्पोर्टिफ अल्जीरियन' द्वारा तात्कालिक लॉटो/ स्पाइल और स्पोर्टस टोटो खेल संचालित किए जाते हैं।

मोरक्को की राष्ट्रीय लॉटरी द्वारा लॉटो/स्पाइल नंबर खेल और केनो खेल संचालित होते हैं। सन् 1962 में टोटो स्पोर्टिफ शुरू की गई। सन् 1995 में इसका नाम 'ला टोटोफूट मारोकाइन डेस ज्यूक्स एट डेस स्पोंट्स' रखा गया। इसके द्वारा 'सूपरमैच', 'फूज़', 'फॉरच्यून', 'खमिओसा' और 'ब्रेवो' खेल चलाए जाते हैं। सन् 2001 में 231.3 मिलियन दिरहम की टिकिटों का विक्रय दर्ज किया गया।

सन् 1967 में **बेनिन** में 'लॉटरी नेश्नेल डू बेनिन' की स्थापना के साथ निष्क्रिय तात्कालिक और स्पोर्टस टोटो खेल शुरू किए गए जिनसे सन् 2001 में सी.एफ.ए. 8 अरब फ्रेंक की आय हुई।

सन् 1967 में **बुर्किना फासा** में लॉटरी शुरू की गई। यहां 'लॉटेरी नेश्नेल बरकिनाबे' स्पाइल और स्पोर्टस टोटो संचालित करती है। सन् 2001 में 2.5 मिलियन स्थानीय मुद्रा की टिकिटों का विक्रय हुआ।

आइवरी कोस्ट में सन् 1970 में 'लॉटेरी नेश्नेल दे कोटे देलवोइर' शुरू हुई। यह केवल तात्कालिक परिणाम वाले खेल संचालित करती है। सन् 2002 में उसे सी.एफ.ए. 5.5 अरब फ्रेंक की आय हुई।

गैम्बिया की राष्ट्रीय लॉटरी राष्ट्रीय विकास के लिए शासन को सहयोग देती है। इस व्यवसाय में 5000 युवा लगे हुए हैं। लॉटरी आय से प्राप्त लाभ से ब्रिकामा मस्जिद जैसी विकास परियोजनाओं को चलाया जाता है।

नाइजर की लॉटरी सेवाएं सन् 1993 में शुरू हुई। लोनानी (Loterie nationale du Niger) द्वारा तात्कालिक खेल चलाए जाते हैं।

नाइजीरिया की राष्ट्रीय खेलकूद लॉटरी (एन.एस.एल.) खेलकूद विकास हेतु सन् 2001 में शुरू की गई। किंग एंड जॉर्ज लिमिटेड एक फुटबॉल पूल्स कंपनी है जो एन.एस.एल. की एकमात्र एजेंसी है।

सेनेगल की लॉटरी सेवाएं सन् 1982 में शुरू हुई। लोनेस (Loterie Nationals Senegalaise) लॉटो/स्पाइल और स्पोर्टस टोटो जैसे तात्कालिक खेल अन्य लॉटरियों के साथ चलाती है। सन् 2003 में इसने 52 मिलियन डॉलर का व्यवसाय किया। शासन द्वारा लोनेस का निजीकरण प्रस्तावित है।

सिएरा लिओन में सन् 2001 में बिंगो लॉटरी शुरू हुई। सन् 2002 में प्राप्त आय से 'कनॉट एंड प्रिंस मेटर्निटी हास्पिटल' और 'नेशनल स्कूल ऑफ नर्सिंग' के अलावा 30.5 मिलियन 'लिओन्स कॉलेज ऑफ मेडिसिन' और 'एलाइड हेल्थ साइंस' को आर्थिक सहायता दी गई।

एशियाई देश :

कोरिया 'कोलॉटो' ऑनलाइन लॉटरी का संचालक है, व चार तात्कालिक परिणाम वाले खेल भी चलाता है, जैसे 'स्ट्राइक इट रिच', 'ब्लैकजैक', 'स्लॉट' और 'पोकर'। यहां का संचालक है 'कोरिया लॉटरी सर्विस' जो निर्माण मंत्रालय और परिवहन, संस्कृति मंत्रालय और अन्य समाज कल्याण कार्यक्रमों के लिए अपनी आय की सहायता देता है।

सन् 1989 में शुरू हुई 'सिऔल ओलंपिक स्पोर्टस प्रमोशन फाउंडेशन' राष्ट्रीय खेल उन्नयन निधि को आर्थिक सहायता देती है। इसके द्वारा स्पोर्टस टोटो, अन्य खेलकूद और त्वरित एथलेटिक खेल संचालित होते हैं। **लॉटरी से प्राप्त आय से ही कोरिया में पिछला विश्वकप और बुसन एशियाई खेल आयोजित किए गए।** सन् 2002 में लगभग दस सार्वजनिक और निजी लॉटरी संचालकों ने आपस में विलीनीकरण के बाद कुकमिन बैंक के नेतृत्व में एक कनसोर्टियम या संघ बना लिया

gpl lottery ka khel.indd 179 11/15/2007 4:07:05 PM

है। 'टाइगर पूल्स' खेलकूद पर दांव वाले खेल चलाता है।

ताइवान में 'पब्लिक इंट्रेस्ट लॉटरी' सन् 2002 में प्रारंभ हुई। वित्त मंत्रालय के अधीन ताइपीइ बैंक, खेलों को संचालित करता है। राज्य के द्वारा निष्क्रिय खेल, तात्कालिक खेल और 6/42 ऑनलाइन लॉटो चलाया जाता है। खेलकूद लॉटरी चलाने के लिए राज्य द्वारा योजना बनाई जा रही है। लॉटरी के द्वारा अनेक अशक्त समूहों को लाभ मिलता है। **174 प्रमुख पुरस्कार विजेताओं ने अब तक एन.टी. 257 मिलियन डॉलर 98 समाज कल्याण संगठनों को दान में दिए हैं। ताईवान में छोटे पुरस्कार के विजेताओं के लिए उसी अनुपात में धर्मार्थ के लिए दान देना सामान्य बात है।**

सन् 2005 में **पाकिस्तान** में खेलकूद के विकास के लिए पाकिस्तान खेलकूद न्यास ने 'हीरो कार्ड' नामक लॉटरी शुरू की है।

फिलिपिंस में सन् 1935 में पी.सी.एस.ओ. (फिलिपिंस चैरिटी स्वीपस्टेक्स ऑफिस) स्थापित हुआ। इसके द्वारा निष्क्रिय खेल चलाए जाते हैं। लॉटरी आय के 30 प्रतिशत भाग से निर्दिष्ट लोकहित कार्यों को सहायता मिलती है। सन् 1984 में स्थापित पी.ए.जी.ओ. (फिलीपिंस अम्यूज़मेंट एंड गेमिंग कॉरपोरेशन) ने 40 अरब आर. का विक्रय दर्ज किया है। इसके द्वारा 'प्रेसिडेंट्स सोशियल फंड', फिलीपिंस खेलकूद आयोग और अन्य शिक्षा, स्वास्थ्य और वैज्ञानिक कार्यक्रमों जैसी प्रमुख शासकीय सेवाओं को लाभ मिला है। सन् 2002 में इन निगमों को समाज कल्याण और विकास के अधीन कर दिया गया। इसके पहले वे राष्ट्रपति के सीधे नियंत्रण में थे।

वियतनाम में सी.एल.सी.एच. (कन्सट्रक्शन लॉटरी ऑफ द केपीटल –हनोई वियतनाम) और एस.बी.एल.सी (सॉन्ग बे लॉटरी कंपनी) के द्वारा लॉटरी के खेल संचालित होते हैं। सी.एल.सी.एच. पिक–2, पिक–3, और अन्य तात्कालिक खेल चलाता है। इसने लॉटरी टिकिटों का लगभग 220 खरब डांग का विक्रय दर्ज किया है। एक केनेडियन कंपनी से

gpl lottery ka khel.indd 180 11/15/2007 4:07:05 PM

संबद्ध होकर एस.बी.एल.सी. ने ऑनलाइन लॉटरी शुरू की है।

तुर्की में शासन की राष्ट्रीय लॉटरी 'मिल्ली पियान्गो इडरेसी' का निजीकरण किया जाना है। सन् 2003 में लॉटरी के द्वारा टी.एल. 589 खरब की आय अर्जित की गई।

यूरोपीय लॉटरियां :

बुल्गारिया में वित्त मंत्रालय के अधीन कार्यरत 'स्पोर्ट्स टोटलाइज़ेटर' द्वारा लॉटो, खेलकूद पर बाजी के खेल और दूसरे अन्य खेल केवल खेलकूद के लाभ के लिए चलाए जाते हैं।

लिथुआनिया में यहां की ओलिफेगा इनकॉर्पोरेशन के द्वारा 'टेलीलॉटो', 'टुज़ीनस', 'केनोलॉटा', 'कस लेम्स मिलीजोना' और 'जेगा–2' जैसी लॉटरियां चलाई जाती हैं।

पोलैंड में 'टोटलाइज़ेटर स्पोर्टावी स्पोका' द्वारा 'डूज़ी लोटेक', 'एक्सप्रेस लॉटरी', 'ज़ाकलेडि स्पेकजैन', 'मल्टी लोटेक' व अन्य खेल चलाए जाते हैं। राज्य के स्वामित्व में 'पोलस्की मोनोपोल लोटेरीनी स्पोलका' द्वारा 'ब्रेक–ओपन' और अन्य खुरच खेल संचालित होते हैं।

रशियन फेडरेशन में 'प्रेस–लॉटो' के पास लॉटरी संचालित करने के लिए राष्ट्रीय लॉटरी लाइसेंस है। प्रेस–लॉटो सम्मिलित स्वामित्व वाला संचालक है जिसमें पत्रकारों का 'यूनियन ऑफ जॉर्नलिस्ट' और 'रगबी नेशनल कॉरपोरेशन' की हिस्सेदारी है। लॉटरी खेल से प्राप्त होने वाला लाभ प्रतिवर्ष 10 अरब रूबेल्स का होता है।

स्लोवेनिया में 'र्स्पोटना लॉटेरीजा' के द्वारा लॉटरी संचालित होती है।

यूक्रेन में लॉटरी के दो संचालक हैं – 'यूक्रेनियन नेशनल लॉटरी' और 'मॉलॉडस्पोर्टलॉटो'।

एस्टोनिया की लॉटरी सन् 1971 में राज्य के स्वामित्व में 'यू.एस. एस.आर. स्टेट कमिटी फॉर फिज़िकल कल्चर एंड स्पोर्टस' के तत्वाधान में शुरू हुई। यू.एस.एस.आर के विखंडन के बाद एस्टोनिया की लॉटरी

(ए एस एस्टी लॉटो) सन् 1991 में स्थापित हुई। इसके द्वारा तात्कालिक खेल, लॉटो, केनो, बिंगो, और अन्य खेल संचालित होते हैं। प्राप्त आय से कला और संस्कृति, शिक्षा, विज्ञान और खेलकूद के कार्यक्रमों को सहायता मिलती है।

फिनलैंड की लॉटरी 'ओ विकाउस एबी' की स्थापना सन् 1940 में हुई। लॉटो, बिंगो, टीवी खेल, फुटबॉल पूल्स, बाजी के खेल, घुड़दौड पर राउंड लगाने के और तात्कालिक खेल संचालकों द्वारा चलाए जाते हैं। प्राप्त आय का उपयोग कला, खेलकूद, युवा कार्यों और विज्ञान के विकास के लिए किया जाता है। 'वैकाउस लॉटरी' राज्य के अधीन है और गृह मंत्रालय उसके कार्यों पर निगरानी रखता है। प्रतिदिन उसके द्वारा फिन्निश समाज के लिए 1 लाख यूरो की आय प्राप्त होती है।

आइसलैंड की लॉटरी के तीन संचालक हैं।

लैट्विया में लॉटरी का संचालन लैट्विजस लॉटो के द्वारा किया जाता है।

स्वीडन के 'ए. बी. टिप्सटजेस्ट' और 'स्वेन्सका पेन्निंग–लॉटेरियट' – इन दोनों बड़े लॉटरी संगठनों का विलय 1997 में हुआ और नया संगठन 'ए.बी. स्वेंस्का स्पेल' बनाया गया। इसके द्वारा तात्कालिक परिणाम की लॉटरियां, स्पाइल, स्पोर्टस बेट्स, लॉटो, केनो और विडियो लॉटरी चलाई जाती हैं। 'स्ट्राइकटिपसेट' सर्वाधिक पुराना खेल है। 'पूल्स खेल' सन् 1934 में प्रारंभ किए गए और तभी से इनमें कोई अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है।

क्रोएशिया में 'ऋवस्तका लूटरिजा' के द्वारा लॉटरी संचालित होती है।

ग्रिब्राल्टर में शासकीय लॉटरी सन् 1947 में प्रारंभ हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद राज्य के द्वारा युद्ध में खाली हुए आवासों के निर्माण के लिए जो ऋण राज्य ने लिया था, उसके भुगतान के लिए राज्य ने लॉटरी चलाई। यहां केवल पारम्परिक परिणामों वाली लॉटरियां चलती हैं

और अन्य स्थानों के निवासियों को भी भाग लेने की अनुमति होती है।

ग्रीस में ग्रीक राज्य लॉटरी सन् 1862 में प्रारंभ हुई। इसके द्वारा पारंपरिक लॉटरियां संचालित होती हैं और तात्कालिक खेलों की टिकिटों का विक्रय किया जाता है। प्राप्त आय राष्ट्रीय कोष में जमा होती है। ओ.पी.ए.पी. (ग्रीक ऑरगेनाइज़ेशन ऑफ फुटबॉल प्रोगनोस्टिक्स) की शुरुआत सन् 1959 में हुई। यह लॉटो, टोटो, केनो आदि के साथ खेलकूद पर दांव लगाने वाली लॉटरी चलाता है। प्राप्त आय से देश में फुटबाल के खेल को लाभ मिलता है।

इटली के सी.ओ.एन.आई. (Comitato Olimpico Nazionale italiano) खेलकूद पर आधारित लॉटरी चलाता है। उनसे प्राप्त धनराशि का उपयोग विभिन्न खेलकूद गतिविधियों के विकास के लिए किया जाता है। सन् 1990 में स्थापित 'लॉटोमैटिका एस.पी.ए.' जो एक और संचालक है, लॉटो, घुड़दौड़ पर आधारित 'ट्रिस' और कार रेसिंग पर आधारित फॉर्मूला 101 खेल चलाता है। सन् 1946 में स्थापित 'सिसल स्पोर्ट इटालिया एस.पी.ए.' अपने खेलों, विशेषतः 'इनालॉटो' के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय है।

माल्टा के लॉटो विभाग का निजीकरण कर दिया गया जब राष्ट्रीय लॉटरी अलाभकारी स्थिति में आ गई। इस राष्ट्रीय लॉटरी की शुरुआत 'बिग लॉटरी' के नाम से सन् 1948 में हुई। 'ले–क्बीरा' उसका पहला लॉटरी खेल था। प्रथम चरण में एक निजी कंपनी, माल्टको को सात वर्षों के लिए लॉटरी संचालन का लाइसेंस दिया गया है।

पुर्तगाल की राष्ट्रीय लॉटरी 'सैन्टा कासा दा मिसेरीकोर्डिया' सन् 1493 से ही शुरू हो चुकी थी। यह यूरोप की सर्वाधिक पुरातन लॉटरी है। इससे प्राप्त होने वाली आय का उपयोग सामाजिक परियोजनाओं, अस्पताल और गिरजाघरों के लिए किया जाता है।

मेकिडोनिआ में लॉटरी का दायित्व 'लॉटेरिजा ना मेकिडोनिजा' संगठन का होता है।

gpl lottery ka khel.indd 183 11/15/2007 4:07:05 PM

ऑस्ट्रिया में 'ऑस्टेरेइचीस्चे लॉटेरियम जेस्म बी.एच.' की शुरुआत सन् 1986 में हुई। इस संगठन के द्वारा फुटबाल पर आधारित खेल, आंकड़ों के खेल, क्लैसनलॉटरी (ऑस्ट्रियन क्लासिक लॉटरी), तात्कालिक रूबैल्लोज, ब्रेक ओपन्, ब्रीफलॉस, बिंगो और ऑनलाइन खेल चलाए जाते हैं। औसतन 42 प्रतिशत पुरस्कार राशि दी जाती है। सन् 2002 में इसने 1.3 अरब यूरो की टिकिटों का विक्रय किया।

जर्मनी में 'ड्यूटसी क्लासेनलॉटेरी बर्लिन' के द्वारा परिणाम मूलक खेल, तात्कालिक खेल, लॉटो स्पाइल, स्पोर्टस टोटो और अन्य खेल बर्लिन क्षेत्र में खिलाए जाते हैं। लॉटरी निधि को शिक्षा, कलाओं, संस्कृति, धर्मार्थ कार्यों, विज्ञान और खेलकूद के लिए वितरित कर दिया जाता है। ब्रेमेन क्षेत्र की संचालक एजेंसी 'Bremer Toto und Loto GmbH' आदि से प्राप्त आय का उपयोग कलाओं, संस्कृति, धर्मार्थ कार्यों और खेलकूदों के लिए किया जाता हैं। नॉर्थ राइन की 'Westdeutsche Lotterie GmbH & Co.' के द्वारा लॉटो, केनो, स्पाइल, सूपर्ब और ग्लकस्पाइरेल खेल चलाए जाते हैं जिनका उपयोग विभिन्न सामाजिक परियोजनाओं के लिए किया जाता है।

लक्समबर्ग की राष्ट्रीय लॉटरी सन् 1945 में परिणाम मूलक और तात्कालिक खेलों के साथ हुई। इनसे प्राप्त आय का विभिन्न लोकहित और सामाजिक संगठनों जैसे रेड क्रॉस और राष्ट्रीय आपात निधि को आबंटन किया जाता है।

लैटिन अमरीकी राज्य

अर्जेंटीना में दो संचालक (Asociacion de Loterias Quinielas y Casinos Estatales और Loteria Nacional Sociedad del Estado) हैं। इनके द्वारा स्पाइल खेल, अंकों के खेल, निष्क्रिय खेल, खेलकूद, लॉटो और अन्य तात्कालिक खेल चलाए जाते हैं।

अरुबा लॉटरी सन् 1992 में शुरू हुई और सन् 1999 में यहां ऑनलाइन खेल चलाए गए। यहां 'लॉटो पा डिपोर्टे', 'कटोची प्रो डिपोर्ट',

'लॉटो दी डाया' और 'रेस्पा' खेल संचालित किए जाते हैं। लॉटरी से लाभान्वित होने वाला क्षेत्र अरुबा का खेलकूद क्षेत्र है।

बारबाडोस लॉटरी सन् 2002 में 'ओलंपियो' और 'बारबाडोस टर्फ क्लब' के विलिनीकरण के बाद प्रारंभ हुई। इसके द्वारा 'डबल ड्रॉ', 'मेगा 6', 'नफ़ कैश', 'पॉवर प्ल', 'लोटा', 'इज़ी पिकिन' और 'क्विक ड्रॉ' खेल चलाए जाते हैं। इनसे 'बारबाडोस ओलंपिक एसोसिएशन', 'बारबाडोस टर्फ क्लब', 'बारबाडोस नेशनल काउंसिल' और राष्ट्रीय सांस्कृतिक फाउण्डेशन को आर्थिक सहायता मिलती है।

बोलीविया में 'लॉटेरिआ नेसिओनल दे बेनिफिसेनसिआ वाय सेलयुब्रिडेड' के द्वारा लॉटो, निष्क्रिय खेल और अंकों के खेल संचालित होते हैं।

ब्रेज़ील में लॉटरी विभाग (Caixa Economica Fedral Departemento de Administracao de Loterias) के द्वारा लॉटो, तात्कालिक खेल, ड्रॉ के खेल और खेलकूद पर दांव लगाने के खेल संचालित होते हैं। प्राप्त निधि से शिक्षा, कला, संस्कृति खेलकूद क्षेत्र और शासकीय कोष की बढ़ोत्तरी में सहायता मिलती है।

चिली में 'लॉटेरिआ दे कन्सेपसियन' के द्वारा निष्क्रिय खेल, तात्कालिक लॉटरी, केनो और लॉटो चलाए जाते हैं। एक अन्य संचालक, पोला चिलेना दे बेनेफिसेंसिया, निष्क्रिय और तात्कालिक खेलों के अलावा लॉटो और स्पोर्टस टोटो खेल संचालित करता हैं।

कोलंबिया में लॉटरी संचालक हैं – फेडल्को, कोलंबिया लोटेरिआ दे बोगोटा और लॉटेरिआ दे मेडेल्लिन।

कोस्टा रीका में 'Junta de Proteccion Social de san Jose' लॉटरी संचालक है। सन् 2002 में यहां सी. 41.9 अरब कोलोंस के मूल्य की टिकिटें विक्रय की गई।

इक्वाडोर में 'Junta de Beneficencia de Guayaquil' और **एल**

सेलवाडोर में 'लॉटेरिआ नेसिओनल दे बेनिफिसेनसिआ' के द्वारा लॉटरी चलाई जाती है।

प्यूरटो रिको की इलेक्ट्रानिक लॉटरी (लॉटेरिआ इलेक्ट्रानिका) 1989 में स्थापित हुई जो 3–डी और लॉटो खेल चलाती है। लॉटरी से आर्थिक रूप से कमज़ोर वरिष्ठ नागरिकों को किराए के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है। लॉटरी निधि से प्यूरटो रिको की नगरपालिकाओं को और विधायिका द्वारा निश्चित की गई अन्य परियोजनाओं को आर्थिक सहायता मिलती है।

उरुगुए में खेलों का संचालन बी.सी.सी.क्यू. (बैंका डी क्यूबिएरटा कलेक्टिवा डी क्वाईनियल्स डी मॉन्टी विडियो) द्वारा किया जाता है। यह शासकीय नियंत्रण की निजी कंपनी है जो विक्रय का पूर्व निश्चित प्रतिशत प्राप्त करती है। इसके द्वारा लॉटरी के कई खेल चलाए जाते हैं, जैसे 5/36 लॉटो, 5/44 लॉटो, अंकों वाला खेल, क्विनीला, केनो जिसका नाम तंबोला है और क्विको जो बिंगो और परिणाममूलक खेल के बीच का संकर (हाईब्रिड) खेल है।

वर्जिन आइलैंड की लॉटरी जो सन् 1957 में शुरू हुई, निष्क्रिय और तात्कालिक परिणाम वाले खेल संचालित करती है। इससे विकलांग बच्चों की निधि और सामान्य कोष को लाभ मिलता है।

21. बहुराष्ट्रीय और बहुराज्जीय लॉटरियां

बहुराष्ट्रीय लॉटरियां :

बहुराष्ट्रीय लॉटरियां सम्मिलित रूप से देशों के एक समूह द्वारा चलाई जाती हैं।

1. वाइकिंग लॉटो :

सन् 1992 में पहली बहुराष्ट्रीय लॉटरी, वाइकिंग लॉटो पांच स्केडिनेवियाई देशों द्वारा चलाई गई। यह लॉटरी एक साथ डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे और स्वीडन में संचालित होती है। सन् 2000 में एस्टोनिया भी इस अखिल नॉरडिक लॉटरी में शामिल हो गया। इसकी लोकप्रियता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता हैं कि सन् 2003 में फिनलैंड ने वाइकिंग लॉटरी पर ई.यू.आर. 67 लाख का व्यवसाय किया।

2. यूरो–मिलियन :

सन् 2004 में प्रारंभ यह खेल ब्रिटेन, फ्रांस और स्पेन के द्वारा सम्मिलित रूप से संचालित हुआ। इसके साप्ताहिक परिणाम पेरिस में निकाले जाते हैं। वर्तमान में आस्ट्रिया, बेल्जियम, आयरलैंड़, पुर्तगाल, लक्जेमबर्ग और स्विटजरलैंड भी इसमें शामिल हो गए हैं।

बहु–राज्जीय लॉटरियां :

बहुराज्जीय लॉटरियां सभी सदस्य राज्यों में खेली जाती हैं।

1. संयुक्त राज्य अमरीका :

यहां की लॉटरियां बहु–राष्ट्रीय लॉटरी संघ (एम.यू.एस.एल.) द्वारा

नियंत्रित होती हैं। एम.यू.एस.एल. एक अलाभ संगठन है जो सदस्य राज्यों के आधिपत्य में संचालित होता है। एम.यू.एस.एल. द्वारा चलाए जाने वाले खेलों में से सदस्य राज्य एक या एक से अधिक खेलों का चुनाव करते हैं। सन् 1987 में प्रारंभ 'लॉटो अमरीका' एम.यू.एस.एल. का पहला खेल था जिसे चार वर्षों के बाद बन्द कर दिया गया। एम.यू.एस. एल. के विभिन्न खेलों में पॉवर बॉल सर्वाधिक लोकप्रिय है।

खिलाड़ी अपनी पुरस्कृत टिकिट पर उसी राज्य से पुरस्कार प्राप्त करता है जहां से उसे खरीदा है क्योंकि प्रत्येक सदस्य राष्ट्र अपना लेखा अलग रखता है। परंतु जैकपॉट निर्धारित करना, आय–व्यय का बजट बनाना, लेखा–विवरण तैयार करना, परिणामों की निगरानी, जन सम्पर्क, सॉफ्टवेयर का निर्माण और विकास कार्य, कानूनी कार्यवाही जैसे कार्यों में सभी सदस्य राज्यों की साझेदारी होती है। प्रत्येक राज्य दावा न की जाने वाली टिकिटों की पुरस्कार राशि का उपयोग अपनी विभिन्न परियोजनाओं पर करता है।

सन् 1996 में 'द बिग गेम' जॉर्जिया, इलिनॉय, मेरीलैंड, मासाचूसेट्स, मिशीगन और वर्जीनिया द्वारा शुरू किया गया जो इसके सदस्य राज्य बने। सन् 1998 में न्यू जर्सी भी शामिल हो गया। सन् 2002 में इसका नाम मेगा–मिलियन हो गया। उसी वर्ष इस समूह में न्यूयॉर्क, ओहायो और वाशिंगटन भी सम्मिलित हो गए जबकि टेक्सस सन् 2003 में सदस्य बना।

आय का पचास प्रतिशत पुरस्कारों के रूप में बंटता है – 5 प्रतिशत खुदरा व्यापारियों और 35 प्रतिशत राज्य सेवाओं के लिए आबंटित होता है जिसका उपयोग वे राज्य सार्वजनिक शिक्षा, लोक स्वास्थ्य और अन्य हितकारी कार्यों के लिए करते हैं। आय के शेष भाग को प्रशासकीय कार्यों व संचालन व्यय पर खर्च किया जाता है। लॉटरी निधि के वितरण का प्रतिशत अलग–अलग सदस्य राज्यों में थोड़ा अलग होता है।

सन् 1992 में प्रारंभ 'पॉवर बॉल' बहुराज्जीय लॉटो खेल है जिसमें

gpl lottery ka khel.indd 188 11/15/2007 4:07:05 PM

बंपर राशि का जैकपॉट होता है। इसमें, कोलंबिया जिला और अमरीका के वर्जिन आइलैंड के अलावा 27 राज्य शामिल हैं।

नेब्रास्का और कन्सास मिलकर 2 x 2 लॉटरी चलाते हैं जिसमें खिलाड़ी को 1 और 26 के बीच 2 लाल रंग के और 2 सफेद रंग के संख्यांकों का चुनाव करना पड़ता है। परिणामों का संचालन बहुराज्जीय लॉटरी संघ द्वारा किया जाता हैं। प्रति सप्ताह छः परिणाम निकाले जाते हैं। बॉल की संख्यांक का निकाले गए संख्यांक के मिलान पर पुरस्कार आधारित होता है।

मैइन, न्यू हैम्पशायर और वरमॉन्ट के तीन राज्यों द्वारा त्रि–सदस्यी 'मेगाबक्स' सन् 1985 में और 'हेड्स ऑर टेल्स' सन् 2003 में शुरू हुआ।

सन् 1998 में उत्तर डाकोटा की पहल पर कोलंबिया जिला, आयोवा, मिनीसोटा, मॉन्टेना, न्यू हैम्पशायर, साउथ डकोटा और वेस्ट वर्जीनिया ने साथ–साथ 'एन.डी. हॉट लॉटो' प्रारंभ की। उत्तर डाकोटा ने सन् 1998 में 'एन.डी. वाइल्ड कार्ड' प्रारंभ किया।

कनेक्टिक्ट, कोलंबिया जिला, डेलावेर, आयोवा, कन्सास, केन्टुकी, लूयिसियाना, मिन्नेसोटा, न्यू हैम्पशायर, न्यू मेक्सिको, ऑरेगन, पेंसिलवेनिया, दक्षिण कैरोलीना सदस्य राज्य सम्मिलित रूप से तात्कालिक खेल शो पॉवर बॉल, मल्टीमिलियनेयर चलाते हैं।

2. ऑस्ट्रेलिया :

सन् 1981 में दक्षिण ऑस्ट्रेलिया, विक्टोरिया, पश्चिम ऑस्ट्रेलिया और अन्त में क्वीन्सलैंड ने मिलकर 'ऑस्ट्रेलियन लॉटो ब्लॉक' संगठित किया। पुरस्कार राशि के एकत्रीकरण के अपवाद को छोड़कर प्रत्येक ब्लाक का सदस्य, हर कानूनी, आर्थिक व प्रशासकीय मामले में पूर्णरूप से स्वतंत्र हैं। सन् 1989 में 'ऑस्ट्रेलिया वाइड सॉकर पूल्स ब्लॉक' बनाया गया। इसमें इंगलैंड या ऑस्ट्रेलिया में होने वाले सॉकर मैचों के परिणाम के आधार पर पुरस्कार प्राप्त करने वाले अंकों की गणना की जाती हैं। अंकों से 38

मैचों का हर सप्ताह चुनाव किया जाता है और पुरस्कार प्राप्त करने वाले संख्यांकों की गणना, उन खेलों से की जाती हैं जो बराबरी (ड्रॉ) से समाप्त होते हैं। सदस्य राज्यों के द्वारा सम्मिलित रूप से 'ओज़ लॉटो', 'गोल्ड लॉटो', 'पॉवर बॉल' या 'द बिग गेम' भी संचालित होते हैं।

22. लॉटरी घोटाले

कंप्यूटर हैकिंग :

मॉस्को के एक निजी लॉटरी संचालक ने पाया कि एक विशेष ग्राम के लोग बार–बार पुरस्कार विजेता बन रहे थे। टिकिटों का अनुरूपण या छेडछाड़ संभव नहीं था क्योंकि उन टिकिटों में तीस सुरक्षा उपाय होते थे। बाद में ज्ञात हुआ कि उस ग्राम से दो युवा विक्रेता कंपनी के कंप्यूटर में अनाधिकृत प्रवेश (हैकिंग) कर रहे थे।

टेलीफोन द्वारा धोखाधड़ी :

सन् 2002 में ब्रिटेन के लोगों को केनेडा की नेशनल लॉटरी में निःशुल्क प्रविष्टि की सूचना और बाद में पुरस्कार मिलने की सूचना फोन पर मिलती थी। उसके बाद फोन करने वाले उनसे पुरस्कार पर कर या प्रक्रिया शुल्क के लिए धनराशि की मांग करते थे। यदि फोन पाने वाला ऐसी मांग पर फीस दे देता, उसके बाद उस तथाकथित पुरस्कार विजेता को कथित लॉटरी कंपनी हमेशा के लिए विस्मृत कर देती थी।

अवैध अप्रवासी विजेता :

सन् 2002 में कॉलोरेडो के हिस्पैनिक वरिष्ठ नागरिक एक दूसरे 'विजित टिकिट' के शिकार बने। प्रपंचकारी धोखाधड़ी के लिए एक गैंग में काम करते थे। उनमें से एक किसी स्पेनिश भाषा के वरिष्ठ नागरिक को विश्वास दिलाता कि उसकी टिकिट को पुरस्कार मिला है, परंतु वह उस पुरस्कार का दावा नहीं कर सकता क्योंकि वह देश में अवैध रूप से रहता है। गैंग का दूसरा सदस्य मासूम बनकर उसके नंबर के पुरस्कृत होने की तसदीक करता था। जाल बिछाने वाला पैसा लेकर

गायब हो जाता था और शिकार के पास सिर्फ एक जाली टिकिट रह जाती थी।

परंतु लॉटरी के अधिकारियों द्वारा यह निर्देशित किया गया है कि वे अप्रवासी जिनके पास वैद्य दस्तावेज नहीं हैं, वे भी जैकपॉट पुरस्कार का दावा पेश कर सकते थे, बशर्ते उनकी टिकिट सही हो और वास्तव में अप्रवासी द्वारा क्रय की गई हो। परंतु इन अप्रवासी पुरस्कार–प्राप्त कर्ताओं से सर्वाधिक कर वसूला जाता था।

टिकिट के बदले धन का विनिमय :

चूंकि भारत में धोखे का जाल रचने वाले यह दावा नहीं कर सकते कि वे अवैध रूप से निवास करने वाले अप्रवासी हैं, वे अपने शिकार को यह कहकर फंसाते हैं कि उन्हें पैसे की सख्त आवश्यकता है। लॉटरी में पुरस्कार प्राप्त करने की प्रक्रिया में समय लगता है, बस यही बहाना बनाकर जालसाज कहता कि वह अपनी टिकिट छोड़ने को तैयार है और इस तरह वह कुछ हज़ार रुपयों की पुरस्कार राशि हड़प लेता है। जाल में फंसे शिकारी को जब पुरस्कार पर दावा पेश करना पड़ता, तब उसे पता चलता कि टिकिट नकली है।

पुरस्कार प्राप्त करने वाले संख्यांकों की भविष्यवाणी करना :

कुछ ऐसे अंतर्राष्ट्रीय तथाकथित भविष्यवक्ता भी होते हैं जो दावा करते हैं कि वे जीतने वाले संख्यांकों को पहले से ही जाहिर करने की योग्यता रखते हैं। इस कला से वे भोले–भाले व्यक्तियों से धन इकठ्ठा कर लेते हैं। कुछ ऐसी कम्पनियां भी होती हैं जो ग्राहकों को पुरस्कार पाने वाले तथाकथित संख्यांकों पर उनके द्वारा अनुदान देने के लिए आकर्षित करती है।

अंतर्राष्ट्रीय लॉटरियां :

आसानी से जाल में फंसने वाले व्यक्तियों को ई–मेल और फोन से सूचना दी जाती है कि उनके लिए विशाल धनराशि वाले जैकपॉट इकठ्ठा करने के लिए रास्ता देख रहे हैं। विजेता को धनराशि पर दावा

करने के लिए "टैक्स" या "प्रशासकीय शुल्क" या "ट्रांसफर शुल्क" देने के लिए बाधित होना पड़ता है। यदि वह पूछेगा कि पुरस्कार राशि से ही कर की कटौती क्यों नहीं हो सकती, तब उसे बताया जाता है कि लॉटरी संचालक (जिस किसी देश का भी निवासी हो) पूरी धनराशि देना चाहता है। इन लॉटरी संगठकों के पते गलत होते हैं और इनके संपर्क नंबर मोबाइल फोन के नंबर होते हैं जिससे इनका पता लगाना कठिन होता है। इन धोखेबाज़ कंपनियों के नाम भी मौलिक नाम जैसे लगते हैं जिनसे लोग भ्रमित हो जाते हैं। साइबर अपराध पुलिस ने ऐसी 500 से अधिक अवैध कंपनियों की तालिका बनाई है जिसमें 'ब्रिटेन ओवरसीज़ लॉटो लिमिटेड', 'रॉयल स्पैनिश स्वीपस्टेक इंटरनैश्नल' और 'लॉटो नेट इंटरनैश्नल' जैसी कंपनियां शामिल हैं।

गुमशुदा धनराशि प्राप्त करना :

जब ऐसे अंतर्राष्ट्रीय लॉटरी के घोटाले चलते हैं, तब नागरिक भी काफी जानकार हो जाते हैं, इसलिए कुछ जालसाजों ने एक अलग चतुराईपूर्ण युक्ति तलाश की है। वे स्वाभाविक रूप से ली जाने वाली "फीस" के बदले में विदेशी लॉटरी घोटालों में फंसी धनराशि को वापिस दिलवाने का विश्वास दिलाते हैं।

बैंक खाता संख्या :

कुछ जाली अपराधी लॉटरी लगाने वाले से उसका बैंक का खाता नंबर, इस विश्वास के साथ ले लेते हैं कि वे उसे मिलने वाले पुरस्कार को उसके खाते में जमा करवा देगें। इस तरह वे अपने शिकार के खाते से कपट करते हैं।

चीनी घोटाले :

चीन के शान्कसी प्रांत के ज़िआन क्षेत्र के एक ठेकेदार और उसके कर्मचारी ने पुरस्कार जीतने वाली संभावित टिकिटों पर निशान लगाकर यह प्रचारित किया कि लोग उसी निशान वाली टिकिटों को पहचाने और खरीदें। इस धूर्तता का रहस्य उस समय खुला जब एक कर्मचारी को गलती से वह चिन्हित टिकिट मिल गई और संचालक ने उसे

कपटतापूर्ण बनाई गई टिकिट घोषित कर दिया।

शेनज़ेन के एक लॉटरी संचालक ने पुरस्कार जीतने वाली गेंदों में छोटा सा चुम्बक लगा दिया ताकि वह परिणाम निकालने वाली मशीन के कोने से आकर्षित हो जाए। अनुभवी व्यक्तियों द्वारा पुरस्कार प्राप्त करने के लिए उन्हीं गेंदों को निकाल दिया जाता था।

धोखाधड़ी युक्त धर्मार्थ लॉटरियां :

अफ्रीका के शरणार्थियों और शरण स्थल मांगने वालों की सहायतार्थ संचालित की गई तीस धर्मार्थ लॉटरियां जाली निकली। जहां बड़ी लॉटरियों की निधि से अंशदान करने वाले संगठनों के मध्य लॉटरी की आय वितरित होती है, वहां यह पाया गया कि कुछ ऐसे संगठन जो ऐसा अनुदान प्राप्त करना चाहते थे, वे भी नकली ही निकले।

23. लॉटरी पर दिए गए सूक्ति वाक्य/ वक्तव्य

थॉमस जेफरसन :

'लॉटरी ऐसा स्वस्थ निर्दोष उपकरण और कर है जो इच्छुक व्यक्तियों पर लगाया जाता हैं। अर्थात जो टिकिट के मूल्य पर बिना किसी ज्ञात हानि के, उच्चतर पुरस्कार की संभावना के उद्‌देश्य से दांव लगाने का खतरा उठाते हैं।'

राजा फ्रांसिस प्रथम, फ्रांस :

जब मेरी प्रजा के लोग लॉटरी खेलते हैं, वे दूसरों का अपमान करना और आपस में लड़ाई करके ईश्वर को दोष देना भूल जाते हैं।'

कहावत : 18–18, बाइबिल :

'पासा फेंकना एक ऐसी क्रिया है जो सभी विवादों का अन्त करती है और कड़े प्रतिद्वंदियों को अलग करती है।'

डॉ. मनोज शर्मा, यूनिवर्सिटी स्कूल, पंजाब यूनिवर्सिटी :

'लॉटरी खेलने में कोई दोष नहीं है, अगर वह सीमा में रहे, क्योंकि इस व्यवसाय से एकत्रित निधि का उपयोग अधिकांश रूप से विभिन्न शासकीय योजनाओं के लिए किया जाता है। अन्य स्थिति में राज्य को कर आरोपित करना पड़ता है। उसे करों का स्वप्रेरित भुगतान मानना चाहिए जिसमें मज़ा भी मिलता है।'

भूतपूर्व न्यायाधीश, एम. सी. छगला :

'शासन की सर्वोच्च उपलब्धि विश्वविद्यालय है। यह मेक्सिको के

कुछ प्रसिद्ध स्थापत्य कलाकारों के द्वारा निर्मित किया गया और इसका प्रांगण बहुत विशाल है।

इस विश्वविद्यालय के लिए धनराशि राज्य लॉटरी चलाने से प्राप्त हुई। दक्षिण अमरीकी निवासियों में बाजी लगाने का विशेष चाव हैं और सरकार ने इस प्रवृत्ति का बड़ी चतुराई से विचलन किया और लोगों के हित में श्रेष्ठ संभावित उपयोग किया। अपने मैक्सिको के पहले प्रवास के बाद **मैंने नेहरु को इस विश्वविद्यालय के बारे में लिखा और सुझाव दिया कि हमें भी लॉटरी शुरू करना चाहिए। मैनें उन्हें यह भी स्मरण दिलाया कि आयरलैंड में अधिकांश अस्पताल सुप्रसिद्ध लॉटरी 'आइरिश डर्बी स्वीपस्टेक्स' में अर्जित लाभ से निर्मित किए गए हैं।** इसका जवाब भी मुझे निष्पक्ष और तुरंत मिलाः'हमारे देश की कुछ परंपरायें हैं और राज्य लॉटरी चलाकर जुआ खेलने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना अनैतिक है। राज्य को इस बुराई को प्रोत्साहित करने और दबा देने के बजाए उस पर नियंत्रण करने की कोशिश करनी चाहिए।'

यह लिखने के कुछ वर्षों बाद मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि लगभग सभी राज्यों ने लॉटरी प्रारंभ कर दी है। दुर्भाग्य से दूसरों के अनुभव से सीखने में भारत को लंबा समय लगता है। अमरीका ने प्रतिबंध लगाकर जो प्रयोग किए थे, हमने उससे शिक्षा लेने से इंकार कर दिया, परिणामस्वरूप हमें करोड़ों रुपयों के राजस्व से वंचित होना पड़ा और दूसरी ओर पुलिस में और यहां तक की न्यायालयों में भी भ्रष्टाचार फैल गया और न्यायपालिका पर उसका गलत प्रभाव पड़ा। अब फिर से हम अपने कदमों को वापिस ले रहे हैं, परंतु किस कीमत पर?'

स्व. श्री सी.एन. अन्नादुराई, तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री :

'विलूंदाल वीटिरकु, विलाविटाल नाटिरकु' (यदि कोई खिलाड़ी लॉटरी जीतता है तो उसे लाभ मिलता हैं, यदि वह नहीं जीतता तो उससे देश को लाभ मिलता है।)

'द हिन्दू' समाचार पत्र के सपांदकीय लेख से उद्यृत, दिनांक 07.04.99 :

'दो अन्य क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है, हो सकता है कि इससे लॉटरी के बारे में हमारे अतिवादी दृष्टिकोण में कुछ नरमी आए। पहला तो आर्थिक दृष्टिकोण है। यह दिलचस्प है कि भारत की अधिकांश लॉटरी योजनाएं सामाजिक–आर्थिक उद्‌देश्यों के लिए चलाई गई, उनमें प्रमुख था रोजगार निर्माण। इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि लॉटरी से राज्यों को आय मिलती है जो भले ही रूढ़ीवादी तरीके से ना हो, परंतु जैसा कि अध्ययन से ज्ञात हुआ है, राज्यों को कठिन आर्थिक संकट के समय सहायता तो मिलती है।'

'द इकोनामिक टाइम्स' समाचार पत्र के सपांदकीय लेख से उद्यृत, दिनांक 01.04.99 :

'केंद्रीय काबिना ने लॉटरी और सट्‌टे पर प्रतिबंध लगाने का एकमत से निर्णय लिया है। स्पष्ट रूप से इस 'सामाजिक बुराई' के निषेध पर लोकसभा में लगभग मतैक्य है, यह बड़ा दिलचस्प विचार है। यह देश नैतिकता के उच्च प्रतिमानों पर अनाधिकार कब्जा नहीं कर सकता। इस देश में अनेकानेक गैर जोखिम कार्यों पर जनता के धन का जुआ खेला है। देश के स्वामित्व वाले बैंकों के पी.एस.यू. और एन.पी.ए. के घाटों का क्या हुआ? दूसरे, लोकसभा को यह मालूम होना चाहिए कि उसकी प्रजातांत्रिक नीतियां ही एक प्रकार का सट्‌टा है और किस तरह राजनीतिज्ञ चुनावों में अपने–अपने भाग्य की आज़माइश करने के लिए धन खर्च करते हैं। क्यों नहीं हम अपने पैसे से जोखिम उठाते हुए उसका मजा लें? फुर्सतिया सट्‌टाबाज़ी एक सभ्य खेल है। तीसरी बात यह है कि देश सट्‌टे पर प्रतिबंध नहीं लाद सकता। इसका अर्थ यह होगा कि वह गतिविधि भूमिगत हो जाएगी और उससे हमारी भ्रष्ट पुलिस के साथ मिलकर, जिसका काम लोगों के जीवन और संपत्ति की रक्षा करना है, अपराधी और अपराधकृत राजनीतिज्ञ लाभ उठाएंगे। अच्छा होगा कि राज्य इसे विधि सम्मत और विनियमित बनाए। ("कोटिल्य के अर्थशास्त्र

में सट्टाकेन्द्रों की देखरेख पर दिलचस्प अध्याय शामिल हैं।") इस खेल से प्राप्त आय का उपयोग विभिन्न रचनात्मक सामाजिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। इस झूठी नैतिकता के कारण एक बड़े उद्योग की संभावनाएं धूमिल हो गई हैं।'

बाल साहब ठाकरे :

विगत 36 वर्षों में लॉटरी ने महाराष्ट्र राज्य की आय में बहुत योगदान दिया है और अनेक सामान्य लोगों को रोज़गार दिया है।

प्रकाश सिंग बादल – मुख्यमंत्री पंजाब (प्रेस विज्ञप्ति डी.पी.आर सी.एम.99/1230) :

'संभावना है कि वर्तमान लॉटरी की पारदर्शी प्रणाली का स्थान 'सट्टा' या 'मटका' ले ले जो बेईमान लोगों और कालाबाज़ारी करने वालों के द्वारा जुआ खेलने के अवैध साधन हैं। प्रस्तावित प्रतिबन्ध लगाने से बेरोज़गारी बढ़ेगी। राज्य की अर्थव्यवस्था को हज़ारों करोड़ों की हानि होगी। राज्य द्वारा संचालित लॉटरी से केन्द्रीय शासन को आयकर, सेवाकर आदि के रूप में राजस्व प्राप्त होता है।'

'ब्रिटेन की राष्ट्रीय लॉटरी से अनेक समाज कल्याण विरासत के संरक्षण जैसे अनेक लोकहितकारी कार्य किए जाते हैं।'

क्रिस रॉलिन्सन, इंगलैंड के सर्वोच्च बाधा–दौड़ के खिलाड़ी :

'मेरे विचार से सभी लोगों को यह ज्ञान नहीं होता कि जब वे लॉटरी खेलते हैं, तब वे मेरे जैसे खिलाड़ी की ओलंपिक में प्रतिस्पर्धा के लिए सहायता करते हैं।'

माइकेला ब्रीज, ब्रिटिश भारोत्तोलक :

मैं उन सभी के प्रति आभारी हूं जो हर सप्ताह लॉटरी खेलते हैं। वे लोग मेरी और अन्य अनेक खिलाड़ियों की ओलंपिक में सफलता के सपने को जीवन्त रखने में सहायता करते हैं।

एडकूड, ब्रिटिश नाविक :

'मेरे विचार से सिडनी के ओलंपिक खेलों में मेरे 3 में से 2 पदक

जीतने के पीछे लॉटरी का ही श्रेय है।'

टेसा जुवेल, संस्कृति मंत्री, ब्रिटेन :

'इससे (लॉटरी से) विजेता निर्मित होते हैं, जीवन परिवर्तित होता है, समाज का रूपान्तरण होता है।'

लाशेंड मूर– एक मां :

'शायद सिर्फ एक माता होने के कारण अपने पुत्र विलियम को कभी स्कूल नहीं भेज पाती यदि टेनेसी लॉटरी की होप छात्रवृत्ति नहीं मिलती।'

gpl lottery ka khel.indd 200 11/15/2007 4:07:06 PM

24. लॉटरी संबन्धित क्षणिकाएं/सूक्तियां

– लॉटोलॉजी : लॉटरी टिकिटों के विभिन्न रूपों का शोध, अध्ययन व एकत्रित करना।

– लॉटोलॉजिस्ट : जो सक्रिय रूप से लॉटोलॉजी में शामिल रहता है।

– चीनी केनो को सफेद कबूतरों के खेल के नाम से जाना जाता था क्योंकि उनके द्वारा लॉटरी परिणामों को गांवों तक पहुंचाया जाता था।

– यद्यपि यह संयोग का खेल ज़रूर है, परंतु उसमें भी अन्धविश्वास की हिस्सेदारी होती हैं। सन् 1899 में सर्वाधिक लोकप्रिय स्पेनिश लॉटरी की मांग एकदम कम हो गई क्योंकि वह उस शताब्दी का अन्तिम निकाल था और इसलिए लोगों को लग रहा था कि वह दुर्भाग्य लाएगी।

– लॉटो के जुनून का पहला प्रकरण सन् 1755 में सामने आया जब उत्साहित खिलाड़ियों ने इंगलैंड टिकिट कार्यालय में विक्रय के पहले दिन दरवाज़े तोड़ दिए।

– मासाचूसेट्स की प्रथम उद्घाटक लॉटरी 'द गेम' का पहला परिणाम सन् 1972 में बॉस्टन के फेनुइल हॉल में निकाला गया। दिलचस्प बात है कि उसी हॉल का लॉटरी आय से ही पुनरुद्धार किया गया।

– सोलहवीं शताब्दी के दौरान जिनेवा के इटली गणतंत्र में 90 अभ्यर्थियों में से 5 'सेनेट' सदस्यों का चुनाव होना था। एक स्वर्ण मुद्रा के पुरस्कार पर नागरिकों को उनके नाम का अंदाजा लगाना था। जो पांचों नाम सही बतलाता, उसे जैकपॉट से पुरस्कृत किया जाता। बाद में बेनिडेटलो जेनटाइल के सुझाव पर उन नामों की जगह संख्यांक दे दिए गए और वर्तमान लॉटरी का जन्म वहीं से हुआ।

– भारत में राजाओं के शासन के समय ग्राम समिति के सदस्यों का चुनाव 'कुड़वोलाई' नामक लॉटरी से होता था। उनके नाम 'बोलाई' या ताड़ पत्रों पर लिखकर एक कुंडम यानि घड़े में डाल दिए जाते थे। उन्हें बेतरतीब तरीके से निकालकर सदस्यों के नाम चुने जाते थे।

– जब सन् 1968 में तमिलनाडु में लॉटरी प्रारंभ हुई, तत्कालीन राज्यपाल मान. सरदार उज्जलसिंग ने पहली लॉटरी टिकिट खरीदी।

– जब सन् 1974 में मेइन की लॉटरी शुरू हुई, तब रबर गेंदों पर नंबर मुद्रित कर उन्हें 'गमबॉल' मशीन से निकाला जाता था।

– जॉर्जिया के कैश–3 खेल में 571 का संख्यांक अगस्त 1994 की तीन रात्रि परिणामों में लगातार निकला। ऐसा ही दुबारा मार्च 1995 में हुआ जब 706 का नंबर लगातार तीन दिनों तक निकलता रहा।

– जार्जिया में 888 की संख्या फरवरी 1997, फरवरी 1998 और नवम्बर 1999 में कैश–3 के परिणाम में निकली।

– जार्जिया के ही कैश–3 खेल में 444 का संख्यांक नवम्बर 1994, दिसम्बर 1997 और जून 1998 में निकाला गया। मार्च 1998 में कैश–4 के निकाल में 2222 की संख्या निकली। ऑरेगन के बिग–4 में 7777 की संख्या नवम्बर 1989 में परिणाम के वक्त निकली ।

– ब्रिटेन में बताया गया कि ऑनलाइन लॉटरी का विक्रय कोकाकोला के विक्रय से 7 गुना अधिक था।

– फरवरी 1995 में मिशीगन के लॉटो खेल की 39,000 टिकिटें एक मिनट में और 2.2 लाख टिकिटें एक घंटे में बिक गई।

– 31 अक्तूबर, 1998 में 100 खिलाड़ियों के एक समूह ने, जो इटली के पेसचिसी गांव की लगभग पूरी जनसंख्या थी, 32 मिलियन यूरो का पुरस्कार जीता।

– 'गिनेस बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड' के अनुसार न्यू साउथ वेल्स के बेटू बे के निवासी डेरेन हाके के पास खुरच कार्ड का सबसे बड़ा संग्रह है। सन् 1993 से फरवरी 2000 तक उनके पास 311,362 कार्ड जमा हो गए थे।

– जब सन् 1996 में अंतर्राज्जीय पॉवर बाल लॉटरी में न्यू मैक्सिको शामिल हुआ, तब राज्यपाल जॉनसन ने प्रथम टिकिट क्रेताओं का नेतृत्व किया। सन् 1998 में रोडरनर कैश लॉटरी प्रारंभ होने पर सीनेटर रोमन मैज़ ने पहला टिकिट खरीदा।

– सन् 1996 में उत्तर अमरीका में प्रत्येक दिन 52 मिलियन डॉलर की राशि पुरस्कार में दी गई जिसके अनुपात में 36000 डॉलर प्रति मिनट का पुरस्कार 24 घंटों में वितरित किया गया।

– पूर्व–परिणाम टेस्ट, परिणामोत्तर टेस्ट, गेंदों के सैट का चुनाव, सुरक्षा प्रबन्धों की जांच आदि की सम्पूर्ण प्रक्रिया पर 3 घंटे का समय लगता है जबकि उसके परिणाम निकालने की प्रक्रिया मात्र 60 सेकंड की होती है।

– भारत में कुछ लोगों का विश्वास है कि जो दीवाली के दिन जुआ नहीं खेलते, वे अगले जन्म में गधे की योनि प्राप्त करते हैं। उनके अनुसार लॉटरी ही इससे बेहतर विकल्प है, इसलिए वे दीवाली के दिन लॉटरी ज़रूर खेलते हैं।

- नीदरलैंड के नेशनल पोस्टकोड लॉटरी में लॉटरी टिकिटों पर जो संख्यांक होते हैं, वे नीदरलैंड के पोस्टल कोड प्रणाली पर आधारित होते हैं। डाक से सीधे टिकिटों का विक्रय होता है। पोस्टल कोड के क्षेत्र के निवासियों के पास अगर उसी पोस्ट कोड वाली टिकिटें हो जिन पर पुरस्कार मिलता है, तब उन सभी की 'वीकली स्ट्रीट प्राइज़', 'जैकपॉट', 'मेगा–समर' और नववर्ष के 'पोस्टकोड कन्जेर' के पुरस्कार में हिस्सेदारी होती है। जीतने वाले खिलाड़ियों के पड़ोस में रहने वाले लोग उनकी अच्छी किस्मत बनते हैं क्योंकि उन्हें अतिरिक्त पुरस्कार मिलते हैं।
- तात्कालिक रुपये, यूसिंग फ्रेंक और टॉकिंग डॉग जैसे खेलों को सन् 1993 में ऑस्ट्रेलिया के टेलिविजन विज्ञापन की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में विश्व के सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम का पुरस्कार मिला।
- मई 2004 में सिड़नी के 60 वर्षीय वरिष्ठ नागरिक ने एक ही खेल के तीन टिकिट, तीन ऐजेन्टों से खरीदी। तीनों टिकिटों के संख्यांक पुरस्कृत किए गए।
- अरुबा के रॉडरिक चिन ने मार्च 2000, जनवरी 2003 और अगस्त 2004 में अरुबा लॉटरी का जैकपॉट पुरस्कार तीन बार जीता।
- स्पेन का 'नेवीडेड' लॉटरी खेल इतना लोकप्रिय है कि कुछ परिवारों ने एक ही संख्यांक पर पचास वर्षों तक लॉटरी लगाई। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक वही संख्यांक की टिकिटें खरीदी गई।
- अप्रैल 2004 में पंजाब ई. बी. के एक सहायक लाइनमैन की पत्नी ने बंपर पुरस्कार जीता। उन्होंने उस पुरस्कृत राशि का एक बड़ा हिस्सा अपने गांव की निर्धन कन्याओं के विवाह में सहायतार्थ दे दिया।
- आइओवा लॉटरी बोर्ड ने नियमित रूप से अत्यधिक लॉटरी खेलने वालों पर अकुंश लगाने के लिए 'प्लेयर सेल्फ बेन' की नीति

प्रारंभ की जिसमें समस्यामूलक खिलाड़ी बोर्ड़ के साथ संविदा पर हस्ताक्षर करते हैं। चूंकि बोर्ड के पास उन खिलाड़ियों की सूची होती है, वे उन्हें अपने काउंटर से टिकिट नहीं खरीदने देते। बोर्ड की प्रेषण सूची से भी उनके नाम हटा दिए जाते हैं जिससे उन्हें नए खेलों के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती।

– सितम्बर 2006 में ऑस्ट्रेलिया की एक महिला ने एक ही संख्यांक पर तीस वर्षों तक लॉटो टिकिट खरीदने के बाद आधे लाख डॉलर का पुरस्कार जीता।

gpl lottery ka khel.indd 206 11/15/2007 4:07:06 PM

लॉटरी की पिछली पुस्तकों पर प्राप्त प्रतिक्रियाएं

इसमें सन्देह नहीं कि लॉटरी व्यवसाय पर प्रतिबंध लगाने से कई लोग बेरोज़गार हो जाएंगे।

— लाजपतराय, एम.पी., राज्यसभा

मुझे यकीन हैं कि इस पुस्तक से वे सभी लोग लाभान्वित होंगे जो पारंपरिक लॉटरी विधि और कप्यूटराइज़ड लॉटरी व्यवसाय में संलग्न हैं।

— डॉ. ए.आर. बसु, आयुक्त सचिव मानव अधिकार आयोग

केवल "सुगाल एंड दमानी" समूह ही ऐसा है जो भविष्य की अग्रिम सोच रखते हैं और इस प्रकार के प्रकाशन निकालते हैं।

— ललित भंडारी, सोनल एन्टरप्राइजेज, पुणे

इस व्यवसाय से संलग्न प्रत्येक व्यक्ति को यह किताब पढ़नी चाहिए जिससे उसे ज्ञात हो सके कि लॉटरी में कौन सी चीज क्या है।

— युसूफ भाई, परिहार ऐजेन्सी, पुणे

यदि लॉटरी कुछ उद्‌देश्य से संचालित की जाती है, तो उससे समाज का हित होगा। उससे जो आय प्राप्त होगी, उसका उन्हीं उद्‌देश्यों के लिए व्यय होना चाहिए जिनके लिए उस आय को एकत्रित किया गया है।

— बाबूलाल गौर, मंत्री, मध्यप्रदेश शासन

"लॉटरी का खेल भाग्य के परे" पुस्तक लॉटरी व्यवसाय पर सर्वाधिक प्रमाणिक और शोध–परक जानकारी के संग्रह के रूप में सदैव स्मरणीय होगी और लॉटरी उद्योग के सम्बन्ध में जो गलत धारणाएं हैं, उन्हें दूर करने में भी सहायक होगी।

– कपिल खन्ना, नई दिल्ली

"लॉटरी का खेल भाग्य के परे" एक बहुत अच्छी पुस्तक है जो लॉटरी व्यवसाय पर सम्पूर्ण वैश्विक जानकारी देती है।

– परेश राजदे, फोर्ब्स इन्फोटेनमेंट लि, मुम्बई

पुस्तक बहुत दिलचस्प हैं और पाठकों के विचारोत्तेजक प्रतिसाद ग्रहण करने की क्षमता रखती है।

– गिरीश कुमार सांघी, एम.पी., राज्य सभा

इस पुस्तक द्वारा वह अर्न्तदृष्टि प्राप्त होती है जो लॉटरी व्यवसाय के समक्ष चुनौतियों का सामना करने के लिए सहायक होगी।

– श्री विलासराव देशमुख, मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र

पुस्तक में लॉटरी व्यवसाय पर मार्गदर्शन और उसकी पुर्नसंरचना सहित अनेक पहलू शामिल हैं।

– श्री आर. आर. पाटील, गृहमंत्री, महाराष्ट्र

इस पुस्तक में लॉटरी व्यवसाय से सम्बन्धित, उसके प्रारंभ से लेकर अद्यतन सभी जानकारियां निहित हैं।

– श्री जयंत पाटील, मंत्री, वित्त एवं योजना, महाराष्ट्र

यह पुस्तक इस विषय पर ज्ञान का मूल्यवान खज़ाना है।

– श्री अमिताभ बच्चन, कलाकार

लॉटरी जैसे विषय पर लिखी यह पुस्तक एक लघु शोध प्रबन्ध हैं, इसमें सन्देह नहीं। आगे जो भी इस पर शोध या अध्ययन होगें, उनके लिए यह एक अपरिहार्य मार्गदर्शक ग्रंथ होगा।

– प्रो. (डॉ.) के.के. चौबे, अनुवादक